घनीभूत संवेदनक सम्मुच्य 'मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी'

✍ **चन्द्रेश**

उसिनैत जेठक उमस। निर्जीवकेँ सजीव बनेबाक ओरियाओन। उमसक तापमे तपैत सजीव। एतेक तँ कहले जायत जे सूतल सजीवकेँ जगेबाक ई मैथिली लोक-संस्कृति संगोष्ठी। सचढ़ संयोजकक चौकन्न आँखि तँ चिन्तनमे गम्भीरता आ विचारमे दृढ़ताक सँग आयोजित ई द्विदिवसीय गोष्ठी।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ओ रामानन्द युवा क्लवक संयुक्त तत्वावधानमे मैथिली-लोक संस्कृति संगोष्ठी २०६७ जेठ ९-१० गते तदनुकूल २३-२४ मई २०१० केँ आयोजित कएल गेल।

मंच संचालक अशोक दत स्पष्ट कयलनि जे जतबे लोक छी, सएह बहुत छी।

अध्यक्षता - दीपेन्द्र ठाकुर, अध्यक्ष, रमानन्द युवा क्लब जनकपुर,
प्रमुख अतिथि - वैरागी काँइला, कुलपति, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान
आसन ग्रहण - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', प्राज्ञ,
डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन', डा. महेन्द्रनारायण राम, डा. राजेन्द्रप्रसाद 'विमल', श्री तारानन्द मिश्र, डा. रामदयाल 'राकेश', ।
गोसाउनिक गीत - शिवानी झा, स्मृति मिश्र आ राजन -
जय जय भैरवि......
स्वागत गीत - अनिल मिश्र, शिवानी आ राजन -
स्वागत अछि हे जनकक सन्तति...

स्वागत मंतव्य

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'- विभिन्न तरहक राजनीतिक उथल-पुथलक उपरान्त प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक गठन भेल जकर ई पाँचम मास थिक। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक बीच राखल गेल कार्यक्रम परम्पराक निर्वहनक कार्यक्रम छल। पूर्वमे एक विभागमे दू लाख टका छलैक। आब बेसी छैक। कला-संस्कृति, समाजशास्त्र साहित्य आ दर्शनक लेल ई पाई छिड़ियाओल

गेल छैक। काठमाण्डूसँ बाहर ई कार्यक्रम भेल अछि। ई चारिम कार्यक्रम थिक। मैथिली लोक संस्कृति मात्र पठन-पाठनमे सीमित नहि होअय प्रत्युत समष्टिगत स्वरूपमे प्रकट होअए। ई पहिलबेरक प्रयास थिक जे जट-जटिनक प्रवेश भेल अछि, जनताक बीचक जुड़ल ई प्रस्तुति। डेढ घंटाक प्रस्तुति। पोथी प्रकाशन, अनुसन्धान वृत्ति, उपलब्धिक आधारसभ आबिरहल अछि। बाल-साहित्यक शाखा स्थापनाक प्रयास भऽ रहल छैक। मातृभाषा विभाग पहिलबेर फूजलैक अछि। गोष्ठीक लेल सातगोट आलेखक व्यवस्था कएल गेल अछि। विषम परिस्थितिमे तीनबेर तिथि बढौलाक उपरान्तो आइ नियत तिथिमे पाँचगोट कार्यपत्र प्रस्तुत हएत। आइ दू टा कार्यपत्र प्रस्तुत हएत। कठिन परिस्थितिक बीच ई कार्यक्रम भऽ रहल अछि। उपस्थित उएह लोक छी। एहि दुःखद स्थितिसँ उबरैत आइ कार्यक्रम हएत। सम्मान आ पुस्तक विमोचन हएत। 'आङ्गन' पत्रिका प्रकाशित भेल अछि। ई प्रयोग थिक आ मानक प्रतिष्ठापित भऽ सकए से आशा आ विश्वास अछि। प्रतिवेदक श्रीचन्द्रेश आ डा. गंगाप्रसाद 'अकेला'।

उद्घाटन दीप प्रज्वलित कऽ श्री वैरागी काइँलाजी कार्यक्रमक उद्घाटन कयलनि मन्तव्यक क्रममे **शीतल झा** - सांस्कृतिक मुद्दासँ लऽ संघर्षरत छी, अपने लोकसत्ता आदिसँ दबल संस्कृतिहेतु सदति प्रयासहेतु कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी। किछु चिनगी नै पठायव तँ सुनगतै कोना ? संस्कृति आ संस्कार व्यवस्था आ व्यवहारकेँ धन्यवाद जे प्रवेश पेबाक लेल परम्पराकेँ तोड़ैत लोक-संस्कृतिक व्यवस्थाकेँ जगजियार करबाक लेल लोक सदा सजग ओ सचेत रहथि। विरोध आ विद्रोह करबाक सामर्थ्य होनि से व्यावहारिकरुपेँ होअय। पिछड़ल चेतना ओ ज्ञानमे जे लोक अछि तकरा जगेबाक अछि।

रोशन जनकपुरी - लौकिकता लोकेसँ जनमल अछि, सैद्धान्तिकता विद्वतजनसँ सीखी। जे कोनो देवत्व वा चिन्तनजकाँ असगरे नुकायल रहए से लोक नहि थिक। लौकिकताकेँ जीवनमे फँसनाइ जरुरी छैक तहिना अनुसन्धानकर्ताकेँ। लौकिकताकेँ व्यापार नहि बनाओल जाय। लोकक चर्च होबए तँ लोकक संघर्षक सेहो चर्चा होबाक चाही। नेपालमे 'मालती मंगले' कृत्रिम लोक गाथा छैक। ओ कोनो सिद्धहस्तकलाक नमूना थिकैक। ओ श्रम, पसेना आ खेत खरिहानसँ नहि आएल छैक। लोक गढय लगैत छैक तँ अवास्तविक भऽ जाइत छैक। सामन्तवादक बीचसँ जनमल टाङ्ग तोड़ब अनिवार्य छैक। गणतान्त्रिक रूपान्तरणपर जोर देब युगक मांग थिक। जीवनसँ जुड़बे सौन्दर्य थिक आ इएह हमर लोक-संस्कृति थिक।

डा. पशुपतिनाथ झा - लोक आ संस्कृति दू टा शब्द थिक। लोक तँ लोक भेल, संस्कृति थिक जे परम्परासँ उदभूत नीक वस्तुकेँ ग्रहण करब। संस्कृतिमे बौद्धिकता नहि, जनसामान्य अछि।

डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल - सम्पूर्णमे सांस्कृतिक संकटापन्न स्थिति अछि। साइबर टेक्नोलोजी आदिक कारणेँ जतेक लगीच आबिरहल छी ततेक कठिनाइ भऽ रहल अछि। उदाहरणस्वरूप कैकटा उदाहरण प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। यथा अरब अमेरिकन आदिक लऽ कऽ। कोनो सांस्कृतिक परम्पराक पाछाँ इतिहास भूगोल आदि छैक तँ ओकर सांस्कृतिक विशेषता छैक। सामाजिक संस्करणक रीति-रेबाज आदिमे आई दोसर प्रकारक व्यवहार भऽ रहलैक अछि। ओहि संस्कृतिमे पैसब आवश्यक अछि। दर्शन ओ मान्यताकेँ दैनन्दिन जीवनमे बुझायब आवश्यक अछि। पहिचानक संकट उपस्थित अछि। हमरा लोकनिकबीच तवांग आ उपाध्याय सेहो अछि। तँ सभजातिक उपादान बुझब जरुरी अछि, । (1) Artifex (2) Way of life (3) Fedings तीनू आवश्यक छैक। साक्ष्य चाहबे करी। अपन संस्कृति अपने ठाढ कएलहुँ अछि ताहिलेल हमसभ अपने दोषी छी। विदेशी-सभ्यता-संस्कृति जे संकट अनने अछि तकर दोषी हमरालोकनि स्वयं छी। ग्लोबलाइजेशनक युद्ध संकट ठाढ कएने अछि। सबटाक निदान छैक, सम्पदाक संरक्षण, संबर्द्धन आ विश्वस्तरपर प्रतिष्ठा दिअएबाक बात। एहिलेल लोककेँ जगबाक आवश्यक छैक। मैथिल संस्कृति नेपालीय संस्कृति थिक।

डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन'- राष्ट्र भावनाक समन्वयात्मक विकास आ सांस्कृतिक संरक्षण सेहो एहि गोष्ठीसँ होएतैक। ई कार्य सामाजिक, सरकारी ओ व्यक्तिगतरूपेँ होएबाक चाही। व्यक्तिगत कार्य दुस्साहसपूर्ण होइत अवश्य अछि, मुदा सरकारी सहयोग भेटतैक तँ निश्चिते सफलता भेटतैक।

मिथिला महोत्सवक अवसरपर कलाकारसभमे मूर्तिकार योगेन्द्र पंडित आ धनुषी पंडितकेँ नगदसहित प्रसंशापत्र प्रदान कयल गेल; ने.प्र.प्र.क कुलपति बैरागी काइंलाद्वारा पोथीक लोकार्पण-गीत दीना भद्री ओ गीत नेवारक। संकलन : डा. जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन, १८८५ प्रकाशन वर्ष। अनुवाद : डा. रामानन्द झा 'रमण'।

उद्घाटन भाषण करैत श्री बैरागी काइँला स्पष्ट कएलनि जे जनकपुरक राजा जनकक नगरे नहि, पुण्य भूमि थिक, ई धाम थिक। एहन विद्वत् परम्परा एहि ठामक रहल अछि।

नेपालक भाषा-संस्कृति आदिक संरक्षण-संबर्द्धनक स्थापनालेल नेपाल एकेडेमीक स्थापना भेल २०१६मे। नेपालक संस्कृति विविध संस्कृतिसबहक सम्मिश्रण अछि। नेपालक सब भाषाकेँ मान्यता भेटल अछि। मातृभाषामेँ बाजिकऽ लिखिकऽ अपन-अपन भाषाक संबर्द्धन ओ विकास होएबाक चाही। भाषा मात्र बोली-चाली नहि थिक। भाषा नहि रहल तँ ओहि ठामक संस्कृति समाप्त भऽ जेबाक बाट खुजैत अछि। नव नेपाल बनय से प्रयास भऽ रहल अछि। सब भाषाकेँ मान्यता प्राप्त होबाक चाही। नेपाली भाषा ओ साहित्यजकाँ सबकेँ अपन देशकप्रति गौरवबोध होबाक चाही। जखन कोनो अन्तर होयत अछि तँ संघर्ष होइत अछि। सबधर्म नेपालक धर्म थिक। हमसभ नेपाली छी तकर स्थानो भेटबाक चाही। सभकेँ एकसूत्रमे बान्ही। एक दोसरकेँ अस्वीकार नहि करी। सांस्कृतिक महोत्सव अनिवार्य अछि। राष्ट्र ई वुझए जे ई संस्था हमरे काज करैत अछि। सबमे सभक सहभागिता होबाक चाही। पूरब आ पश्चिम जै एक दोसरकेँ नहि चिन्हैत अछि तँ ई गलतफहमी उत्पन्न करैत अछि। आदर देब नहि जनलासँ आत्मसम्मानमे ठेस लगैत अछि। नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान स्थानीय भाषा-भाषी, संस्कृतिप्रेमीक बीच एहि गोष्ठीक परम्पराक माध्यमसं जाए चाहैछ जाहिहेतु राम भरोस कापडि 'भ्रमर' धन्यवादक पात्र छथि। जनकपुरक सांस्कृतिक बृहत् अध्ययन सब दृष्टिकोणेँ होबाक चाही । ई योजना एकेडमीक अछि। हमर मातृभाषा लिम्बू अछि । जकर मान्यता आनेजकाँ अछि जे हमरो दुःख अछि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' कार्यपत्रक संशोधित क्रिया-कलाप सन्दर्भमे संकेत देलनि। दू टा कार्यपत्र आ भाषाक संस्कृतिपर प्रभाव- डा.रामावतार यादव आ टिप्पणीकार सुनीलकुमार झाक विचार प्रस्तुत होयत से जानकारी देलनि।

अध्यक्षीय भाषाणमे **दीपेन्द्र ठाकुर** जनाओल जे एहि विचार-गोष्ठीसँ भीतरसँ खुशी भेल अछि । राज्यसँ शोषित-उपेक्षित अछि मैथिली। मैथिलीक सम्मानक हेतु सभक सहयोग अपेक्षित अछि।

प्रथम सत्रक समाप्तिक उपरान्त दोसर सत्र प्रारम्भ भेल।

अध्यक्ष - **डा. आशा सिन्हा**

प्रथम आलेख डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' - *मैथिली लोकगाथाक नेपालीय सन्दर्भ स्थिति एवं संरक्षण।*

नेपाल सन्दर्भक मूल गाथा राजा सलहेस थिक। ओ लोकगाथाक सन्दर्भ नेपालसँ छैक चूहरमलक सम्बन्ध मोकामासँ छैक। ओ सन्दर्भता आ

गूढ़ता जे नेपालमे छैक से आन ठाम स्थलसब रहितो रूपक नहि अछि। गाथाक काल विभाजन-स्थलसबहक निरीक्षण-परीक्षण होबाक चाही। पाँचम -छठम शताब्दी जे कहल जाइत अछि से ईशापूर्व चलि-जाइत अछि। तलहटीमे घूमलासँ एके ठाम N.B. क Stall भेटिगेल। तलहटीमे ईशा पूर्व आवादी छलैक आ सलहेसक कमल पुष्करणी क्षेत्रक रूपमे चित्रित कएल गेल अछि। ऐतिहासिक आ पुरातात्विक अवशेषक अन्वेषण कएने बहुत किछु विकछाओल जा सकैत अछि। गाथा तँ एकटा जनप्रवाह वा वायुप्रवाह छैक जाहिठाम गेल ताहि ठामक भौगोलिक परिवेशकँ अपनामे समेटिलैत छैक। महिसौथागढ वृत्ताकार छैक आ डीहपर मूर्ति बनल अछि। गढ तँ सय विघासँ उपरक होइत अछि आ गढी ५० बीघाक लगभग अर्थात् छोट। नेपालक प्राचीनतम गाथा वन्य संरक्षकक दृष्टिकोणँ प्रारम्भ गत अस्त्र शस्त्रमे भिन्नता। राजा लोकदेवताकँ कहल जाइत अछि। सलहेस राजा नहि, लोकक नायक (पहरी) छलाह तँ घोड़ापर चढ़ैत छलाह आ बादमे लोक संरक्षक भेलाह तँ राजा भेलाह। लोक गाथा दू प्रकारक छैक - (१) गाथाक रूपमे (२) नाचक रूपमे। नरहनमे एकर रूपमे नाच, महिसौथामे दोसर प्रकारेँ आ आन ठाम तेसर तरहेँ। प्राकृतिक वन छैक सलहेसक फूलवारी। मालाकार फूलसँ जिज्ञासा। भौगोलिक परिवेश-वृक्ष, वनस्पति, नदी आदि देखलासँ परिलक्षित भऽ जाइत अछि जे ई वास्तविक गाथा थिक।

राजा धनपतक सन्दर्भमे मोरङ्गमे हिमगतगढ छैक। वैशाख १ गते नेपालक सन्दर्भसँ जुटल अछि तकर सार्थकता खोजऽ पड़त। क्षेत्रीयता इतिहास, भूगोल आ पारिवेशिकता अछि तकरा पता लगएबाक अछि।

दुलरा दयाल आ नैका बनिजाराक नदीसँ व्यापारिक सम्बन्ध छैक। नेपालसँ तिब्बत सामानक आदान-प्रदान होइत छलै। एक किलो नून लऽ जाऊ आ एक किलो घी लऽ आऊ। भारतमे गंगा सागरदिसि जाइत छलैक नाओक माध्यमे।

टिप्पणीकर्ता डा. रेवतीरमण लाल

राजा सलहेसक स्थान 'ननमहरी'क मूर्तिक भग्नावशेषक सन्दर्भ। महुली नामक स्थानमे पर्यटकसभक आकर्षणहेतु लोक गाथाक गायन-प्रदर्शन देखयबाक सम्भव अछि।

प्रश्नकर्ता डा. तारानन्द मिश्र - वास्तविकतासँ बेसी काल्पनिकताक उड़ान अछि ? 'धनपालगढ़ी'क ठीकसँ परीक्षण नहि भेल अछि। पाल संस्कृतिक

बहुत प्रभाव छैक। पाल राजाक दक्ष शासन रहैक। तँ पुरातात्विक अध्ययन होबाक चाही। हिन्दूपतिक उपाधिक कारण मुगल शासकसँ आक्रान्त हिन्दूक परिणति थिक। हाथीक सार्थकता स्पष्ट नहि भऽ सकल।

डा. गंगाप्रसाद 'अकेला' - सलहेस मेला बैशाख १ गते लगैत अछि।

डा. रामदयाल राकेश - स्थल निरीक्षण कऽ डा. मौन आलेख प्रस्तुत कयलनि। संरक्षणपर जोर नहि देलगेल अछि तँ पर्यटनसँ जोड़ल जेबाक चाही। सर्लाहीक चर्च जोड़लनि अछि, आरो होबाक चाही।

प्रो. परमेश्वर कापड़ि - गोनू झा, विद्यापतिक गाथाकँ जोड़ल जाय। मात्र गाओल गेल वा पद्यकँ गाथा नहि बूझल जाय, गद्यमे लिखलकँ सेहो गाथा बूझल जाय।

राजेन्द्र झा - पकड़ियागढ़क चर्च नहि भेल अछि।

प्रो. विजय दत्त - २ गते कँ जूड़शीतल होइत छैक से नहि जोड़ल गेलैक।

डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल - रेकर्डेड लोक गाथाक चर्च करैत अछि। दोनिवारक लोकगाथाक चर्च नहि भेल अछि। थारु क्षेत्रक लोकगाथाक चर्च हेबाक चाही। सांस्कृतिक नक्शांकन आ सर्वे होबाक चाही।

शीतल झा - कलाकार नहि रहैत छैक, बुझाइत अवश्य छैक। एक दिन मात्र नहि, दू-तीन दिनधरि रहैत छैक। सलहेस जन्म दिवससँ जोड़िकऽ १ गतेक विक्रम संवतसँ विशेषकऽ मनाबी। सलहेशकँ 'शैलेश' बुझी।

डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मोन प्रत्युत्तर दैत - मूर्तियाक सम्बन्ध सलहेस गाथाकालसँ नहि छैक। गाथा लोक-परम्परासँ सन्दर्भित अछि। तँ हिन्दूपतिके रहथि ताहिसँ कोनो माने मतलब नहि अछि। पर्यटनक दृष्टिएँ सलहेसकँ लोकोत्सवक रूपमे मनाओल जेबाक चाही। जे छूटल अछि से हम जोड़िदेब।

दोसर आलेख - डा. महेन्द्रनारायण राम - मैथिली लोकगीतक अवस्था

लोकगीतक परिचयात्मकतामे लोकक ठोढ़पर आबिकऽ संवेदनशीलतासँ फूटिकऽ सूर, ताल आ लयकसँग गुञ्जित होइत अछि। लोकगीत जनश्रुतिमे होबाक फलस्वरुप कतिपय पाठान्तर भेटैत अछि। लोकगीतक सार्थकतामे कल्पना, भावना आ रसवृत्ति महत्वपूर्ण होइत अछि ऐ कहैत डा. राम। लोकगीतक महत्व आ उपादेयतापर जोड़ देलनि। ओ विभिन्न प्रकारक लूरि, भास आ राग भावपरक विभिन्न अवसरपरक गीतकँ उदाहरणस्वरूप रोचक ढंगसँ उपस्थापित कऽ जनसंवेदनाकँ झंकृत कएलनि। मरूआ उलावऽ कालक गीत, गोदना पाड़ऽ कालक गीत, परिछन गीत, डहकन आदिपरक

गीतकेँ गेयताकसँग उपस्थापित कयलनि। भूमंडलीक प्रभावपर बिला रहल, लोक गीतक संरक्षण ओ संवर्द्धनपर कतिपय गीत प्रस्तुत कयल।

टिप्पणीकर्ता डा. रामानन्द झा 'रमण' - लोकक की शास्त्रक ? महेन्द्रजी परिश्रमपूर्वक प्रस्तुत कएने छथि। लोकगीतक चर्चमे विकृतिकेँ विश्लेषण कएने रहितथि तँ नीक, मुदा ओ एहि तहधरि नहि गेलथि। व्यावहारिक, प्राकृतिक आ सामाजिक गीत। लोक गीतक विशेषता थिक सामूहिकता। अवस्था - भूत स्वर्णिम छल। वर्तमान स्थितिक चर्च अछि।

हमरा जनैत डा. रमानन्द झा 'रमण'क आलेख प्रस्तुत कार्यपत्रपर टिप्पणी नहि भऽ कऽ बीज भाषण बनिकऽ स्वतंत्र ओ मौलिक आलेख बनिकऽ आयल अछि। हिनक टिप्पणी एहि संगोष्ठीक लेल पाथेयक कार्य करैत अछि। आधुनिक भावबोधकेँ समाहित केने नवतामे नवीन सृष्टिक लेल प्रेरणापरक आलेख जनसंवेदनाकेँ झंकृत कऽ नवीन दृष्टि उपस्थापित करैत अछि। हिनक दृष्टिपरक कार्यपत्रक आवश्यकता बुझाइत अछि।

प्रश्नकर्त्ता :- डा. गंगाप्रसाद 'अकेला' - कार्यपत्र मेहनतिसँ प्रस्तुत भेल अछि। कार्यपत्रक स्वरूपमे छूटल बातक समावेश डा. रमानन्द झा 'रमण'क टिप्पणी अछि।

डा. रामदयाल राकेश - ई पारम्परिक कार्यपत्र थिक। आधुनिक सन्दर्भसँ एहि आलेखकेँ जोड़ल जाय। बहुत महत्वपूर्ण बातसब छूटल अछि। तकनिकी स्वरूपमे लिखल जाय।

विजय दत्त - गर्भवती अवस्थामे शोकगीत गाओल जाइत अछि। भारतमे लोकगीतक बदलामे मिथिलाक गीत होबाक चाही। मेहदी गीतक बदलामे अपटनक, पसाहनिक होबाक चाही।

डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल - विभिन्न वर्गक गीत समेटल नहि गेल अछि। जेना डोमसभक गीत - पटिया बनबैक काल अछि आदि। बच्चाक लेल गीतसब अछि। तँ सब प्रकारक गीतकेँ समेटि-बटोरिकऽ राखि ली। एकटा खास वर्गक गीत मात्रकेँ नहि समेटि-बटोरी। 'फोक म्युजिक' सबकेँ जोड़बाक चाही।

रोशन जनकपुरी - लोकगीतक जन्मक सम्बन्धमे चर्च नहि भेल अछि। समय-सापेक्ष लोकगीतक सार्थकता अछि। गीतक जन्म श्रमसँ होइत अछि। धनकटनीबला गीत जे श्रम-साध्य अछि से नहि जुटल अछि। संवेदनात्मक स्वरपर जोर देल जेबाक चाही।

अशोक दत्त - विश्व समुदायमे स्थापित कोना कयल जाय ? श्रमकसँग जोड़िकऽ गीतकेँ ओहि परिवेशमे अनबाक प्रयास एहि आलेखमे नहि भेल अछि।

डा. रेवती रमण लाल - लोक गीतक संरक्षण कोना कयल जाय ?

प्रत्युत्तर दैत डा. महेन्द्रनारायण राम - सबकिछुकेँ समाहित कऽ देब एकटा कार्यपत्रमे सम्भव नहि अछि। एफ.एम. रेडियो आ सौभाग्य मिथिला टि.भि. च्यानलसनक संचार माध्यमक चर्च अछि। मूल्यांकनमे सब बात आबि जाइत अछि। हमर आलेखमे 'बुलेट प्वाइन्ट' अछि। मेहदीक गीत अछि। भारतक परिप्रेक्ष्यमे कतेक काज मिथिलाक कएल गेल अछि से क्षेत्र विशेषक बात थिक। एहि आलेखकेँ विस्तृत आकार दऽ सकैत छी। मौलिकताकेँ बचाकऽ रखबाक चिन्ता व्याप्त अछि हमरा।

अध्यक्षीय डा. श्रीमती आशा सिन्हा : समय, काल, परिस्थितिकेँ ध्यानमे राखिकऽ डा. मौन गागरमे सागर भरलनि। डा. महेन्द्रनारायण रामक गीतमे लोरीक गीत जे बच्चाक अछिसँ समावेश होबाक चाही। मिथिलाक संस्कृति लोक गाथा छैक तँ एकर प्राण लोक गीत। अमृतक समान मननीय। *साओन हे सखि सर्व सोहाओन* तहिना प्रवासी पतिक आगमनमे *'सखि हे हमर दुःखक नहि ओर'* ई सब प्रतीक रूपमे अएबाक चाही।

तेसर सत्र रामानन्द युवा क्लबक नाट्यकर्मीद्वारा 'जट-जटिन' नाटकक प्रस्तुति साँयंकाल ७.५०मे भेल। मंच संचालक रहथि अशोक दत्त। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' बताओल जे जट-जटिन वास्तवमे एकटा छोट-छीन घटनाक सम्बन्धपर आधारित अछि। मुगल सम्राट अकबरक दरबारमे 'तानसेन' मेघ मलार गाबि जल बरसबैत छलाह। तहिना वर्षा नहि भेलापर मैथिल ललनासभद्वारा जट-जटिन नृत्य केलासँ वर्षा होइत अछि से विश्वास कएल जाइछ। ई सांस्कृतिक परम्परा थिक। एकरा समष्टिगत रूपमेँ लेबाक प्रयास एहि नाटिकाक माध्यमे कएल अछि। एहिमे आधुनिको प्रसंग अछि। ई सम्पूर्ण लोकनाट्य थिक। लोक जीवनमे प्रेम, दाम्पत्य आदि सामाजिक समरसत्ताक चित्रण भेल अछि।

एहिमे कलाकार रहथि, जट- दिनेश ठाकुर, जटिन-स्मृति मिश्र, बुढा-गोविन्द यादव, स्कलर- अवधेश कामत, झाजी-रीतेश वैद्य-विपिन पाठक, सिपाही आ मलाह-रोशन मण्डल, मुसाफिर-सन्तोष मिश्र, रामू-मुकेश साह, रघुदास-किशन कन्हैया। नाट्य रूपान्तरण - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'।

कलाकारक नाट्य अभिनय एकपर एक रहल। जटाक आ मलाहक भूमिका अति प्रशंसनीय। जटीनक भूमिकामे स्मृति मिश्र तेना भऽ कऽ खूजि नहि सकलिए तैयो प्रशंसनीय।

दोसर कार्यपत्र-डा. तारानन्द मिश्र - *मिथिलाक ऐतिहासिक काल, सांस्कृतिक सम्पदा आ सम्पदा संरक्षणक उपाय*

नेपालमे तीनटा जाति - मंगोलियन, किरातार्जुनीय, द्रविड़ आएल। मिथिला राज्यक विभिन्न कालक परिप्रेक्ष्य उद्धृत करैत मिथिलाक मौलिक सांस्कृतिक सम्पदा आ सम्पदा संरक्षणपर चर्च भेल अछि। मिथिलाक क्षेत्र मात्र कोशीधरि सीमित नहि रहि बंगालक अधिकांश क्षेत्रधरि पसरल मानल जाइत अछि। वैशालीसँ मिथिला क्षेत्रक शासन संचालक वृहत् व्यवस्था गुप्त शासन कालमे भेल एहिकालमे मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्रक नाम 'तिरभुक्ति' राखल गेल। दरभंगा, मोरङ आ मोतिहारीसँ शासनपद्धति चलाओल गेल। पुरातात्विक अवशेषक अन्वेषणक विशेष प्रयास होबाक चाही। मिथिलाक भौतिक आ सांस्कृतिक निधिसबहक संरक्षण होबाक चाही जे दुनू देशक सरकारद्वारा क्रियान्वयन कयल जएबाक चाही।

टिप्पणीकर्ता डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' - आलेख श्रमसाध्यपूर्ण छनि। इतिहासक क्रमबद्धता नहि छनि। विदेह माधवक समयमे गुप्तकालक चर्च अछि, । कार्यपत्रमे किछु छूटल अछि। वराह क्षेत्रक मूर्ति गुप्तकालीन स्वतः प्रमाणित होइत छैक। नरसिंह अवतारक सूचना मूर्तिकलामे नहि देलनि। कर्णाटकालीन मूर्तिसबकेँ फूटकौलनि। कार्यपत्रक अभावदिसि ध्यान आकृष्ट करबैत आलेखकेँ संशोधित-संवर्द्धित करबापर जोर देलनि।

परमेश्वर कापड़ि - मिश्रजीक विद्वतापर गर्व अछि। जनकपुरमे पुरातात्विक रूपमे किछु अछि ए नहि से बात खटकैत अछि। राजक क्रममे शाहीकाल आ दरभंगा काल मात्र रहैक ?

डा. महेन्द्रनारायण राम :- मिथिलाक लोक-संस्कृतिक धरोहरमे महिसौथाक चर्च नहि भेल अछि जकर उत्खनन होबाक चाही। एहिना आनो क्षेत्रसबक चर्च होबाक चाही।

रोशन जनकपुरी - विदेह माधवक जगहमे विदेह देखल जाइत अछि से स्पष्ट होबाक चाही। करालक चरित्र दू रंगक प्रस्तुत भेल अछि। कराल प्रेमक कारणे राज्यक त्याग कएलक वा ब्राह्मणक बेटीसँ वियाहक कारणेँ से स्पष्ट करबाक थिक। जनकपुरक डीहसबहक अन्वेषणक चर्च होबाक चाही। सिमरौनगढ़क पुरातात्विक अन्वेषणहेतु चर्च होबाक चाही।

राजेन्द्र झा - जनकपुरसँ पूर्वाग्रहित आलेख अछि। मण्डप, राममूर्ति आदिसभक आधारक चर्च होबाक चाही।

डा. गंगाप्रसाद 'अकेला' - त्रेतायुगीन 'धनुषा'क धनुषामे माघ मासमे प्रति रविकेँ मेला लगैत अछि रामक तोड़ल धनुषक। एकर चर्च नहि भेल अछि।

अयोध्यानाथ चौधरी - दुहबी गाममे दुर्वासाक मूर्ति अछि। दुर्गाक मूर्ति, पंचानन महादेव आ कालीक विशाल मूर्ति अछि। दुर्वासा गढ़ थिक। एहिसबकेँ एहि आलेखमे समावेश करथि।

प्रत्युत्तरक क्रममे तारान्नद मिश्र - मूर्तिकला विज्ञान पढ़ने छी आ एकटा पोथी मूर्तिकलापर प्रकाशित अछि। सिमरौनगढ़ कालक वाल्मीकिनगरसँ सप्तरीधरि बहुत देखने छियैक। एकर संख्याक सीमा नहि छैक। वाल्मीकिनगरमे एकोटा गुप्तकालक मूर्तिकला नहि छैक। कर्णाटकालक मूर्तिसब Sist Stone छैक। पालकाल आ गुप्तकालक मूर्ति अलग-अलग छैक आ शैलीमे बड्ड फर्क छैक। सिमरौनगढ़मे बुद्धक मूर्ति नहि छैक जखन कि गाममे बौद्ध धर्मक प्रभाव पड़ल अछि। राजा जनकक जातक कथामे आ बौद्ध ग्रन्थसबमे उल्लेख छैक। कराल जनक जनकवंशीय राजपरम्परा समाप्त कऽ देलनि अपन करनीक फलस्वरूप। कौटिल्य शास्त्रमे अपहरणक उल्लेख छैक। जनकपुरक साक्ष्य ताकी प्रमाणिकताक आधारपर। मिथिलाक सीमा विभिन्न कालमे आर-पार भेलैक अछि। गाम-गामक सर्वेक्षण होबाक चाही। जाधरि राजकीय प्रश्रय नहि भेटत ताधरि काजमे सफलता नहि भेटत। हम खोजीक लेल प्रयास करब।

डा. रमानन्द झा 'रमण' - मिथिलामे भौतिक अवशेष भेटैत किएक नहि छैक ?

तेसर आलेख - डा. रामदयाल राकेश - *लोक पर्वक विशिष्ट पक्ष*

कायिक, वाचिक, मानसिक व्रतसबक उल्लेख करैत विभिन्न पर्व चर्च भेल अछि। पावनि-तिहार सामाजिक आडम्बर नहि भऽ कऽ अनिवार्य आवश्यकता थिक। व्रतसब संजीवनी औषधिक कार्य करैत छैक। शास्त्राचार एवं लोकाचार पर्वक पाँच अंग थिक - (१) व्रत (२) कथा (३) पूजन (४) गायन (५) अरिपन। व्रतक लेल तीन बातकेँ ध्यान राखब थिक - (१) संयम नियमक पालन (२) देवताक अराधना (३) अपन लक्ष्यक प्रति जागरुकता। कोनो संस्कृतिक संवाहिका महिले होइत छैक। व्रत तप थिक।

टिप्पणीकर्ता

रोशन जनकपुरी - लोक-पर्वकेँ समीक्षा करबाक प्रयास कयल जएतैक। पूजा, पर्व आदिसब मिलल-जुलल छैक। मैथिली सांस्कृतिक परम्पराक मूलधारा।

हिन्दूक लोकपर्व मना देल गेल अछि। कृषि, व्यवसाय आदिकेँ समावेश पर्वक होबाक चाही। हम कार्यपत्र लिखिरहल छी से सोचबाक थिक। Reference बनाकऽनहि लिखल जेबाक चाही। पर्वसबहक विवेचन होबाक चाही। राखी आ रक्षाबन्धनकेँ एकेमे मिला देलथि। हिन्दू जातिक जीवनसँ जोड़ल गेल अछि मैथिलसँ जोड़ल जेबाक चाही। लेखक बेसी धर्माभूत भऽ

गेलाह अछि। तथ्यक अभाव अछि। कार्यपत्रमे मानसिकता ओ गुणवत्ताक ध्यान नहि राखल अछि। पर्वक वर्गीकरण सेहो ढंगसँ करथि। कैक ठाम एके बातकेँ पुनरावृत्ति भेल अछि। दक्षिणपंथी विचारक अभिव्यक्ति थिक। एकटा कार्यपत्र लेखककेँ समयकेँ बुझब अनिवार्य। ई कार्यपत्र एकटा कमजोर आ दू सय वर्षक पूर्वक थिक अर्थात् तृतीय श्रेणीक।

प्रश्नक क्रममे

डा. महेन्द्रनारायण राम - विवरणात्मक विश्लेषण अछि। हुड़ाहुड़ीक सम्बन्ध पशुसँ छैक तकर चर्च नहि अछि। एहिना दाहा जे सामाजिक जीवनसँ जुड़ल तकर चर्च नहि छैक। पर्यावरणसँ सेहो नहि जोड़ल गेल अछि। जितियामे झिंगुनीक पातक उपयोग किएक होइत छैक ? लोक-पर्वक विशिष्ट पक्षक उल्लेख नहि भेल अछि।

डा. गंगाप्रसाद 'अकेला' - दशहरा भादोमे नहि, आसिनमे होइत छैक। शीर्षकसँ विषय-वस्तु भिन्न होइत अछि।

प्रश्नोत्तरक क्रममे डा. रामदयाल 'राकेश' - संक्रान्तिकालीन समयमे सब वस्तुक व्याख्या राजनीतिक दृष्टिकोणसँ नहि कएल जा सकैत अछि। सब परम्पराकेँ तोड़ैत नवपरम्परा सेहो विकसित भेल अछि। संस्कृति आ राजनीतिकेँ होचपोच कऽ देबैक तँ निष्कर्ष गलत बहराएत। व्रतक मनोवैज्ञानिकताक बात होबाक चाही। परम्पराक निर्वहन करब कोनो गलत काज नहि थिक। परम्परापर गौरवबोध होबाक चाही, निषेधात्मक भावना मोनमे नहि एबाक चाही। जितियाक सम्बन्धमे प्रतीक रूपमे पर्वक उल्लेख भेल अछि। कोनो संस्कृतिक संरक्षक महिले छथि जे उएह सम्पादित करैत छथि। प्रामाणिकताक लेल साक्ष्य चाहबे करी।

समापन समारोहक अध्यक्ष - दीपेन्द्र ठाकुर

मंच संचालक - अशोक दत्त,

प्रमुख अतिथि - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

डा. सुनीलकुमार झा - कार्यपत्रपर विचार - सक्रिय सहभागिता रहल। तीनू कार्यपत्रक महत्व अपन स्थानपर छैक। समयकेँ ध्यानमे नहि राखल गेल। कार्यपत्र Frame Work होइत छैक जे विचारोत्तेजक आ सटीक होबाक चाही। प्रस्तोताक विचारकेँ ध्यानमे राखल जेबाक चाही। कार्यपत्र सीमाक्षेत्रसँ बाहरक नहि होबाक चाही। पहिल कार्यपत्रमे सीमांकन नीक जकाँ भेल रहए। कार्यपत्रक कमीदिसि इंगित भेल। टिप्पणीकर्ता नीक टिप्पणी देलनि। गंगाप्रसाद 'अकेला'क टिप्पणी नीक छलनि। कार्यपत्रकेँ

देखि-गूनिकऽ सहज अनुभूतिमे बातकेँ रखलनि। उत्कृष्टताक परिचायक रहल अछि। प्रस्तोताक संगहि टिप्पणीकर्त्तासभ ऊर्जस्ववान छथि। डा. विमलजी आलेखमे कनेक सुधार करथि। तारानन्द मिश्रक कार्यपत्रक शीर्षकपर डा. मौनक टिप्पणी नीक लागल। शीर्षकक अन्तर्गत क्षेत्र विषद् अछि ताहिसब क्षेत्रकेँ समाहित नहि भऽ सकल। पुरातात्विक विवेचन नीकजकाँ नहि भेल। सम्पदाक संरक्षण कोना हो से समाहित होबाक चाही। टिप्पणी सहायक भेल। डा. रामदयाल राकेशक कार्यपत्रमे रोशन जनकपुरकि टिप्पणी सटीक छल। कार्यपत्रमे लोक-तत्वक समावेश होबाक चाही।

चन्द्रेश प्रतिवेदन प्रस्तुत कएल। दुनू दिनक कार्यक्रमपर छल प्रतिवेदन। तदुपरान्त सम्मान-पत्र नाटकक कलाकार लोकनिकेँ देल गेलनि।

प्रमुख अतिथि - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' - लोक-नाट्य परम्पराकेँ मंचीय बनएबाक प्रयास कयल जाएत प्रयोगधर्मी नाटक 'जट-जटिन' केँ सुभारम्भक बनाकऽ। प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सम्पत्तिक रूपमे एकरा हम राखऽ चाहैत छी। संस्कृति, भाषा ओ साहित्यिक विकासमे रामानन्द युवा क्लबक काज प्रशंसनीय अछि। अपन सचढता ओ सक्रियताकसँग अध्यक्षक काज सराहनीय अछि। सक्रियता ओ संलग्नताक लेल सम्बन्धित व्यक्तित्वप्रति धन्यवाद प्रकट कएलनि। ओ बतौलनि वर्ग ६सँ ८ धरिमे मैथिली स्वीकृत भऽ गेल अछि। सभकेँ एक सूत्रमे लऽ कऽ चली।

अध्यक्ष - दीपेन्द्र ठाकुर - रामानन्द युवा क्लब सब दिन मैथिलीक झंडा लऽ कऽ दौगलै अछि आ दौगत। प्रतिवर्ष दू टा पोथी संस्था प्रकाशित करत। कलाकप्रति समर्पित छी।

समय ३ बजे

कवि सम्मेलन

अयोध्यानाथ चौधरीक संयोजकत्व आ डा. राजेन्द्रप्रसाद 'विमल' क अध्यक्षतामे भेल। समीक्षक रहथि चन्द्रेश। कवि गणमे रहथि पूनम झा, सुदीप झा, राजाराम 'राठौर', अशोक दत्त, डा. महेन्द्रनारायण राम, चन्द्रेश, अयोध्यानाथ चौधरी, डा. गंगाप्रसाद 'अकेला', डा. रामदयाल राकेश, डा. रेवतीरमण लाल, रोशन जनकपुरी आ डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल आदि।

कवितासबक समीक्षा करैत चन्द्रेश जे सिद्ध, असिद्ध, प्रसिद्ध तीनू कोटिक कविताक पाठ भेल। जीवनक अनुभूतिकेँ सौन्दर्यमे पचाकऽ रागात्मकताक संग कविताक सृष्टि होबाक चाही। ई नहि जे छन्द-बन्धक फेरमे पड़ि तुकमे तुक मिलाकऽ छन्दबद्ध कविता लिखी। **काव्यमे** संगीत

तत्व गीत भावक सरल-तरल अभिव्यक्ति थिक जतऽ मनुक्खक मोन कोनो सौन्दर्य रागकेँ संजोगने गहनतामे छूबैत अछि तँ गीतक सृष्टि ततहि होइत अछि। ताल, लय, रागक अनुभूति तीव्रताकेँ संवेदनशीलताकसँग प्रवाहित होइत अछि। किछु कविक कविता आधुनिक भाव-बोधक सौन्दर्य नेने अछि। नव-नव विम्ब, प्रतीक आदिक प्रयोग करैत घनीभूत संवेदनाकेँ लयात्मकताकसँग समकालीन कविता उदभूत होएबाक चाही। ई कवि-सम्मेलन नीक रहल। किएक तँ समयसँ संवाद स्थापित करैत कवितासभक पाठ भेल। किछु कविक रचना अजोह छनि तँ की ? भावबोधमूलक तँ छन्हिये।

स्थान :- उद्योग व्यापार तथा वाणिज्य संघक कार्यालय

दिनांक - २४ मई २०१०

प्रथम सत्र - १० बजे पूर्वाह्नमे प्रारम्भ

मंच संचालक - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

सभापति - डा. रामानन्द झा 'रमण'

कार्यपत्र - डा. राजेन्द्रप्रसाद 'विमल' - *मिथिलाक संस्कार गीतमे निहित मौलिक चिन्तन*

भाव, विचार, शिल्प विच्छति आ राग-भाषाक मौलिकता सांस्कारिक लोक गीतक निजत्व थिक। जन्म-संस्कार गीत तीन प्रकारक अछि - (१) राम-जनक विषयक (२) कृष्ण-जन्मक विषय आ (३) सामान्य मिथिलाक प्रमुख संस्कार-जन्मसँ मृत्यु धरिक अर्थात् जन्म, मुण्डन, उपनयन, विवाह आ मृत्युमे विभिन्न वर्गमे फाँटिकऽ विचार प्रस्तुत भेल अछि। मौलिकताक परिप्रेक्ष्य अनिवार्य थिक। भाषा-शिल्पगत, भावगत आ चिन्तनगत वैशिष्ट्यकेँ सबल-पक्ष मानैत मिथिला संस्कार गीतकेँ अनमोल सम्पदा कहल गेल अछि।

टिप्पणीकर्ता डा. गंगाप्रसाद 'अकेला' - ई आलेख संगोष्ठी-पत्र कहब विशेष उचित होइत। जन-संस्कार गीतमे जकर उल्लेख्य कएने छथि से मिथिलाक ग्राम्य-जीवनमे ततेक उल्लेख नहि अछि। मिथिलाक सम्बन्ध मथुरासँ नहि, अवधसँ अछि। सोहरक वर्णनमे कनेक बेसिए सोहरिगेल छथि। विवाहक वर्गीकरण पक्षमे गीतसब ततेक उपयुक्त नहि भेल अछि। मिथिलामे तलाकसँ बेसी दहेजक समस्या अछि जकर उल्लेख नहि अछि।

समावेशीय सुझाव - सर्वप्रथम पृष्ठभूमि एबाक चाही। समस्या एबाक चाही। समाधानक दिशा एबाक चाही। सन्दर्भ-सूची कार्यपत्रक अन्तमे राखथि। तखने ई कार्यपत्र उत्कृष्ट होइत।

भ्रमर - अकेलाजी सहज-स्वाभाविक टिप्पणी कयलनि तैं मरखाह नहि कहल जाइत। गम्भीरतापूर्वक कार्यपत्रपर टिप्पणी अछि। सहज रूपसँ अनुभूतिक बात बेस सहज आ सुन्दर होइत अछि।

डा. पशुपतिनाथ झा - गंगाप्रसाद 'अकेला' जीक टिप्पणी सटीक अछि। वर्तमान समस्याक उल्लेख होबाक चाही।

डा. रेवतीरमण लाल - कार्यपत्र विश्लेषणात्मक ढंगे नीक अछि। संस्कार गीतसब जे छूटि गेल से फराक बात, मुदा आलेखक प्रस्तुति नीक अछि। शीर्षकमे जे चिन्तन अछि से संस्कार गीतमे चिन्तनक आवश्यकता ओ उल्लेख नहि होइत छैक। शीर्षकमे मौलिकताक चिन्तन होबाक चाही।

डा. महेन्द्रनारायण राम - छठियार संस्कारक समावेश होबाक चाही।

रोशन जनकपुरी - मौलिक आ चिन्तन दूटा शब्द अछि। उदासी पक्ष अएबाक चाही। दार्शनिक पक्ष आ सौन्दर्यानुभूतिक कमी आलेखमे बुझाइत अछि। जीवन-शैलीक व्यापारकेँ नव-सूत्रमे बन्हवाक प्रयास होएबाक चाही। मौलिकताक प्रामाणिकताकेँ देखबाक लेल इतिहासकेँ देखऽ पड़ैत छैक। एकर मौलिकता खोजबाकलेल एहि कार्यपत्रकेँ आरो चिन्तनपरक होबाक चाही। ई छात्रोपयोगी आलेख थिक।

राजेन्द्र झा - वानप्रस्थक चर्च नहि अछि।

शीतल झा - गीत प्रकट होइत अछि चिन्तनसँ। अपन चिन्तनसँ भाव आवए से गीत भऽ जेतैक। मौलिक चिन्तनपर टिप्पणी आवश्यक अछि। जिनगीक मौलिकता विभिन्न शब्द ओ भाव लऽ कऽ प्रकट होइत छैक। एहि आलेखमे दृष्टिकोण स्थापित नहि भऽ सकल अछि। आम-वहुक वियाह लेल सामयिक चिन्तन सेहो समग्रतामे होबाक चाही। तँ आलेख समग्रतामे एबाक चाही।

डा. तारानन्द मिश्र - दोहद आ पुत्र लालसा दूटा शब्द अछि। एहि दुनूमे की फर्क छैक से हमरा नहि बुझाएल। ई दुनू एके शब्द थिक ? दुनू शब्दकेँ फराक कऽ लेखक देखलनि जे अनसोहाँत थिक।

परमेश्वर कापड़ि - चिन्तन दर्शनसँ प्रत्यक्षरूपेँ सम्बन्धित अछि। लोक चिन्तन की छलैक से समग्र चेतनाक बात एहि आलेखमे नहि आएल अछि। लोक चेतनाक बात कयलनि से लोकक बात एबाक चाही। विषयक गम्भीरताकेँ रखैत सम-सामयिक सन्दर्भकेँ रेखाङ्कित होबाक चाही।

सत्यनारायण साह - पश्चिमी संस्कृतिक प्रभावक चर्च होबाक चाही।

भ्रमर - शीर्षक ठीक अछि। चिन्तनक विषय थिक। कार्यपत्रक वैशिष्ट्यमे नव वस्तु अछि। चिन्तनक विषय थिक। कार्यपत्रक वैशिष्ट्यमे नव वस्तु एबाक चाही।

प्रत्युत्तरक क्रममे डा. राजेन्द्र 'विमल' - गम्भीरतापूर्वक प्रतिक्रिया भेटल। डा. अकेलाजीक टिप्पणी छल। ओ जे बात रखबाक चाहि से सुझाव देलनि से दितियैक तँ शीर्षक बदलि जैतैक। प्रस्तुत गीत ग्राम्य-गीतमे प्रचलित अछि। कृष्णविषयक गीतमे मथुरासँ सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। कन्याकेँ वरक ओहिठाम उतारब वरपक्षक गीत थिक जे ओ अपन विवाहधरि बिसरि गेलाह। रागात्मक सघनता 'समदाउन'मे अछि ताहिमे दहेजक बात उठैबतियैक से उचित नहि। सन्दर्भ देब ओतेक आवश्यक नहि बुझायल जे गीत घर-आंगनसँ लोढि-बिछि नेने छी। वानप्रस्थक कोनो गीत संस्कारमे नहि अछि ? दृष्टिकोणक अभाव अछि ताहिसँ हम सहमत नहि छी। ई कार्यपत्र बच्चासभक लेल नहि छैक। तँ मूल वस्तुकेँ देखबाक चाही। ई हमर दृष्टिकोण थिक। दोहद शब्द संस्कृतक **मानक** प्राकृतिक शब्द थिक। शाब्दिक रूपमे एकर प्रयोग भेल अछि दोहतक। 'पुत्र-लालसा' केँ सेहो शाब्दिक अर्थमे लेबाक थिक। पश्चिमी संस्कृतिक प्रभाव पड़ब हमर विषय नहि छल। उचित सुझाव जे बुझायत तकर हम स्वागत करब।

डा. रमानन्द झा 'रमण' - गम्भीरतापूर्वक विषयकेँ उपस्थापित कयलनि। गर्भाधानसँ अन्तिम संस्कारधरिक गीतकेँ रागात्मक अभिव्यक्ति होबाक चाही। सहज-सुन्दर कल्पना विभिन्न संस्कारक अवसरपर मनोरंजक सेहो होइक। ठक-बक, धोती बदलनाइ आदि दर्शनक प्रतिफल थिक। 'मधुबनीक ब्राह्मणेत्तर जातिमे संस्कार' डा. उर्मिला प्रसादक शोध-प्रबन्ध अछि। प्रतिवेदन उपस्थापित करैत चन्द्रेश स्पष्ट कयलनि जे चारि कोटिक लेखक होइत छथि - (१) कथ्य, शिल्प आ भाषाक स्तरपर परम्परागत ढाँचामे बन्हायल रहब पसिन्न करैत छथि। (२) बनल-बनाओल परम्परागत फ्रेममे बन्हाकऽ अपन बात रखैत छथि। (३) परम्परागत छान्ह-बान्हकेँ छोड़ि नवताक नवल सृष्टि करऽ चाहैत छथि चारिम कोटिक लेखक (४) बात तँ करऽ चाहैत छथि आ किछु नहियो कहैत अनायासे कहा जाइत छनि। एहि चारि कोटिक आलेख प्रस्तावित गोष्ठीमे आयल।

निष्कर्ष :-

(१) संयोजक आ आयोजकक चौकन्न दृष्टिक फलस्वरूप कार्यक्रम पूर्णतः सफल रहल।
(२) लोकक उपस्थितिमे कमी होइतो उपस्थित व्यक्तिक सूक्ष्म-दृष्टिक फलस्वरूप कमीक भान नहि भेल।
(३) परम्परा आ आधुनिकता, परम्परा आ नवीनता ओ समकालीनता, मिथक आ साहित्य, साहित्यमे जातीय स्मृति आदिपर गहनतामे विचारदृष्टि उभरि कऽ आयल।
(४) स्रोता वर्गक सोझरायल दृष्टिमे उपस्थापित प्रश्न कार्यपत्रक सुधारात्मक दिशामे नवीनतम सोच आ दृष्टि आलेखमे सुधारक हेतु पाथेय बनल।
(५) एके प्रश्नकेँ किछु प्रश्नकर्त्ताद्वारा बेर-बेर दोहराओल गेलासँ कनेक बसिआयलसन बात बुझायल।
(६) आलेख प्रस्तुतकर्तासँ बढ़ि-चढ़िकऽ किछु टिप्पणीकर्त्ताक सुझाव दृष्टि सूक्ष्म रहल। तहिना स्रोता वर्गमे प्रश्नकर्तासँ आयल सुझाव गहनतम दृष्टिक परिचायक बनल।
(७) समयक सदुपयोग भेल। कार्यक्रममे निर्धारित समयक उपयोग भेल।
(८) आयोजक आ कार्यकर्ताक बीच समन्वयवादी दृष्टि प्रभावित कएने रहल जे सम्पूर्ण कार्यक्रममे व्यक्तिक तत्परता कार्यक्रमकेँ सफल बनबामे सहायक सिद्ध भेल अछि।
(९) कार्यक्रममे जीवन-दृष्टि खूजि कऽ उभरि आयल। खास कऽ नवता बोधमे समयक मांगक अनुरूप स्तरीय रचनाक महत्ता आँकल गेल।
(१०) विश्वस्तरीय आन भाषाक समकक्ष रचना मैथिलीमे होअए ताहिपर जोर देल गेल, जे आहलादपरक आ भविष्यपरक स्वस्थ दृष्टिक परिचायक थिक।
(११) किछु आलेखमे समकालीनताक कमी बुझाएल अर्थात् गओले गीत सबक झलकी भेटल।
(१२) सकारात्मक सोचमे सही दृष्टि उभरि कऽ आयल। किएक तँ ततेक मंथन भेल जे मैथिली लोक-संस्कृति गोष्ठीपर विचार-विमर्श भेलासँ जन जागरण आएल।
(१३) संक्रमणकालीन स्थिति होइतो कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक भेल।
(१४) आलेखक स्तरमे गुणवत्ताक मांग स्वाभाविकता आ सहजतामे भेल।
(१५) सौहाद्रपूर्ण वातावरणमे कर्यक्रम सम्पन्न भेल।

vvv

कार्यपत्र

लोकपर्वक विशिष्ट पक्ष

✍ **प्रा. डा. रामदयाल राकेश**

व्रतक शाब्दिक अर्थ भोजन नहि करब वा भोज निवृत्त हएब होइछ। व्रतक कोशगत अर्थ तऽ पुण्यतिथि विशेषक उपवास, अनुष्ठान, प्रतिज्ञा आदि प्रसिद्ध अछि। निरुक्तमे व्रतक अर्थ होइछ अन्न, किएतँ एहिसँ, मानव शरीर पुष्ट होइछ (अन्नमधि व्रत मुच्यते आवृणेति शरीर मिति)। समुचित विधि-विधानपूर्वक अन्न ग्रहण करब सेहो व्रत होइछ। महर्षि कात्यायन व्रत शब्दक अर्थ व्रताः म्दोजन तन्निवृत्यो' कहने छथि। यथा पयाव्रेत, पानीव्रत आदिमे मात्र दूध वा जल लेबाक लेल कहल गेल अछि। एकादशी व्रत, जीवत्पुत्रिका व्रत्त, सावित्री व्रत आ चन्द्राया व्रतमे व्रतक अर्थ भोजनक निषेध कहल गेल छैक। मीमांसक व्रतके मानसिक कियाकलाप कहल जाइछ - व्रतमिति च मानस कर्म उच्यते। ई लोक आ परलोक दुनहुक हेतु लाभदायक होइछ। एकर प्रत्यक्ष फल शारीरिक आरोग्य लाभ होइछ। एहिसँ अन्तः शुद्धि तथा विचारमे शालीनता तथा सदाचारमे शुद्धताक सँगहि ईश्वर भक्ति तथा श्रद्धा स्वतः समावेश भऽ जाइछ।

व्रत तीन प्रकारक होइछ - कायिक, वाचिक, तथा मानसिक। कायिक व्रतमे शास्त्रवर्जित हिंसा कदाचार एवं कुत्सित विचार, दर्शनसबहक त्याग करऽ पड़ैत छैक। वाचिक व्रतमे कुवचन, निन्दा आदिक त्याग करऽ पड़ैत छैक। मानसिक व्रतमे वासनासबसँ दूर हटि कऽ मनके सात्विक बनाबऽ पड़ैछ - नित्य, नैमित्तिक आ काम्य। नित्य व्रतमे कोनहु प्रकारक कामना नहि होइछ जेना पतिव्रता नारीक लेल पातिव्रत्य व्रत। नैमित्तिक व्रत ओ होइछ जे कोनहु निमित्तक हेतु कएल जाइछ। जेना कि सुख-सौभाग्यक हेतु शिवरात्रि व्रत, सूर्य व्रत अछि। काम्य व्रतमे कोनहु वस्तुक कामना कएल गेल रहैछ जेना पतिपुत्रादिक हेतु सौभाग्य एवं दीर्घायुक लेल। एहन व्रतमे अवैछ सावित्री आ जीतिया (जीवित्पुत्रिका) आदि। व्रतमे आचार, श्रद्धा उपवास आ प्रार्थनाक विशेष महत्व होइछ। उत्तम आचारण पहिल धर्म होइछ। मनुस्मृतिमे कहल गेल छैक - आचारः प्रथमो धर्मो नृणां श्रेयस्करो महान्। इ मनुष्यक हेतु कल्याणकारी होइछ। स्नान, पूजन, जप, हवन आदि ई सब व्रतक पूरक होइछ। ई सब बाह्यवृत्तिकेँ अन्तर्मुखी बनबैत

अछि। सात्विक भावकेँ प्रतिष्ठित कऽ त्याग आ अनाशक्तिदिसि प्रेरित करैछ। व्रतमे उपवासक बड़ महत्वपूर्ण स्थान होइछ एहि माध्यमसँ विकार तथा विकृत्तिसबहक नाश होइत अछि। हिन्दू धर्ममे एकर अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान छैक। व्रतकेँ विषय विकारसँ मुक्त कराबऽवला निवृत्तिक हेतु सर्वश्रेष्ठ माध्यम मानल गेल अछि। उपवासविनु कोनो व्रत, अनुष्ठान, साधना, तपश्चर्या प्रभृति धार्मिक कृत्य अपूर्ण मानल जाइत अछि। एकगोट भारतीय विद्वान्क शब्दमे "व्रत आत्मिक होइछ। मुदा व्रतक तात्पर्य आत्मशोधनक हेतु कएल विधिसम्मति उपायसभकेँ दृढतापूर्वक अपनाएब थिक ? व्रतक प्रयोजन दुर्गुणसबकेँ निष्कासन एवं सुसंस्कारसबकेँ उदात्तीकरण थिक। अध्यात्मक पथपर आँगा बढ़वाहेतु व्रत सहायक होइत अछि। व्रतसँ संकल्प शक्तिक विकास होइत अछि। कोनो सत्कार्य पूरा करबाकक संकल्प व्रतक स्वरूप थिक। उच्चस्तरीय नियमसबहक पालना करबाक बातो एहिमे अबैत छैक। शास्त्रकारसब व्रतक तप एवं तितिसा (सहन-शीलता) केँ महत्वपूर्ण पक्षक रूपमे निरुपित कएने छथि। *(डा. चन्द्रभूषण लालजी वर्मा, व्रतों की महत्ता और भारतीय संस्कृति : कल्याण, व्रत्त पर्वोत्सव अंक, पृ. १३४)* अहिंसा, सत्य, आस्तेय, ब्रम्हचर्य आओर अपरिग्रह ई सबकेँ महाव्रत कहैत छथि। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय आओर ईश्वर प्राणीधान, ई पाँचोटा नियमरूपी व्रत थिक। ईसब हमरासभक सांस्कृतिक मूल आधार थिक। ई व्रतसब आओर महाव्रत हमरासभक संस्कृतिक प्राणतत्व थिक। एकर उचित पालनसँ शारीरिक शुद्धि, आत्मिकभार, आध्यात्मिक शान्ति प्राप्ति होइछ। एकर माध्यमसँ ईश्वर एवं इष्टदेवक आराधना सेहो कएल जाइत अछि। व्रत एवं उपवासक अनुष्ठानसँ स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवनक प्राप्ति होइत अछि। अहु ठाम एकटा भारतीय विद्वान्क कथन सांदर्भिक प्रतीत होइछ - "त्यौहार हमरसभक सभ्यता आ संस्कृतिक प्रतीक थिक। शताव्दिओसँ ई हमरासभक सामाजिक जीवनमे नवप्रेरणाक संदेश दैत आएल अछि। ऐतिहासिक स्मृतिसबकेँ जागृत करबैत भविष्यक गौरवकेँ मंगलमय मन्त्र ई हमरासबकें देखवैए"

(सुरेशचन्द्र शर्मा : भारत कें त्यौहार : भूमिका।)

मैथिली संस्कृतिक मूल धारा धार्मिक परम्परा थिक। एहि परम्परामे व्रत आओर त्यौहार मिलल छैक। एहि पर्वसबक अवसरपर मन्दिर, तीर्थस्थल आ धार्मिक प्रतिष्ठानसबमे लोकसभ अपन-अपन भाषा, भेषभुषा, खानपान आओर जीवनशैलीकेँ बिसरि कऽ सभ एकआपसमे आबद्ध होइत अछि तथा अपन भक्तिभावना अभिव्यक्त करैत अछि। सम्पूर्ण

मिथिलाञ्चलमे एहन दृश्य सहजे देखल जा सकैछ। लोक देवताक प्रति भक्ति, भाव, आस्था तथा विश्वास प्रकट करबामे मैथिलगण पाछु नहि रहैत छथि। विक्रम संवतक पहिले माससँ आरम्भ भऽ जाइत छैक पर्व-त्यौहार। नवरात्र, दुर्गापूजा, रामनवमी, नागपंचमी, राखी (रक्षा बंधन), कृष्णाष्टमी, अनन्त चतुर्दशी, श्राद्धपक्ष, विजयादशमी, शरदपूर्णिमा, धनतेरस, दीपावली, अन्नकूट, कार्तिक पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, वसन्त पंचमी, महाशिवरात्रि, फगुवा प्रभृतिक क्रम अनवरतरूपेँ चलैत आबिरहल अछि। ई पावनि-तिहार सामूहिक रूपमे मनाओल जाइत अछि। एकादशी, अमावश्या, पूर्णिमासेहो ओतबैक् निष्ठापूर्वक मनाओल जाइत अछि। तहिना रवि,सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र आओर शनिदिनसँग सेहो अनेक व्रत जुड़ल अछि। मिथिलाञ्चलक पञ्चाङ्गमे एहन कोनो सप्ताह पक्ष अथवा मास नहिं जाहिमे पर्वसब नहि मनाओल जाए। सब पावनि असीम आस्था, उमङ्ग आ उत्साहकसँग मनाओल जाइछ। वैदिक ऋषिमुनिसभ एहन संस्कृति हमरालोकनिकेँ प्रदान कयलनि जेकरासँ हमसभ एखनिधारि प्रेरणा लऽ रहल छी एवं भविष्योमे लैत रहब। ओसभ एहन जीवन दर्शन प्रदान कएलनि जे हमरसभक जीवन आस्थामय आओर आनन्दमय बनल अछि। एहिप्रकार मैथिल संस्कृतिमे ई व्रते, पर्व आओर त्यौहारसब अनुस्यूत भेल अनुभव होइछ। मैथिलगण धर्मप्राण भेलाक कारणें हिन्दु धर्मसँ अत्यन्त निकटस्थ छथि। सुरेशचन्द्र शर्माक शब्दमे ई कथन ठीके बुझना जाइछ - "हिन्दू जातिक जीवन ई व्रत तथा उत्सवसँग जुड़ल अछि।"

ई व्रत-तिहार-पावनिसबक महत्व कम नहियो भेल हुअए परन्तु लगाव कम होइत गेल भान होइत अछि। नीकजकाँ अध्ययन, कएलजाए तऽ पावनि-तिहार सामाजिक आडम्बर नहि भऽकऽ अनिवार्य आवश्यकता थिक। एकराविनु हमरसबहक जीवन शुष्क, नीरस आओर निष्प्राण सदृश भऽ जाइत। ई व्रत-पावनिसबहक आयोजनसँ जीवनमे सरसता अबैत छैक। पर्व मनेबाक बात जीवनकेँ प्रशस्त, व्यापक तथा विशाल बनेबाक एक बाट थिक। व्रत सामान्य प्रचलित अर्थ उपवासमात्रमे सीमित भऽ गेल अछि। जखन कि उपवासक अर्थ होइछ, दुर्गुणसब आओर दोषसबसँ बचि कऽ आत्मा अथवा सद्‌गुणसबक सँग रहनाइ, अधिक चंचलबाध्य चित्तवृत्तिसबकेँ शमन करी तथा अन्तरमुखी बनी। उपवास कएलासँ मन विषय वासनासँ विरक्त भऽ जाइछ। उपवास ईश्वरीय सत्ताक दिस उन्मुख आओर आकृष्ट करबाक माध्यम थिक। एहिसँ कुत्सित भावना समाप्त भऽ मानवीय भावनामे अभिवृद्धि होइत छैक। व्रतक दिन उपवास करऽके दीर्घकालीन

प्रथा छैक। तहिन फलाहारोक प्रथा छैक। एहिसँ मोन शान्त तथा चित्त प्रसन्न रहैछ। पापसँ निवृत भऽ कऽ मानवीय गुणसबहक विकास होइत छैक। उपवासक व्याख्या करैत कात्यायन लिखने छथि -

"उपावृत्तस्तु दोषेभ्योः यस्तु वासो गुणेः सह।
उपयासेस्तु से विज्ञेयः सर्वदोष विवर्जितः।

हिन्दु जीवन प्रकृतिमे उपवासक महत्व निर्विवाद रूपमे रहल पाओल जाइत अछि। युगोंसँ उपवास पद्धति प्रचलित अछि। शैव, वैष्णव, शाक्त, बौद्ध, जैन, मुसलमानसब उपवासकेँ मान्यता देने अछि। एहिसँ शरीर स्वस्थ रहैत छैक तथा चित्तो शुद्ध रहैत छैक। एहि प्रकारसँ पावनि-तिहारकेँ मूल उद्देश्य शारीरिक स्वास्थ्य चिंतन, मानसिक शान्ति, आत्मिक बल, पारिवारिक सुख-समृद्धि, सामाजिक तथा व्यक्तिगत एहितक नैतिक व्यवस्था, लौकिक अभ्यूदय तथा अलौकिक अभिज्ञानक अभिवृद्धि होइत छैक। व्यक्तिसँ परिवार; परिवारसँ समाज आओर समाजसँ राष्ट्रक कल्याणक कामना आओर भावना एहिमे निहीत छैक । मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक दृश्यावलोकन एहि ठामक व्रत कथाक माध्यमसँ कएल जा सकैछ। यद्यपि व्रतकथासबहक संरचना रुढ अछि। कात्तिक व्रत कथा, जितिया व्रतकथा, छठी व्रत कथा, सपता-विपता, बटसावित्री, मधुश्रावणी आदि व्रतकथासबहक माध्यमे मिथिलाञ्चलक महिलालोकनिमे आस्थाक संदेश अनुगूंजित अछि। तीज व्रत कथा श्रावणसँ अश्वमेघ रहल बुझना जाइछ। यज्ञक फल भेटैक। एहि व्रतकथासबहक श्रवण आनुष्ठानिक होइत अछि। मौन (२००६) व्रत-उत्सवसँ जुड़ल कथासबहक सेहो बड़ महत्व होइछ। एहि कथासबकेँ श्रवण तथा मनन चिन्तनसँ पवनइतिनसबकेँ सँगेसँग अन्य श्रोतापर सेहो एकटा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ैत छैक। ताहुमे सरल हृदयवाला लोकउपर पावनिक कथाक प्रभाव सर्वाधिक होइछ। ई कथासब (Ritualstories) व्रत-उत्सव तथा पावनिक अभिवृद्धि करऽवाला संजीवनी शक्ति होइत छैक। एकरा परित्याग कयलापर संपित पूण्यक नाश भऽ जाइत छैक। संस्कृतमे कथन छैक –

"पूर्व व्रतं गृहित्वा यो नायरेत काम मोहित :
जीवन भवति चंडालो मृतः श्या जायते।

सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे पावनि-तिहार सम्वन्धी अनेको कथावाचनक पुरान परम्परा छैक। जेनाकि, बटसावित्री पुजनोत्सवमे सावित्री औ सत्यवानक कथा, मधुश्रावणीक पहिल दिन मौना पंचमी, आओर विषहरिक कथा, तेसर दिन मङ्गला गौरी, चारिम दिन पृथ्वीक जन्म, पाँचम दिन समुद्र

मंथन, छठम दिन सती, सातम दिन महादेव, आठम दिन गंगा, नवम दिन गौरीक जन्म आओर दशम दिन गौरीक तपस्या, एगारहम दिन संध्या, वारहम दिन गोसाओनि तथा तेरहम दिन श्रीकर राजाक कथा। तेहिना अनन्त चतुर्दशीमे भगवान अनन्तकेँ, जितियामे जिमुतवाहनकेँ, सत्यनारायण भगवानक कथा, कृष्णाष्टमीमे कृष्णक कथावाचनक परम्परा अछि। भारतीय विद्वान् सुरेशचन्द्र शर्मा एहुपर प्रशंसा देने छथि - "जीवनक मार्गके प्रशस्त बनेबामे व्रत कथासबहक कम महत्व नहि। ई कथासब अत्यंत निपूणताक सँग लिखना गेल अछि। सरल हृदय नागरिककेँ मोनमे तत्काल श्रद्धा औ विश्वास उत्पन्न भऽ जाइत छैक। ई कथासब व्रतक संजीवनी शक्ति थिक।'

व्रतसम्वन्धी कथासबक विषयमे एक भारतीय विदुषी एम. मीनाक्षीक मतः "पौराणिक युग आएल तऽ जनतामे व्रतसबहक एकर दोसर रूप प्रचलित भेल। ई व्रत कामना या मनोकांछा पूर्तिक लेल प्रसिद्ध भेल। एकरासँगमे राजा रानीक कथा जुटिगेल। राजारानीक कथाक अतिरिक्त संगे, साहुकार चारो वर्ण (व्राह्मण, क्षेत्री, वैश्य शूद्र) नागरिक ग्रामीण जनजीवन, वन-पर्वत, नदी, सागर, जीवजन्तु आदिसँ सम्बन्धित सहस्राधिक कथासब, ई व्रत-पर्वक साथ जुटैत चलिगेल।"

(एम.मीनाक्षी भारतीय व्रतोत्सब महिमा पृ. १०)

आगाँ सेहो व्रतकथाक महत्वक उपर प्रकाश दैत ओ लिखने छथि - "व्रतकथासबमे देशक क्षेत्रसबहक जीवन चित्रित होइत छैक। मनोवैज्ञानिक प्रभाव कथासबक उपर एतेक अचूक पड़ैत छैक जे व्रती व्यक्तिक मानसिक दशा शुद्ध होइत छैक। ई कथासब व्रतक लेल संजीवनी औषधिक काज करैत छैक। वास्तवमे ई कथासब व्रत सबक सोदाहरण व्याख्यान छैक। व्रत-पर्वसबहक लोकप्रियता सेहो कथासबहक कारणे लोक जीवनमे उत्तरोत्तर बढैत चलिगेल छैक।

(एम. मीनाक्षी भारतीय व्रतोत्सव महिमा पृ. १४)

उपवास विशेषतः स्त्रीगणक प्रियवस्तु थिक। पुरुष वर्ग सेहो एकर अनुसरण करैत छथि तखन स्त्रीगण एकरा विशेष महत्व दैत छथिन् आओर अविवाहित महिला सेहो। यथा –

The Fast is usually undertaken by married women, but ever unmarried girls observe it these days usually on Amavasya (Dark Fortnight) in order to avoid widowhood and remain a wife till husband lines. Banyan (Vata) Tree is worshipped on this day. The prayer 'may I abide in heaven is many year, as this tree continues

growing on the earth." *(Chitralekha Singh. Preminent Hindu Festivals Fair and Fasts p.16.)* आधुनिक युगमे ई व्रत त्योहारसब प्रदर्शनक लेल वेशी लोक करैत छथि। ईश्वर चिन्तन, मनन आओर भजनसँ वेशी बाह्य प्रदर्शन एकर मुख्य आकर्षण बनऽ लागल अछि। एकटा भारतीय विद्वान् एहि पक्षपर विशेष प्रकाश देने छथि :-

The trend is the modern times the very much charged the very basic concept of the festivals. The modern generation, particularly in northern India, celebrates this festival, more as a how of gaiety, rather than a worship of the deities and the gain of spiritual knowledge. Old Indian traditions and cultural rites, at the time of festivals, are still being retained in the east, west and the south of India. Chitralekha Singh, Preminent Hindu Festivals Fairs and Fasts and preface.

ई व्रतत्यौहारकेँ मनौलासँ मस्तिष्क शुद्ध होइत छैक, आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त होइत छैक, ईश्वरक लीलासँ सम्वन्धित भेलाक कारणें ई व्रत त्यौहारसँ ईश्वरक पूजन एवं आराधना सेहो होइत अछि:

"Almost every festival and fast in India has a link with our spiritual outlook. The festivals are convened for the worship of the gods and goddesses. Generally these festivals are related to the leela (amorous sport) of one or the other god. The aim of this festivals is to remember the deeds of the gods and goddesses to worship than and thereby purify the mind. Fasts and festivals are observed by millions of Hindus, Little knowing the orgin and the logic behind the celebrations". preface. ई व्रत त्यौहारसब सदियौंसँ सभ्यता आ संस्कृतिक अभिन्न अंगक रूपमे मनेबाक बड़ पैघ परम्परा छैक। ई संस्कृति आत्मासँ जुटल छैक आ एकर जरि बहुत दूरतक पसरल छैक। आजुक युगमे सेहो एकर महत्व कम नै भेल छैक आ भविष्यमे सेहो कम नै हएत। एहि विषयमे भारतीय विद्वान्क कथन कतेक सामाजिक आ सान्दर्भिक छै -

These traditons have become so rooted in the society that how so ever a modern man of scientific age may consider then unbelievable or superfluous Yet these continue since ages."

इस्लाम धर्ममे सेहो उपवासक महत्व निर्विवाद रूपमे बड़ पैघ मानल जाइत छैक। मुसलमानक रमजान पर्व उपवासक लेल संसार प्रसिद्ध छैक।

एहितरहें सबधर्मक अनुयायी विभिन्न ढंगसँ उपवास रखैत छथि परन्तु

उपवासक उद्देश्य समान होइत छैक मुदा सत्यक खोज एकर मात्र एक परमपिता परमेश्वरक अस्तित्व चाहे कोनो नाम से हम पुकारी ।"

(सी.एन. भंडारी : उपवास का अभिप्रायः शरीर एवं आत्मा की शुद्धि : भारत संदर्श : नम्बर २००५)

मैथिली संस्कृतिमे ३८ प्रकारक पावनि-तिहारक प्रावधान छैक । प्रारम्भ श्रावण कृष्णपंचमीसँ होइत छैक । एहि अवसरपर सर्वमाता विषहरा (मनसा देवी) क जन्मोत्सव मनाओल जाइत अछि । मधुश्रावणीमे २५ गोट कथाक पारायण देखल जाइत अछि । एहने वारहय पावनि छैक गर्भहिमे कथा सुनयके विधान छैक ।

प्रत्येक पर्वक अपन विशिष्ट सन्दर्भ छैक, विधान छैक आओर फलाफल कं विश्वास छैक । अधिकांश पावनि स्त्रीगणसँ सम्बन्धित अछि । किछु मात्र पावनि अछि जे पुरुष मात्रक लेल छैक जेना कि, पितृ तर्पण आओर अनन्त भगवानक पूजा । तहिना भ्रातृद्वितीया भाई-बहिनक पावनिक रूपमे स्थापित छैक । किछु पर्व नियतिकालिक होइत छैक । जेना कि 'सूर्यक डोरा' जेकरा स्त्रीगण एक वर्ष तीन वर्ष अथवा पाँच वर्षधरि मनवैत छथि । नवविवाहित महिलागण एकवर्षधरि पृथ्वीकेँ पूजा करैत छथि । कुमारी (वालिका) आठे वर्षक अवस्थासँ तुसारी (गौरी) पूजाक आरम्भ करैत छथि आओर विवाहक एक वर्ष उपरान्त व्रत सौंपल जाइत छैक । तहिना महिला गणकेँ 'हरिसौं पर्व' सेहो समयबद्ध होइछ । विवाहोपरान्त कन्या वर्षभरि अनुष्ठान कऽकऽ एहि पर्वकेँ समापन करैत छथि । किछु पर्व संख्या पद (Numeral) होइत छैक जेना कि माघी सप्तमीक दिन सूर्योदयसँ पहिनहि तिल लऽकऽ स्नान करऽके विधान छैक । रामनवमी पूजा भगवान श्री रामचन्द्रक जन्मोत्सवक रूपमे मनाओल जाइत अछि । कृष्णाष्टमी भगवान् श्री कृष्णक जन्मोत्सवक पर्व थिक । देव उठाउन एकादशी (कात्तिक शुक्ल पक्ष) श्री विष्णु भगवानक आराधना पर्व थिक । एहि दिन भगवान विष्णु क्षीरसागरमे चिर निद्रासँ जागल मानल जाइछ ।

मैथिली पर्वक पाँच अंग थिक (१) व्रत (उपवास) (२) कथा (३) पूजन (४) गायन (५) अरिपन (अल्पना)। पर्व मूलतः दू तरहक होइत अछि - शास्त्राचार एवं लोकाचार । लोकाचारमे स्थानीय एवं जर्यतगत आसारपर विविधता आबैत छैक । एहि प्रकारक पर्वसबहक निर्धारण तिथिद्वारा होइत अछि । एकरो दू भागमे वाँटल जाय-सम्प्रदायगत तथा लोकगीत । एहुमे पुनश्चः ई प्रकृत देखना जाइछ - पहिल शास्त्रनिष्ठ तथा दोसर लोकनिष्ठ व्यवहार । आइकाल्हि शास्त्रनिष्ठ व्यवहार लोप होइत गेल अछि आओर लोकनिष्ठ व्यवहार महिलागणकेँ मनोवलपर आश्रित एवं आधारित अछि ।

महाकवि कालिदास पर्वक महत्वक बारेमे कहैत छथि -

"उत्सव प्रियाः खलु मनष्याः ।" एकर महत्व मानव जीवनमे निर्विवाद रहल सर्वविदित थिक ।

व्रत, पर्व तथा उत्सवकेँ मानवक लौकिक तथा आध्यात्मिक उन्नतिक सशक्त परम्परा आओर प्रचलन मानल जाइछ । एहिसँ आनन्दोक संगेसंग उदात्त एवं उत्कृष्ट जीवनक प्रेरणा प्राप्त होइछ । सृष्टिक उद्भव आनन्देसँ भेल अछि तथा एहि आनन्दमे ई अवस्थितो अछि । व्रत, पर्व आओर उत्सवक मूलमे आनन्द आओर उल्लासक भावना पाओल जाइछ । एकर मूल उद्देश्ये दुःख, भयः शोक, मोह, अज्ञान तथा अभिशापसँ मुक्ति पौनाइ तथा अखण्ड आनन्दक प्राप्ति अछि । ताहिसँ पर्वक अनुष्ठान एवम् संकल्प करऽवाला मानुष प्रायः अन्तर्मुखी होइत अछि । स्नान पूजा, जप, दान, हवन आओर ध्यानो एक तरहक व्रत थिक तथा एहिसँ पवनैतिन बाह्य वृतिसँ-निवृत भऽकऽ अन्तर्मुखी भऽ जाइत छथि । व्रतपालन कएलासँ मनुष्यकेँ उन्नत जीवनक योग्यता प्राप्त होइछ । व्रताचरणमे मुख्यतः तीन बातक विशेष ध्यान राखल जाइछ - १. संयम नियमक पालन २. देवताक आराधना ३. अपन लक्ष्यप्रति जागरुकता ।

व्रतद्वारा अन्तःकरणक शुद्धिक सँगे वाह्य वातावरणमे सेहो पवित्रता पसरि जाइछ आओर संकल्प शक्तिमे दृढ़ता प्राप्त होइछ । भौतिक दृष्टिसँ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होइत छैक, रोगसबसँ पूर्ण तथा निवृति प्राप्त होइछ । यद्यपि रोगके सेहो पाप मानल जाइछ, रोगरूपी पाप व्रतद्वारा दूर भऽ जाइत छैक, तैयो कायिक, वाचिक, मानसिक तथा संसर्गजनित सबप्रकारक पाप, अपाप आओर महापाप प्रभृति सेहो व्रतद्वारा दूर भऽ जेबाक विश्वास कएल जाइत अछि ।

(व्रत पर्वोत्सव एक समीक्षा : कल्याण व्रत पर्वोत्सव अंक २००४ पृ. १६)

व्रतमे आचार, श्रद्धा, उपवास तथा प्रार्थनाक विशेष महत्व होइछ । उत्तम आचारक पहिल धर्म मानल गेल छैक । मनुस्मृतिमे कहल गेल छैक "आचारः प्रथमो धर्मो नृणां श्रयस्करो महान्" । एकरा मनुष्यक लेल अत्यन्त कल्याणकारी मानल गेल छैक । स्थान, पूजन, जप, हवनप्रभृति व्रतक पूरक थिक । एहिसँ अन्तर्मुखी होइत मनुष्यमे सात्विक भावनाक स्थापना कऽ कऽ त्याग तथा अनासक्तिदिसि प्रेरित करबैत अछि । उपवास विकारसबके विनष्ट करबैत अछि । चित्तके शुद्ध करैत अछि । ई स्वास्थ्यक लेल सेहो अत्यन्त महत्वपूर्ण होइत अछि तथा व्रत आओर महाव्रतमे सबसँ महत्वपूर्ण उपवासकेँ मानल गेल अछि । उपवासकेँ हिन्दू मात्र नहिं इस्लाममे सेहो

मान्यता देल गेल अछि। हिन्दूसभ हरेक वर्ष विविध पावनि-तिहार एवं उत्सवपर उपवास करैत छथि। मुसलमानसभ एक मात्र रमजान मासमे उपवास 'रोजा' रखैत अछि। सूर्योदयसँ पूर्व मुसलमानसभ खान-पान कऽ लैत छथि। हिन्दु निराहार व्रत करैत छथि परन्तु अधिकांश व्रतमे फलाहारक प्रचलन विद्यमान अछि। फलफूल, कन्दमूल, दूध, दही इत्यादि खाएल जाइछ मुदा निष्ठापूर्वक मात्र एक बेर।

पूजन विधि :- व्रतसबहक पूजन विधिमे ध्यान देनाइ स्वाभाविक बुझना जाइछ। पूजन-विधिमे अनेक बातक ज्ञान आवश्यक छैक। अनेकों वस्तुक आवश्यकता पड़ैत छैक। अठारोपचारक विधान पूजाक लेल आवश्यक होइत छैक। एहिमे आसन, स्वागत, अर्ध्य, पाद्य, आचमनि, मधुपर्क, सन, वस्त्र, आभरण, सुगन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, माला, अनुलेपन तथा नमस्कारप्रभृति आवश्यक होइत छैक। पञ्चोपचार पूजनमे गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवद्ये मानल जाइछ। पूजामे पञ्च-गव्य, धान्य, पञ्च-पल्लव, पञ्च-रत्न, पञ्चामृत, षड़रस, सप्तधातु, सधात्व इत्यादिक प्रयोजन पड़ैत छैक। कोन पूजन सामग्री की कहबै छैक तथा ओहिमे कि कि आवश्यक होइत छैक से आगाँ उल्लेख कएल जाइत जेना कि,

पञ्च-गव्य : गाईक मूत्र, गोबरि, दूध, दही तथा घीक विधानकेँ पञ्च गव्य कहल जाइत छैक।

पञ्च-धान्य : जौ, गहूम, मूंग, धान तथा तिल।

पञ्च-पल्लव : पीपरि, बर, अशोक, गूल्लरि, आमक पात।

पञ्च-रत्न : नीलम, हीरक, मोती, पन्ना तथा पुष्पराज।

पञ्चामृत : दुग्ध, दही, घी, मधु, मिश्री

षड़रस : मधुर, अम्ल, तामा, पीतड़ि, लोहा, जस्ता आओर सिसा।

सप्तधान्य : जौ, गहूम, मूंग, तिल, धान, उरीद आओर मड़ुआ

मधुरत्रम : घी, दूध तथा मधुक आसमान मिश्रण।

मधुपर्क : एक भाग दही, दू भाग मधु तथा घीक एक भागक सम्मिश्रण।

पञ्चदेव : विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य तथा दुर्गा

पञ्च-पुष्प : चमेली, चम्पा, शमी, कमल तथा केवड़ा वा कनइल

षट्कर्म : स्नान, सन्ध्या, हवन, पाठ, देवपूजन, वैश्वदेव (अतिथि पूजन)

सप्तऋषि : कश्यप, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, जमदग्नि, वशिष्ठ आओर विश्वामित्र।

सप्तगोत्र : पिता, मिता, पत्नी, बहीन, पुत्री, पिउसी तथा मौसीक गोत्र।

पंचोपचार : गंध, पुष्प, धूप, दीप, आओर नैवेद्य

कालत्रय : प्रातःकाल, मध्यान्हकाल आ सायँकाल

वेद : ऋक, यजुः, साम आओर अर्थव

वेद खडंग : कल्पे, व्याकरण, निरुक्त, इन्द शिक्षा आओर ज्योतिष

नवरत्न : माणिकम, मोती, मूंगा, पुष्पराज, हीरा, नीलम, गामेद, वैदुर्य मणि, पना।

दशदान : गौ, भूमि, तिल, सोन, घी, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी तथा नून

पंचनदी : भागीरथी, यमुना, सरस्वती, गोदावरी आ नर्मदा।

व्रतोपवाससँ अनंत पूण्य तथा आरोग्यक प्राप्ति होइत छैक। एहन कथन छैक जे एक उपवास मात्रसँ अनेको रोगक नाश होइत छैक। नियमतः व्रत उपवाससबसँ उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवनक प्राप्तिक विश्वास कएल जाइत छैक। कोनोहु धर्ममे देखना जाइछ जे महिलेगणकेँ पावनि-तिहारधर्म कर्म तथा व्रत-पूजामे वेशी भूमिका रहैत छैक। महिले कोनो संस्कृतिक संवाहिका होइत छथि। अतः व्रत-तिहारक निरन्तरतामे महिलेसभ अनुष्ठान कऽ कऽ बहुत अभिनन्दनीय काज करैत आबिरहल छथि। एहिकारणे संस्कृतिक संरक्षण तथा सम्बर्द्धनमे महिलागणक अवदान महत्वपूर्ण आ प्रसंशनीय अछि।

कोनो संस्कृतिक आधारशीला ओहि सांस्कृतिपर आधारित तथा आश्रित व्रत-तिहारपर अड़ल रहैत छैक। कोनो संस्कृतिमे सरसता, समरसता, सामञ्जस्य, सौमनस्य, आओर सौन्दर्यक अभिवृद्धिमे स्त्रीगणक सक्रिय सहभागिता आवश्यक मानल जाइछ। स्त्रीगणसभ अपना शरीरकेँ कष्टो दऽकऽ संस्कृतिकेँ निरन्तरता देबाक लेल सदैव चिन्तनशील रहैत छथि। जखन कि व्रत उपवासक अनुष्ठानसँ शरीरो स्वस्थ आओर सौन्दर्यमय भऽ जाइछ। शरीरक शुद्धीकरण होइत छैक। शरीर शुद्ध भेलापर आत्मा सेहो आध्यात्मिक सुखक दिस अग्रसर भऽ जाइत छैक।

दशदान : गौ,भूमि, तिल, सोन, घी, बस्त्र,ान,गुड,चांदी तथा नून

पंच नदी : भागीरथी, यमुना, सरस्वती, गोदावरी र नर्मदा

व्रत तिहारक लेल पहिल महिलेगणक भूमिका अग्रणी रहैत छैक। घरकेँ स्वर्ग बनेबाक भूमिका महिलेगणक हाथमे रहैत अछि। तदर्थ ईलोकनि व्रत उपवास कऽ कऽ घरकेँ श्री सम्पन्न, स्वर्गीय तथा सौन्दर्यसँ सुशोभित करबाक प्रयास करैत रहैत छथि। ईलोकनि व्रत तिहारके संकल्प कऽ कऽ घरपरिवारके सुखी आ सम्पन्न बनेबामे कोनो कसर बाँकी नहि राखैत छथि। ईलोकनि संस्कृतिक जगाधार व्रत तिहारके मनोरञ्जनक लेल नहि

कि भावी जीवनकेँ सुखद आ ओर सम्पन्न बनाबऽमे आतेबे सक्रिय तथा सचेष्ट रहैत छथि। पुरुषक सहभागिता सेहो आवश्यक होइत छैक मुदा मुख्य भूमिकामे महिलेगण होइत छथि। आदित्य पुराणमे कथन छैक–स्त्रीकेँ अपना पति अथवा पुत्रक ओजसँ व्रतोपवासद्वारा पुण्यक प्राप्ति होइत छैक। पतिक निधनक बाद पुत्रक आजसँ व्रतोपवास करबाक चाही अन्यथा ओ कर्म निष्फल भऽ जाइछ।˘

'नारी खल्वननु ज्ञाता भर्त्रा वापि सुतने वा
विफर्ल तदभवेतस्या चत्करोत्यो र्ध्व रैहिकम।'

किन्तु भारतीय विद्वान सुरेश चन्द्र शर्माक कथनानुसार एहेन व्रत तिहार महिला मात्रक लेल नहिं थिक बल्कि बालवालिका, बृद्ध, युवासभक लेल उपयोगी एवम उपलब्धिमूलक भऽ सकैछ। हुनक कथन छनि जे–आई व्रतक सामान्य अर्थ उपवास बनिगेल अछि। उपवास शब्दक अर्थ थिक दुर्गुण तथा दोष सबसँग बचि कऽ आत्मा वा गुणसबहक साथ वास केनाइ। अनुभवेसँ देखल जा सकैछ जे कलुषित भावनासबसँ मुक्त भऽकऽ चित्तबृत्तिसबकेँ आत्मा वा सत्यमे सन्निविष्ट करबाक प्रेरणा उपवासक समयमे सर्वाधिक होइत अछि। ई व्रत तथा उपवास केवल स्त्री अथवा मातासभक लेल मात्र नहिं थिक, प्रत्येक वालक बालिका,युवा तथा बृद्धसभक लेल थिक।

(सुरेश चन्द्र शर्मा : भारतके त्यौहारः भूमिका।)

शास्त्रक अनुसारो व्रतकेँ परिभाषित करबाक प्रयास कएलगेल अछि। व्रतकेँ तप कहल गेल अछि। वास्तवमे व्रत एक तरहक तपस्ये थिक। व्रत साधना तथा तपसाधनमे अनेको समानता पाओल जाइछ। दम(इन्द्रिय संयम) तथा शम(मनोनिग्रह)के सेहो व्रतक अंगक रूपमे अंगीकार कएल गेल छैक–शास्त्रोक्त नियमकेँ व्रत कहल जाइछ, एकरे तप सेहो मानल गेल छैक। उपवास प्रभृतिक पालनसँ प्रसन्न भऽकऽ भगवानद्वारा भोग तथा मोक्ष प्रदान कएल जाइछ। पापसँ उपवृत्त(निवृत) भऽकऽ सब प्रकारक भोगसबहक त्याग कएलाउत्तर सद्गुणसबहक साथ वास होइत छैक, तकरे उपवास कऽकऽ बुझबाक चाही।

(कल्याण : व्रत पर्वोत्सव अंक २००४ ई.।)

सन्दर्भग्रंथ सूची

१ सं.चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। मैथिली लोक साहित्य, साहित्य अकादमी : प्र.सं.२००६।
२. श्रीमती मोहिनी झा : मिथिलाक पावनि-तिहार : उर्वशी प्रकाशन पटना प्र.सं.१९९१

३. एम मीनाक्षी : भारतीय व्रतोत्सव : सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली २००१।
४. डा.रेवतीरमण लाल : मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा, रामानन्द युवा क्लव जनकपुरधाम प्र.सं. २००८
५. रामभरोस कापडी 'भ्रमर' मैथिली लोक संस्कृति : जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान, २०६६।
६. राजेन्द्र विमल : मिथिलाको इतिहास, संस्कृति र कला परम्परा, हिमालय बुक स्टल :काठमाडौ २०६२
७. रामदयाल राकेश : मैथिली संस्कृति ने.रा.प्र.प्र.प्र.सं. २०५५
८. रामदयाल राकेशः मैथिली लोक-संस्कृति : एकता बुक्स प्रा.लि.
९. विवेक मोहन : हिन्दुओके सम्पूर्ण व्रत त्योहारः राजा पाकेट बुक्स दिल्ली २००४
१०. विन्देश्वरी दास :व्रम्हदेव लाल दासः मैथिल शुभ संस्कार : मिथिलांगन : नई दिल्ली २००६
११. सुरेशचन्द्र शर्मा : भारतके त्यौहार : आत्माराम एण्ड सन्स : दिल्ली

अंग्रजी भाषामे प्रकाशित ग्रन्थ सूची

1. Chandra lekha Singh Preminent : Hindu Festivals: Fairs and Farts: Prefer
2. C.H.Buck "Faiths, Fairs and Festivals of India "Rupa Co 2002
3. Jeanine Fowler: Hinduism: Adders Books Preprinted 2000
4. Ram Dayal Rakesh : Folk festivals of Mithila, Book faith N.Delhi 1998
5. Ram Dayal Rakesh:Nepalese culture in a Nutshell Patna Pustak Bihar 2009
6. Ram Dayal Rakesh: Cultural Henitage of Nepal Terai: Nirala Publication Delhi 1994

पत्र पत्रिका : कल्याण पर्व तिहार बिशेषांङ्क आओर भारत सर्न्दभ

vvv

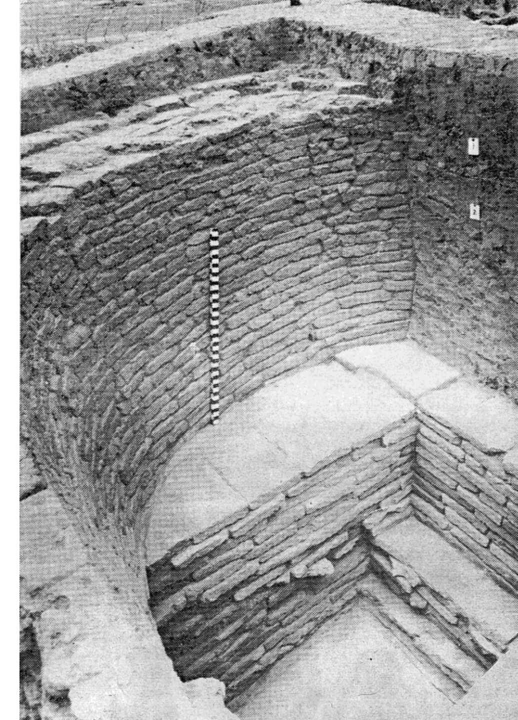
मिथिलाक ऐतिहासिक काल, सांस्कृतिक संपदा आ संपदा संरक्षणक उपाय

✍ तारानन्द मिश्र
पुरातत्वविद्

मिथिला राज्यक विभिन्न काल

ए.एल. वासम लिखैत छथि कि महाभारत युद्धक बाद राजनीतिक आ सांस्कृतिक शक्ति कुरु-पाचाल आ गंगा-यमुनाक दोआव, अन्तर्वेदीमे केन्द्रित भेलै (The Border that was India, 1963, 39-40). शतपथ-ब्राह्मणअनुसार अनेक वर्षक प्रयासपश्चात् राजर्षि विदेह माथव आर्यजातिकेँ गंडकी (माही, सदानीरा, नारायणी)के पूर्व में, अनार्यजातिकेँ परास्त कऽ लजेबामें सफल भेल छलाह। ठीक एहि तरहक विवरण महाजनक जातकसँ प्राप्त होइत अछि (भरतसिंह अपाध्याय, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, १९९१, २७९, मापितं सोमनस्सेव विदेहेन यसस्निा)। किछु वर्ष पूर्व मिथिलाक सिरहा जिलाक लहान गोविन्दपुर गामक उत्तर खपटेडांडां तथा सप्तरी जिलाक खोकसार आ झापा जिलाक चन्द्रगिरीसँ प्राचीन आर्यजातिसँ सम्बन्धित, ६००-३०० ई. पूर्वक पुरातात्विक माटिक वर्तनसब (आसमानि रंगक, कारि पालिस अथवा कारि रंगमे रंगल, (Painted Grey Ware, Northern Black-Polished Ware, आ Black-Slipped Ware) प्राप्त भेल अछि जाहिसँ शतपथ-ब्राह्मणक कथन प्रमाणित भेल अछि। एहि संदर्भमे बहुतो विद्वानवर्गके मालुम हेतैन कि आर्यसबक एहि क्षेत्रक विजय अभियान मात्र कोशीतक सीमित नहि रहलैक अपितु बंगाल आ आसामक अधिकांश भागक विजय करैत आर्यसव एहि सम्पूर्ण क्षेत्रकेँ बाहरक दुनियासँ सर्म्पक कायम केलैन, आ पूर्वि बंगालक ताम्रलिप्ती समुद्रक मार्ग द्वारा एशिया महादेशक जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि, थाइदेश आ इन्डोनेशियाक आसपास सम्पूर्ण पूर्वएशियामे (एखनक आशियान) देश सबहक सम्पर्क, व्यापार तथा ओहि देश सवमें आर्य संस्कृतिक बास्तुकला, मूर्तिकला, आ

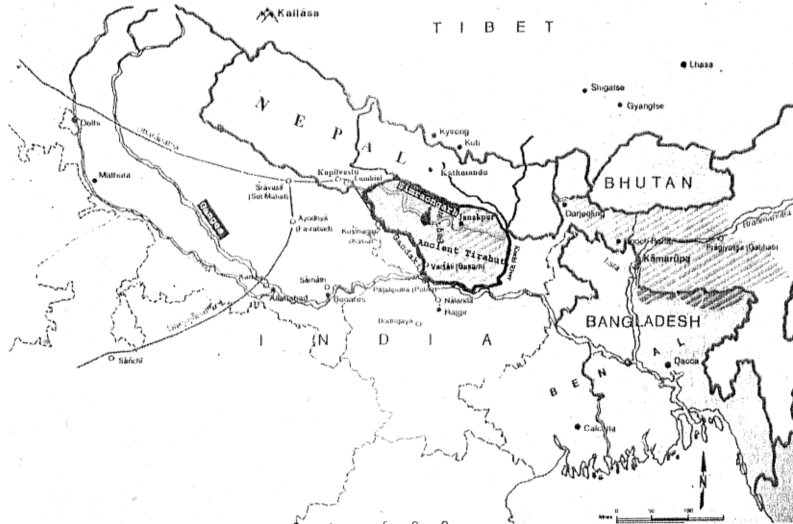
संस्कृत भाषाक, प्रचारक माध्यम समुद्रीनौकायात्रा द्वारा सम्भव भेल छलैक। ओहि क्षेत्रक जावा तथा सुमात्राक राजा बलदेवपुत्र[1], नालंदा बलेखपुत्र विश्वविद्यालयमे एकटा भिक्षुविहारक निर्माण करेने छलाह। पाटलिपुत्रक अशोकाराममे सम्राट अशोक द्वारा आयोजित तेसर बौद्ध सम्मेलनके बाद अशोकके बेटा महेन्द्र आ बेटी संघमित्रासंगे जे थेरबाद बौद्ध धर्मके प्रचार लेल एकटा दल लंका (सिंघलद्वीप) पहुँचल छलैक से बंगालक एहि ताम्रलिप्तिक समुद्रीघाट (Tamralipti Seaport) भके पानिजहाजद्वारा गेल छलैक। तहिना लगभग ७००-६०० ई. पूर्व उत्तरापथसँ जोडल ताम्रलिप्ति तक आर्यसंस्कृतिक प्रसार एहि मिथिला भूमि होइत भेल छलैक आ ओहि सबक अवशेष मिथिलाक अनेक ठाम, सिरहा जिलाक खपटे डाँडा तथा सप्तरीक एकागढ़ होइत ताम्रलिप्ति तक भेटल छैक। लेकिन बहुचर्चित विदेहक राजधानी मिथिलाक अवशेष एखन तक नहि भेटल अछि। एहि सम्बन्धमे प्राचीन मिथिलानगरके खोजैक, वैज्ञानिक प्रयासके अभाव मुख्य कारण थिक।



भेड़ियारी मंदिर के गर्भगृह

[1] धर्मस्वामीको जीवनी, संवा. तारा नन्द मिश्र, २००४, ३६ 'जावा तथा सुमात्राक राजा बलदेवपुत्र नालंदामे एकटा विहार निर्माण कराके ओकर भरणपोषणके वास्ते बंगालक राजा देवपालसँ पाँचटा गाम दान करौने छलखिन।' युवानच्वांग तथा इत्सिंगक नालंदामे अध्ययनक्रममे ओहिठाम अध्ययनलेल चीन, कोरिया, तिव्वत तथा तोखारासँ अनेक विद्यार्थी तथा विद्वान आयल छलाह (डा.अल्टेकर, प्राचीन भारतमे शिक्षा, बनारस, १९५१, १२३-१२४)।

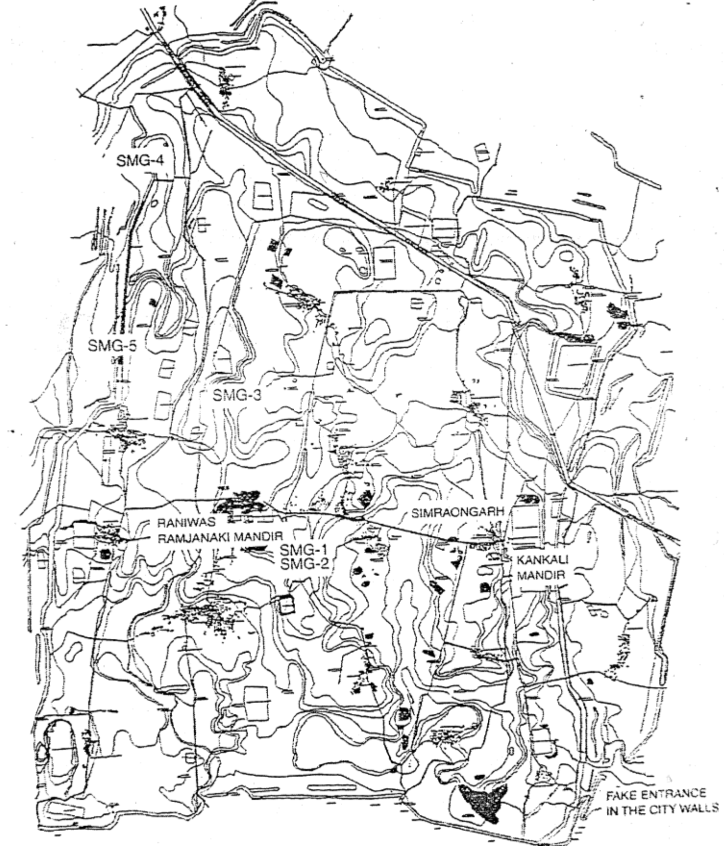
विदेह-मिथिलाक चर्चा मध्यदेश (मज्झिम प्रदेश)के प्रमुख जनपदक रूपमे ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद, बौद्धधर्मक त्रिपिटक, जातक-कथा, जैनग्रंथ कल्पसूत्र, थेरगाथा, महाभारत, रामायण आ पुराण सबमे भेटैत छैक। प्राचीन मिथिलामे जनकवंशीयराजा सबक समयमे आ राजर्षिगण आ ऋषिगणद्वारा बैदिक ग्रंथक रचना, पठन-पाठन संगे अनेक दर्शनशास्त्रक विकाश भेल छलैक। तहिना मध्यकालके मिथिला के, दुटा शक्ति आ धर्मसंगे सम्बन्धित (बौद्ध तथा मुश्लिम) विद्वान सबसँ संघर्ष करऽ पडलैक। सातम्-आठम् शताब्दिमें क्रमशः नालंदा, विक्रमशिला, ओदन्तपूरी आ उड्सािक जगदलविहार आदि विश्वविद्यालय में अध्यापनरत पैघ बौद्धविद्वानसमाज संगे मैथिल आ दक्षिण देशक विद्वान सव क्रमशः कुमारिलभट्ट, जगतगुरु शंकराचार्य, आचार्य उदयन, मण्डनमिश्र, शंकर मिश्र आदि अनेक विद्वान



कर्णाटकालीन तिरहुत राज्य

समाज वेद-वेदांग, हिन्दु धर्मदर्शन, आ धार्मिक- सांस्कृतिक विश्वासके समर्थन आ बौद्ध दर्शन आ सिद्धांतक खण्डन करैत बहुत संख्या में ग्रंथसभक रचना केने छथि। एहिकार्य में तत्कालीन मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्र आ वाराणसीमे प्राचीन शास्त्रक अध्ययन-अध्यापनके वास्ते सशक्त केन्द्र तथा विद्या आश्रम सभक स्थापना भेल छलैक। मुश्लिम शासकके एहि क्षेत्रमे दक्खल भेलासँ पूर्व आ पश्चात् मिथिला, बंगाल (वरेन्द्र), उडिसा, नेपाल

तथा काशी ई पाँचटा विद्याक केन्द्रसँ आर्य जातिक आ मिथिलाक सांस्कृतिक निधिके सुरक्षार्थ वेद-वेदांग हिन्दुधर्म शास्त्र, विज्ञान, साहित्य, चिकित्सा, वास्तुशास्त्र, कामशास्त्र, संगीत-वाद्य, दर्शन, तर्कशास्त्र, भजन, नाट्यशास्त्र तथा अन्य साहित्यक, आदिविद्याक हजारौं ग्रंथक रचना, भाष्यग्रंथक रचना तथा ग्रंथ प्रतिलिपि एहि क्षेत्रक आ नेपाल, बंगाल, उडिसा तथा आसामक अनेक पुस्तकालय में संरक्षित छैक।



सिम्रौनगढक पुरातात्त्विक नक्शा

मिथिला मात्र हिन्दुधर्म-दर्शनक स्थल नहि छलैक, परंतु एहिठाम जैन आ बौद्ध दर्शनोके प्रभाव अपन समय में अत्यधिक रहैक, जानकारी जैन आ बौद्ध ग्रंथक अध्ययन तथा लगभग दु दर्जन बौद्ध ग्रंथक हस्तलिखित ग्रंथ मैथिली लिपिमे लिखल नेपाल ग्रंथालयमे भेटैत छैक। मज्झिम निकायके

मखादेव सुत्तन्तमे राजा मखादेव (माथव)के धर्मराजा (धम्मिको धम्मराजा) क उपाधिसँ विभूषित कयल गेल छैक। तहिना अश्वघोषके बुद्धचरित (अध्या ९, श्लो। १९-२१) में जनकवंशीराजा सबके गृहस्थाश्रममे रहितो तथा धनसम्पति होइतौं धर्मशासन (न्यायपूर्वक शासन) द्वारा मोक्ष तथा सम्मान प्राप्त करबाक उल्लेख छैक (प्राप्तो गृहस्थैरपि मोक्षधर्म। विदेहराज जनकं धर्मविधौ विनितान्। वित्ताधिपत्यंच नृपश्रियंच ॥)। जनकवंशी राजासब वैदिक धर्म-दर्शनक मात्र ज्ञाता नहि छलाह, जैनधर्मक चौबीसटा सिद्धपुरुषमे नेमिनाथ (ओहि सिद्धपुरुषक क्रममें दुटा नेमिनाथक उल्लेख छैक) आ मल्लिनाथक नाम भेटैत छैक। महावीर जैन, जे चेतक (लिच्छवि गण प्रमुख)के भागिन आ कुण्डगामक महिषि चेल्नाक पुत्र छलाह, आ सम्राट अजात शत्रुके (साँचीस्तूपके द्वि.श.ई.पूर्वके लेख -'वेदेही पुत्तो'), वैदेहीपुत्रके रूपमें सम्बोधन प्राप्त छलैनि। ओ मिथिलामे अनेक वर्षावास आ जैन उत्सव करेने छलाह। एकटा जनकराजाके आचार्य धन्वंतरिक शिष्य आ शल्यशास्त्रक (Surgery) ग्रंथलेखकके रूपमें प्रस्तुत कएलगेल छैक। तहिना अनेक मिथिलाक राजकुमार तक्षशिला विश्वविद्यालयसँ अध्ययन कऽके आयल रहथि। बौद्ध त्रिपिटक में गंगाके मगध आ विदेहक सीमा नदीक रूपमें वर्णन भेटैत छैक। प्रायः मगधके ग्वाला सब अपन गाई-वस्तु गंगापार कऽके विदेह-मिथिलामे चराबैक हेतु एबाक वर्णन शाक्यमुनि अपने प्रवचनमे केने छथि। मखादेवसुत्त आ मखादेवजातक अनुसार विदेह माथव (मखादेव, जकरा श्री वडुआ महादेव कहने छथि) द्वारा अपन आम्रवन शाक्यमुनि बुद्धकें प्रदान केने छलथिन जाहि भीतर मखादेव विहार छलैक। एहि मखादेव विहारमे निवासक सिलसिला में. शाक्यमुनि अनेक व्यक्ति आ महिलाके बौद्धधर्म में प्रवेश करेने रहथिन। मिथिला नगरक बास्तुवर्णन, जतेक रामायण आ महाभारत में भेटैत छैक ओतेक सामग्रीसव बौद्ध ग्रंथसवसँ प्राप्त होइत अछि। तिब्बती विद्वान धर्मस्वामी पूर्वी मार्ग बनेपा-तिनपानी-पौभास होयत मध्यकालीन मिथिलाक राजधानी सिमरौनगढ होइत दूवेर (१२३४-३६ ई में) ओहि नगर दके वैशाली, वोधगया, राजगृह आ नालंदा गेल छलखिन। नालंदासँ १२३६ ई. में लौटैत समय ओ एक महिना विमार भऽ सिमरौनगढक एकटा बौद्ध परिवारमें रहल छलाह। हुनका तत्कालीन राजा रामसिंह अपन दरवार में निमंत्रण केने छलखिन आ खूव सम्मान केने छलखिन। काठमाण्डू तथा तिव्बत लौटैक समय ओ ओहिनगरमे अनेक नेपालीसँग भेट करैत हुनके सँगे आएल छलाह। हुनक वर्णनसँ तत्कालीन मिथिलाक अवस्था आ सिमरौनगढक नगरवास्तु,

राजप्रासाद आ तत्कालीन सामाजिक आर्थिक अवस्थाक चित्रण भेटैत अछि। (धर्मस्वामीको जीवनी, संपा. तारानन्द मिश्र, २००४, पृ. ६३-६५, पृ. ९५-९६ तथा तारानन्दमिश्र, विदेह मिथिला देश र यसको मध्यकालीन राजीधानी सिमरौनगढको इतिहास, सिमरौगढ विषयक संगोष्ठी, प्रज्ञा प्रतिष्ठान, वि.सं. २०५७, अहीक पृ. २२मे इटलिक पादरी कासियानो द्वारा प्रस्तुत काठमाडौं-बनेपा-बाँडागाउ-तिनपानी-पौभास होयत सिमरौनगढ-रक्सौल-बैशाली तथा पटना तक जोडैक तथा तिव्बत-नालंदा-बोधगया आबैकछोट मार्गक नक्सा।) एहि मार्गक विवरण गोपाल राज वंशावलीमे सेहो छैक।

मिथिलाक नाम विदेह, तिरहुत[२], तीरभुक्ति, आ प्राचीन उडिसाक ग्रंथमे तिहुति आ तिरहुती -(वंशीधर मोहन्ती, अनुवादक पंडित गोविन्द झाके उडिसा ओ मिथिलाक सम्बन्ध घर-बाहर, पटना, April 2010) (लामा तारानाथ आ धर्मस्वामीक तिरहुती, नदीतीर प्रदेश, गोपाल रजवंशावली में तीर प्रदेश आ तिरहुत), मिथिला, गौड[३], जनकपुरी आदिके उल्लेख प्राचीन

[२] तीरभुक्तिक प्रथम उल्लेख गुप्कालक बैशाली उत्खननसँ प्राप्त माइटक मुद्रा (Terracotta Seals)मे भेल छैक। ओकरबाद पालराजा सवहक, (क्रमशः नारायणपाल आ विग्रहपाल त्रितीयक, भागलपुर आ सहर्षा जिलाक बनगाम आ मण्डनमिश्रक गाम महिषीक मांझ गोरहोघाट भग्नावशेषसँ प्राप्त - 'तीरभुक्ति होद्रेविषय' उल्लेखभेल ताम्रपत्रलेख, कर्णाट मिथिलाकालक (१०९७-१३२६ ई.सं.) ग्रंथसबमे, (आशा सफू कुठिक ग्रंथसूचि, ई.सं. १९९१, रक्तकाली, काठमाडौं, पृ. १०९-१३७), चंद्रोदय नाटकटीकाके नेपाल संवत् ९८६ बैशाख कृष्ण २ रोज, प्रतिलिपी ग्रंथमे - 'इति तीरमुक्ति देशीय बुधवाल बैश्यः भानुकर तनय श्री रुचिकर विरचितायां श्री धारसिंह नृपते वाक्येन करोति टीकाँ -- प्रबोध चन्द्रोदय नाटकः ॥' एहितरहें, कृष्णामिश्रक १०५० ई.मे लिखल प्रतिलिपी उडीसामें आ दरभंगाक ओइनवारवंशी राजा धीरसिंहक प्रतिलिपी ग्रंथमे भेल छलैक, (उडीसा ओ मिथिलाक सम्बन्ध डा. वंशीधर मोहन्ती, अनु-श्री गोविन्द झा, घरबाहर, चेतना समिति, पटना, अप्रैल-जून, २०१०, पृ. ५)। तिरभुक्ति शब्द शाके सम्वत् १०७६ (ई.सं. ११५४)मे भक्तपुरके राजा आनन्ददेवक राज्यकाल आ मिथिलामे नान्यदेवक बेटा गंगादेवक शासन कालमे भक्तपुरक कायस्थ श्रीकुरके बालक गोपतिक लिखल रामायण ग्रंथ, (वेजलरद्वारा सम्पादित नेपालक अभिलेखालयक गंथसूचि, स्टुटगार्ट, जर्मनी, १९८९, पृ. १०४-१०५: पेटेकः मध्यकालीन नेपाल, रोम, १९८४, २०८-२०९)मे छैक ("श्रीमद् गांगेयदेव भुज्यमान तीरभुक्ति कल्याण विजयराज्ये नेपालदेशीय --- श्री आनन्दस्य पाटकावस्थित -- गोपतिना लेखिदम")। तिब्वतके नोर विहारमे राखल काशिका विवरण पंजिका ग्रंथ ल. सेन. सम्वत् ५६मे ई ग्रंथ तिरहुतके राजधानी सिमरौनगढमे लिखल छलैक। (पेटेक, नेपालक मधयकालक इतिहास, १९८४ २११, 'तिरभुक्तौ सामलिवन पाटके लिखितम')। दोसर अष्टसाहश्रिक प्रज्ञापारमिता ग्रंथ ल.सं. ६७मे राजा रामसिंहक शासनकालमे सिमरौनगढमे लिखत गेल छलैक (पेटेक, १९८४, २२१ श्रीमद् रामसिंहदेव भुज्यमाने तिरभुक्तौ सामलिवन पाटके लिखिता)। पाटन खिमतो टोलनिवासी श्री कुनु

ग्रंथ तथा गुप्त, पाल अभिलेख सवमे भेटैत छैक। बौद्ध ग्रंथ, त्रिपिटक आ जातक कथासब आ वृहद्विष्णुपुराण, मिथिला महात्म्यखण्ड अनुसार गंगा-हिमालयपहाड आ कोसी-गण्डकीक मध्य 'विदेह मिथिला-तीरभुक्ति देश छलैक। (''गंगाहिमवतोमध्ये नदी पंचदशान्तरे। तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परमपावनः॥ कौशिकींतु समारभ्य गण्डकीमधिगम्यवै। योजनानि चतुर्विशत् व्यायामः परिकीर्त्तितः॥ गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैयवतम वनम्। विस्तरः षोदशः प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन॥ मिथिलानाम नगरी नामस्ते लोकविश्रुत। पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याता जगतीत्रय॥ एहि सीमाक परिवर्तन पालकालमे गंगाके पूर्व-दक्षिण पार प्रदेश क्रमशः भागलपुर तथा विक्रमशिला क्षेत्रतक भेल छलैक आ पंद्रहम शताब्दिमे मिथिलाक ओइनवारवंशी राजा पृथ्वीसिंह, शक्तिसिंह आ वीरसिंह चम्पारणके अपन राजधानीसँ गोरखपुर नगरक्षेत्र तक मिथिलाक सीमाके विस्तार केने छलखिन। एहि वातक पुष्टि तत्कालीन राजाश्रयमे लिखल मैथिलग्रंथसँ होयत अछि। मिथिलाके स्वतन्त्र देशके रूपमे उदय दूवेर भेल छलैक, लगभग १००० ई. पूर्वमे जनकवंशी राजसंस्थाक रूपमे तथा मध्यकालमे (

शर्माक लिखल तीनटा ग्रंथ सब क्रमशः कीर्तिपताका (अनु. योगी नरहरिनाथ, जगदम्बा प्रकाशन, ललितपुर, २०१८), रुद्रशतक आ विष्णुशतक (लेखन समय ने.सं. ७७१-- ई.सं. १६५१, कीर्तिपताका समय ने.सं. ७७२) में लेखक अपनाके मिथलाक धनि आ प्राज्ञ कुलके उत्तराधिकारी कहने छथिन -इति श्री मिथिलाकुलोद्भव -- विद्यासंपत्तिवंशे संभव तनुश्री देवजुशर्मणः पुत्रेण रचितं विष्णुशतकं। कुनू शर्मणा विरचितं रुद्रशतकं --- श्री मैथिले येनैव विद्यासागर शारदेन्दु सदृश श्री युक्त कुनू शर्मण--')। विद्यापतिक कीर्तिपताका नाम स लेखक अपन वास्तु ग्रंथ कीर्तिपताकामे जेना विद्यापति शिवसिंहक गुणगान केने छथिन तहिना कुनूशर्मा (ठाकुर झा अथवा मिश्र) कीर्तिपताकामे आश्रयदाता पाटनके राजा श्रीनिवास मल्लक गुनगान केने छथि। कुनू शर्मा मिथिलाक प्राज्ञकुलक आ धनिवंशक छलाह ताहिसँ हुनकर वंशके विद्यापतिक वंशसे कोनो सम्बन्ध छैन अथवा नय एहिबारे अध्ययन-खोजक आवश्यकता अछि। एकटा चक्रधरदत्तक लिखक चिकित्साग्रंथ छैक जे हुनके वंशक एकटा सिमरौनगढक निवासी देवधरदत्त प्रतिलीपि केने छलखिन। ओहिगंथक प्रतिलिपि कयल अनेकहस्तकिखित ग्रंथ, आशा सफ्रू आ राष्ट्रिअभिलेखालयमे छैक-आशा सफू १९९१, पृ. ३७६, ३७९, स्वस्थ चिकित्साधिकार, इति श्री चक्रदत्त कृतौ संग्रहोयं श्री शाल्मलीवन निवास वनोति मुक्तः श्री देवधरदत्त इदं विलेख्य। सम्वत् ७३१, श्री शिवसिंहदेवस्य विजय राज्ये -- पशुपति स्थाने देवपट्टन नगरे नवहर तोरिके-- कृष्णदेववैद्य लिखितन्तु।

[३] स्कन्धपुराण में पंचगौडमे सारश्वती, कान्यकुब्ज, बंगाल, मैथिल तथा उडिसाके सामिल कएल गेल-छेक- ''सारस्वतः कान्यकुब्जो गौडो मैथिल उत्कलः। पंचगौड इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिनः॥'' सरिसोपाही गाममे शंकर मिश्रक लिखल राष्ट्रिय अभिलेखालय, नेपालके, एकटा पुस्तकमे मिथिलाके गौड देश नामसँ सम्बोधन भेल छैक।

१०९८-१४०० ई. संवत् तक)। कौटिल्य अर्थशास्त्र आ अश्वघोषक बुद्धचरित अनुसार जनकवंशी अंतिमराजा करालजनकके मिथिलानगरीक एक ब्राह्मण कन्याक अपहरण पश्चात् जनविद्रोहक परिणामस्वरूप [४] आ ओहि कालमे गणतन्त्र व्यवस्थाक पृष्ठपोषक शाक्यमुनि बुद्धके प्रभावसँ मिथिला गणराज्य घोषित भेल (तारानन्द मिश्र, बौद्ध तथा जैनसाहित्यमे मिथिला, सयपत्री, प्रज्ञाप्रतिष्ठान, कमलादी)। आ पाछा सम्राट अजातशत्रुके मगध साम्राज्यक निर्माण आ अपन अस्तित्व समाप्त होएके भयसँ मिथिला अष्टवृज्जिसंघ अथवा जैनग्रंथ कल्पसूत्रक अनुसार नवकुलिक वज्जिसंघक सदस्य बैन गेल। लेकिन अजातशत्रुक विशाल सेनाक सामने ई गणसंघ संगै नवमल्लिका संघ आदि छत्तिसटा राज्यपर हुनक विजय अभियान सफल भगेलनि आ मिथिला मगध साम्राज्यक एकटा प्रदेश बनि गेल।

मौर्यकालक (४००-३०० ई.पूर्वक) बस्तु, मिथिलामे चांदि आ तामक पंचमार्क मुद्रा (Silver Punch Marked Coins) आ कारिरंगक पालिसदार खपटा (NBP-Black Slipped Ware) भेटल छैक। एहि समयके अभिलेख, शिल्पकला तथा वास्तु (स्तूप, मंदिर आ मूर्ति) एखनतक मिथिलामे नहि भेटल छैक। भेडियारी-जोगवनी क्षेत्रके हमर उत्खननद्वारा दोसर-पहिल श.ई. पूर्वक चांदीक पंचमार्क मुद्रा, पाकल ईटक बनल कुकुटअंडसदृश गर्भगृह (Elliptical Sanctum) तथा गजपृष्ठाकार मन्दिर भेटल अछि। गजपृष्ठाकार छत बनगाउके तांत्रिक कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईक भजनमण्डपमे एखनोतक देख सकैत छी। अण्डाकार सभाक अवशेष राजगृहसँ ६०० ई.सं. पूर्वक जीवकाराम आ श्रावस्तिक अनाथ पिंडकाराम (तारानन्द मिश्र, प्राचीन चिकित्साशास्त्र, प्राचीन नेपाल, अंक १६४, जून २००७, पृ.१८, जीवका रामक स्थलवास्तु नक्सा) तथा कौशाम्बिक घोषितारामसँ (२०० ई.सं.मे निर्मित) प्राप्त भेल छैक। गोरहोघाट आ पूर्णिया सँ, प्राप्त चांदिक पंचमार्क मुद्रा, तथा दरभंगाके सुपौल-हाटिगाछीसँ पाप्त तामक पंचमार्क मुद्रा, मौर्य अथवा मित्र-शुंगकालक भ९ सकैत अछि। कुषाणकालक पाकल माटिक वर्तन (Terracotta Pot) में राखल मुद्रासव (Copper Coin Hoard), रौतहटक चन्द्रनिगाहपुरसँ दूकोस दक्षिण-पश्चिम एकटा थारू बस्ती रंगपुरसँ भेटल छैक।[५]

[४] अश्वघोष लिखित बुद्धचरित, (अध्याय-४, श्लोक ८०, 'करालजनकस्यश्चैव हृत्वा ब्राह्मण कन्य काम। अवाप भ्रंशमप्येवं॥'

[५] T.N. Mishra, Kushan Coin Hoard from Rangapur, Ancient Nepal No. 157, Dept. of Archeology, Nepal.

जनकपुर क्षेत्रके महदैयागाम तथा चितौनसँ सेहो कृषाणमुद्रा प्राप्त भेल अछि। मिथिलाक सप्तरीक किछुस्थानसँ तथा झापा जिलाक कीचकबध क्षेत्रसँ कुषाणकालक अवशेष प्राप्त भेल अछि। बैशालीसँ मिथिला क्षेत्रक शासन संचालनक वृहत् व्यवस्था आर मजबूती, गुप्तशासन कालमे भेल छलैक जखन वैशाली सहित, मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्रके नव नामकरण 'तीरभुक्ति' राखल गेल छलैक (गंगा-कोसी-गंडकतीर प्रांत, (Tira State or Province of Gupta Impire)। भुक्ति शब्दक अर्थ प्रांत होइत छैक आ एक प्रांतमे अनेक 'विषय' (जिला) होइत छलैक (लिच्छवि, गुप्त आ पालराजा सबक शिलालेखमे भुक्ति आ विषय शब्दक प्रयोग भेटैत छैक)। पाछा तिरभुक्ति शब्दसँ तिरहुती, तिरहुत शब्दसबक विकास भेल छलैक। गुप्त शासनकालकेँ उदय मगधके गुप्तवंशी प्रशासक आ बैशालिक लिच्छविवंशक गठबन्धन आ चन्द्रगुप्त प्रथम-कुमार देवीक विवाहके परिणाम थिक। समुद्रगुप्तके शासनकालतक बैशालीसँ लिच्छवि शासकके प्रवेश नेपालमण्डल (उपत्यका)मे भेल छल। ओकर बाद मिथिलापर हर्षवद्धनके मजबूत पकड कायम भेल छलैक। हर्षवद्धनके मृत्यु पश्चात् मिथिलाक शासकद्वारा चिनिया राजदूत वांग्त्से केप्रति दुर्व्यवहारक फलस्वरूप तिब्वती आ नेपालक नरेन्द्र देवक लिच्छवीसेना हुनका पकैड चीनमे वंदी बनाके लगेलनि। मिथिलाके किछु वर्ष चीन-तिब्वतके अधीनमे रह पडलैकाक। पाल राजा सबहक सीधा शासन प्रायः सम्पूर्ण मिथिलापर कायम छलैक लेखिन कोशीसँ पूर्वमे हुनक बंशके मूर्तिकला आ वास्तुकलाक बहुते अवशेष बनगाम, महिषी, सिंहेश्वरस्थान, मोरंग तथा धरानक पिंडेश्वर स्थानसँ भेटैत छैक। प्रायः ओहि प्रदेशक मूर्तिसव बंगालक कारीपाथर आ मुंगेरके (State stone) पाथरसँ निर्मित (Rajrahel hills) पाल काल में बनावल गेल अछि। मात्र बनगाम स दू मील पश्चिम कन्दाहाके अभिलेखसहित सूर्य मूर्ति ओइनवारवंशी राजा नरसिंहदेवक निर्माण थिक। एखनका कोशीसँ पूर्व प्रदेशमे पालराजाक प्रत्यक्ष शासनके कारण एहि प्रदेशमे एकोटा कर्णाटवंशी मूर्ति आ स्थापत्यकलाक अवशेष नहि भेटैत छैक। डा. उपेन्द्र ठाकुरके ग्रंथ तथा मिथिलाक जनश्रुतिमे भेडियारी, झापा, सहर्षा तथा मुजफ्फरपुर क्षेत्रमे राजा विराटक दरबार तथा नगर छलैक। लेकिन राजा विराटक आ मत्स्यदेशक राजधानी दिल्लीसँ पश्चिम, राजस्थानमे जयपुरक नजदीक भेटल छैक। जकर उल्लेख मे-जनरल कनिंघम, वी.सी.ल. (Geog. of Early Budhism, 1979, 19) आदिके ग्रंथ सबमे छैक। विराटसँ अशोकके स्तंभलेख आ समकालीन एकटा

लंबाकार मुखमंडप सहित गोल, अष्टभुजाकाठक स्तम्भ आ पाकल ईटक बनावल चैत्यगृह भेटल छैक। विराट पदवी किछु नेपालके खस राजासबक अभिलेख सबमे भेटैत छैक। हिमालय पर्वत आ अग्निज्वालास्थलके राजासब विराट पदवीसँ विभूषित कएल गेल छलाह। ऐतरेय ब्राह्मण (अध्या. ८ श्लो.१४, उपेन्द्र ठाकुर, मिथिलाक इतिहास, दरभंगा १९५६, पृ.६७)मे लिखल छैक - 'उदीच्या दिशियेके च परण हिमवंत जनपदा, उत्तरकुरु, उत्तरमद्रा इति वैराज्ययैव ते अभिषिच्यन्ते विराडित्येनान भिषित्तानाचक्षं।' पश्चिम नेपालक खसराजा अशोकचल्लके गोपेश्वर त्रिशूल लेखमे हुनका 'वैराटकुलतिलक', आदित्यमल्लक शकसंवत् १२४३ (ई.सं. १३२१)के दैलेख ताम्रपत्रमे - 'विराट पीठधिष्ठित देवता परायण' तथा शक सं. १३२२के वलिराजके मुगु ताम्रलेखमे हुनका - 'वैराटपुरनृपते' कहल गेल छैक *(तारानन्द मिश्र, सुर्खेत क्षेत्रको इतिहास, प्राचीन नेपाल सं. १५७, पृ. ४२, पुरातत्व विभाग)*।

एकरबाद कर्णाटवंशी राजाक समयमे नान्यदेव (१०९७ ई. संवत्)सँ अंतिमराजा हरिसिंह देवक[६] समय १३२६ ई. संवत् तक मिथिलाक सर्वोत्तम

[६] नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे मैथिली ग्रंथक संग्रह जेका, आशा सफु कुठी (ग्रंथसूचि, १९९१ ई.सं.,रक्तकाली, काठमाडौं १५४-५५)मे अनेको मैथिल लेखक आ मैथिल ग्रंथ सबहक संग्रह छैक। जाहिमे उमापति, कृष्णदास, विद्यापतिके बहुतराश गीत आ पदावलि छैक। एहिठामक ग्रंथ 'त्यो मत्यो' (ज्योतिष ग्रंथ)मे राजा हरिसिंहदेव ने.सं. ४४३ पौष शुक्ल नौमि शनिबारके दिन सिमरौनगढ त्यागकें भक्तपुर प्रवेश करबाक उल्लेख अछि (संवत् ४४३ पौष शुल्कया नओमि शनिश्चर वाल थ्वकुन्हु श्री २ हरिसिंहदेव सिमांगरन (सिमलवन + गढ = सिमरौनगढ) षपं दुछाँ विज्याक दिन जुरो)। एहि हस्तलिखित ग्रंथालय मे-श्रीपतिक रचना-रत्नमाला टीका, कुनू शर्माक क्रमशः, रुद्रशतक आ विष्णुशतक, (इति श्री मिथिला कुलोद्भव श्री कुनूशर्मेण विरचितं विष्णुशतकं। विद्यासपत्ति वंशे संभवतनु श्रीदेवुजु शर्म्मणः पुत्रेण रचितं --), रामदत्तक-विवाहपद्धति आ उपनयनपद्धति (इति महामहत्तक सामान्ताधिपति महाराजधिराज श्री गणेश्वरात्मज महासामन्ताधिपति श्री रामदत्त विरचित वाजसनेयीनां विवाहदि पद्धतिः। सं. ८८८ चैत्रवदि १०, (ई.सं. १७६८) मे लिखल गेल ग्रंथ छैक। एकर अलावा एहिठाम पक्षधरक-संगीतकल्पतरु (संगीत आ नाट्याग निर्देशग्रंथ), जगज्योतिमल्ल आ वंशमणिझाके संगीतचन्द्र, उडिसाक पुरी जिलाक केन्दुलिगामक १२ हम शताब्दिमे जयदेवक लिखल गीत-गोविन्दके अनेक प्रति, जगन्नाथमिश्रके-सभातरंग, मैथिली-संस्कृतमे लिखल-पशुचिकित्सा, चण्डेश्वरक स्वप्नफल (श्री चण्डेश्वर विरचिते कृत्यचिन्तामणौ स्वप्नफलं), जगन्नाथदासक-रामायण-(ने.सं. ७०९), चण्डेश्वरक-कृत्यचिंतामणी, राजा रामसिंहक सांसदी, श्रीकरआचार्यके बेटा श्रीनाथक लिखल-कृत्यतत्वार्णव (श्रीकराचार्य पुत्रेण श्रीमत् श्रीनाथ शर्मण कृत्य..) आ कामरत्न (मंत्र ग्रंथ), शंकरमिश्र के-ताराहस्य, रघुनाथकवि आ राजा श्रीनिवासमल्लक 'दश अवतार नाटक', भास्कर मल्ल आ श्यामानंद लिखित्-

सांस्कृतिक, आर्थिक आ सामाजिक उत्थान भेल छल। मूर्तिकला आ स्थापत्यकलामे एहि समय कर्णाटकीय सांस्कृतिक प्रभाव, संगीत-वाद्यवादन, पंजिप्रथा, गणेशमूर्ति पूजा आ मूर्तिक बाहुलता, मन्दिरमे कोणआमलकके निर्माण आदि भेटैत छैक। कर्णाटकी-मिथिला राजासब मिथिलाक भूमिपुत्र जेका एहि क्षेत्रक विकास आ उत्थानमे अपनाके समर्पित केने छलाह। ओइनवारवंशी राजा आ पाछाक दरभंगा राजाक शासन काल मे, सेहो एहि क्षेत्रमे अध्ययन-अध्यापन आ विविध विषयके ग्रंथ रचनाक कार्य भेल छलैक। मुश्लिम शासक आ प्रांतीय प्रशासक सभक लडाई-झगडा आदि कारणे आ एहिठामक करके अधिकांश अंश दिल्ली लजाएक (आर्थिक शोषण) कारणक अलावा मिथिला क्षेत्रके दरभंगा, मोरंग, सिमरौनगढ आ मोतिहारी आदि क्षेत्रमे शासनके स्थापन तथा विभाजनके कारण मिथिलाक अवनतिक प्रारम्भ एहि कालमे भेल छल।

मिथिलाक भौतिक-सांस्कृतिक सम्पदा

मिथिलाक मूर्त्त (भौतिक) सांस्कृतिक सम्पदा तीन किसिमके छैक :-

क) पुरातात्विक-ऐतिहासिक स्थल तथा वास्तुस्मारक (Ancient Archaeological Sites and Architectural Heritage)

ख) पुरातात्विक-सांस्कृतिक-वस्तुसव आ मूर्तिकला (Archaeological–Cultural Antiquities and Art Objects)

ग) हस्तलिखित ग्रंथ

पुरातात्विक-ऐतिहासिकस्थल

सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र (नेपाल आ भारतीय दुनु देशक क्षेत्र)मे संगठित रूप आ वैज्ञानिक तरिकासँ पुरातात्विक अन्वेषण कार्य नहि भेल छैक।

गोपीचन्द गोरख विजयनाटक, राजा रणजितमल्ल लिखित गोपिचन्द्र नाटक, जगज्जयमल्ल लिखित (वोलय मल्ल जगज्जय) कंसबधनाटक आदि छैक। तहिना नेपाल संवत् ८०१ (ई.सं. १६८१)मे भक्तपुरके राजा भुपतीन्द्र तथा श्रीधरकविके लिखल रामायण नाटकमे राजाक पूर्वज सवहक निम्न अनुसार उल्लेख छैक- 'आदित्यमल्ल, जयराज, जयानन्द, रुद्रमल्ल, नृपईश नान्यदेव, नृप गंगादेव, भूप नरसिंह, महीश रामसिंह भवसिंह, सिंहदेव (शक्तिसिंहक, बदला गलत नाम) नेपार कयल राज्ये हरिसिंहदेव॥' लेकिन गोपाल राज वंशावली सिमरौनगढसँ पलायन कें सिलसिलामे काठमाडौं पहुचैके पहिनै हुनकर मृत्यु दोलखालग तीनपाटनमे हेवाक तथ्य प्रकाशित करैत अछि। तथा हुनक रानी देवलदेवी आबेटा कुँवर जगतसिंहदेव आ पश्चात् नातिन राजल्लदेवीके पति जयस्थितिमल्लसँ पाछाक मल्लराज्य स्थापनाक सूचना दैतछैक।

यद्यपि एखन मिथिलाकमे (भारतीय क्षेत्रमे) चारिटा विश्वविद्यालय छैक आ एकटा मिथिलाक शोध संस्थान, विहार सरकार द्वारा स्थापना भेल छैक, लेकिन पुरातात्विक अनुसन्धानके कार्यक वैज्ञानिक ढंगसँ विकास नहि भेल छैक। एकर अलावा विहारक प्रत्येक विश्वविद्यालयमे प्रत्येक वर्ष लाखौं रुपया विश्व विद्यालयक ग्रान्ट कमिशनसँ भेटैत छैक। तकर समुचित उपयोग नहि भरहल छैक। संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा द्वारा किछु नीक ग्रंथसभक सम्पादन आ प्रकाशन भेल अछि लेकिन साधन आ श्रोतके तुलनामे नगण्य कार्य भरहल छैक।

सम्पूर्ण प्राचीन मिथिला क्षेत्रसँ जे पुरातात्विक-ऐतिहासिक स्थलक प्राप्ति भेल छैक तिनका निम्नानुसार विभाजन कएल जा सकैत अछि :-

(क) प्रस्तरकाल तथा धातुमिश्रित प्रस्तरकाल (Prehistoric and Chalcolithic Periods, 1,50,000/- 800 ई.पूर्व)।

(ख) आसमानीरंगक, कारीलेप लागल तथा कारी, चांदि, सोन, बैगनी, हरियर आदि रंगक पालिसदार वर्तन, जनकवंशी तथा मौर्य राज्यकाल (Greyware, Black-Slippedware, NBP and Sites Associated with Janak as well as Mauryan Kingdom), ८००-३०० ई.पूर्वक स्थल।

(ग) शुंग-कुषाणकाल-२०० ई.पूर्व-२०० ई.सं. कालक क्षेत्र (Sunga-Kushan Period Sites)।

(घ) गुप्त, पाछाक गुप्तकाल, हर्षवर्द्धन, शशाङ्क तथा पाल राज्यकाल (Gupta, Harsha Vardhand, Sashanka and Pala-period, 300-12th century A.D.),

(ङ) कर्णाट-ओइनवार वंशी शासन काल (Karnat and Oinwara 11th-14th A.D.)

(च) खण्डबलाककाल, मुस्लिम-अँगरेज शासनकाल (Khandabala, Muslim-British Emperial Rule 13th- 20th Century A.D.)

मिथिलाक प्राचीनतम पुरातात्विक स्थल, जतसँ नवपाषानकालक हतियार अथवा कारीलाल मृण्मय वर्तनक टुक्रासब (Red and Black Pottery) भेटल छैक से थीक, नेपालक खपटेडाँडा (लहानलग), सप्तरी जिलाक महेशपुर गामके आद्राडिगी, भारतके बैशाली, मधुवनिलगक एकटास्थल, हाजिपुरलगक पाँपडस्थान, रामचौरा तथा पुनहराघाट। एखनतक मिथिलाक सिमरौनगढ, भेडियारी, कीचकवध (झापा), खोकसार (सप्तरी), सीतामढी, मधुवनी तथा हाजिपुरलगक रामचौरा तथा पुनहराघाटमे पुरातात्विक उत्खनन भेल छैक।

नेपाल क्षेत्रक मिथिला सँ एखनतक निम्न महत्वपूर्ण स्थलसबहक खोज-अन्वेषण भेल छैक :-

१) चितवन :-

प्राचीन उत्तरापथ आ नेपालक रास्तामे ई चितवन उपत्यकामे प्राचीनकालक तथा पाछाक अत्यन्त महत्वपूर्ण भग्नावशेष ठीक गंडकके पूर्वके वाल्मिकिनगर भेटल छैक। एहिठाम खासक ऽ गंडक बांध क्षेत्र पूर्व-उत्तर ४-५ किलोमीटर भीतर, लगभग ३०-३५ टा कर्णाटक-मिथिला-कालके-सूर्य, विष्णु,-लक्ष्मी-सरस्वती सहित विष्णु, दुनु हातमे पद्म सहित खडा विष्णुमूर्ति, सप्तरथपर सवार सारथी सहित विष्णु मूर्त्ति, ब्रहमा, शिव, शिव-पार्वती, गणपति आदिक मूर्ति कारी पत्थर (Black–Schist–Stone)s] तथा एकाधटा बालु-पत्थरक (Sand Stone) बनल एकटा संग्रहालयमे छैक। ओहि जंगलमे एखनोतक प्राचीन मन्दिरक ईटक जग (Brick Temple Base) छैक। एहि क्षेत्रके हिमवत्खण्ड (पृ. १४८-४९)मे चितपावन कहल गेकल छैक। एकटा वंशावलीमे एकर उल्लेख निम्न प्रकारक छैक- 'अस्ति गण्डकी तीरे चित्रवन नाम नगरम्'। चितवन आरक्षण क्षेत्र भीतर कुषाणकाकालक स्थल भेटल छैक। अहिठामसँ Grey ware तथा NBP कालक स्थल सब भेटैक अत्यधिक सम्भावना छैक।

२) सिमरौनगढ :-

कर्णाट-मिथिला कालके सामंत 'सेनापति नान्यदेवद्वारा मध्यकाल (१०९७ ई. संवत्)मे स्थापना भेल ई विशाल राजधानीक अवशेष ७.५ उत्तर दक्षिण आ ४.५ किलोमिटर पूर्व पश्चिम क्षेत्रमे भेटल छैक। एहिठाम कंकालीमठ आ पोखरि, हरिहरपुर गाम, अमृतगंज, हनुमानगंज, कोवाली आदि महत्वपूर्ण गाम छैक। एहि भीतरमे अनेक गाम, तालाव, कुआं (इनार) आ मध्य भागमे एकटा ऊँचभूभाग में प्रधानमन्त्री जंगवहादुरके स्मृतिमे वि.सं. १९३४ मे जगतजंगद्वारा निर्माण भेल मन्दिर आ चौघरा धर्मशाला छैक। सिमरौनगढ क्षेत्रके विभिन्न गाममे प्राचीन विष्णु, विष्णु-लक्ष्मी, गणेश, सूर्य, नरसिंह, वराह, दुर्गा, काली, तथा तोरणद्वारक अवशेष, नृत्य-वाद्य बजवैत टोली आदि सहित लगभग २०० मूर्ति छैक। अनेक मूर्तिक पाद्पीठमे मिथिलाक्षरमे अभिलेखो छैक। ओहिठाम एकटा खेतसँ अष्टधातुक हाथीक मूर्ति भेटल छैक। एहिठामसँ किछु कौरी, खपटा सब, प्राचीन कारि भेल चाउर आ माइटकमूर्ति, पाथरक माला आदि भेटल छैक। एहिठाम

इटली आ पुरातत्वविभागक टोली दूवेर परीक्षण उत्खनन केने छैक आ ओकर रिपोर्ट प्रकाशित भेल छैक। धर्मस्वामिक अनुसार एहिठामक नगरसँ राजप्रासाद अलग ठाममे छलैक। ई नगर आकारमे चतुष्कोण छलैक, जकर चारुदिश निचा काठ-बांसक घेराभीतर माइटक दिवाल छलैक जकरा उपरसँ मुगलकालीन लखौरी ईटःसँ सुरक्षित राखल गेल छलैक। दिवालक जगह-जगह कोट (Bastion) आ द्वार छलैक। धर्मस्वामीक अनुसार राजदरवरक पूर्व, पश्चिम, दक्षिणमे राजदरवरक एगारहटा तोरण द्वार छलैक। सत्रहम शताब्दिमे सिमरौनगढ भक अबएवला इटालियन पादरी सब दरवारके चारु तर्फ चक्रब्यूहाकार प्राकारक वर्णन केने छथि। एहि प्राचीन नगरक पुनः उत्खनन आ प्राप्त वस्तुक संरक्षण क, एकटा संग्रहालयके निर्माण तथा एकटा अफिस निर्माण कके पर्यटन प्रवर्द्धन करबाक आवश्यकता छैक।

३) मूर्तिया :-

सर्लाही जिलाके मूर्तियामे कर्णाट-कालीन मन्दिर-मूर्ति सब तथा वास्तु अवशेष छैक। एहिठाम दू-तीनटा भग्नावशेष आ पोखरि सब भेटल छैक। मुख्य मन्दिरके गर्भगृह भीतर गुफा छैक जांहिमे संभवतः राजा विपत्तिकालमे शरण लैत छलखिन। ई जगहसँ ३ कोस पश्चिम वागमती नदी छैक।

४) जनकपुर क्षेत्र :-

बौद्धग्रंथ दीर्घनिकायके महागोविंद सूत्रमें विदेहके राजधानी मिथिला कहल गेल छैक, लेकिन मध्यकालक हस्तलिखित ग्रंथसबमे तिरहुत, जनकपुर आ मिथिला आदि नामसँ सम्बोधन भेटैत छैक। जनकपुर परिक्रमा क्षेत्रसँ एखन तक एकटा कर्णाट-मिथिला कालक, कारि सिष्टप्रस्तरक सद्योजात मूर्ति आ किछु विष्णुक मुर्तिके छोडि, प्राचीन मूर्ति, मुद्रा, लेख आदि किछु नहि भेटल अछि। एहि ठामक विस्तृत पुरातात्विक सर्वेक्षण करबाक अत्यंत आवश्यक अछि। विस्तृत पुरातात्विक सर्वेक्षणके पश्चात महत्वपूर्ण प्राचीन आर्यकालक (Painted Grey Ware, NBP, Black Slipped Ware) वस्तु तथा, प्राचीन नगर वास्तु प्राप्त करवाक हेतु जनकपुर क्षेत्रमे अविलम्ब अन्वेषण-उत्खननक बृहत योजना बनाकेऽ उक्त कार्य करबाक चाही। बृहत्तर जनकपुर योजनाके प्रमुख पदमे पैघ इतिहासकार अथवा पुरातत्वविद्के वहाली कके, प्राचीन जनकपुर नगर अवशेषके अन्वेषण-उत्खनन-संरक्षण, संग्रहालयके स्थापना, आ नया जनकपुर क्षेत्रमे नगर योजना बनाके विकासक आवश्यकता छैक। (जनकलाल शर्मा, चितवनदेखि जनकपुर सम्मका पुरातात्विक स्थल, प्राचीन नेपाल अंक २, पृ. १-१०, देवी

प्रसाद लम्साल, जंनकपुर अञ्चलको पुरातात्विक सर्वेक्षण, प्राचीन नेपाल, अंक २६, पृ. २३-३५) ।

५) सिरहा जिलाक पुरातात्विक स्थल -

सिरहा जिलामे सेहो ठीकसँ पुरातात्विक अन्वेषण नहि भेल छैक, लेकिन किछु कार्यक शुरुआत भेल छैक ।

(क) खपटे डाँडा :- एखनतक प्राप्त सूचनाक आधारपर लहानसँ ५-६ मील उत्तर खपटे डांडामे दूतरहके पुरातात्विक स्थल भेटल छैक । एहिठामक किछु भागमें नवप्रस्तकालक अवशेष आ उपरमे आर्यजातिक पुरातात्विक अवशेष (P.G. Ware, NBP, Black Slipped Ware) भेटल छैक । एहि अवशेषके कोदारि आदिसँ कोरिड़के स्थानीय वासी, प्राप्त महत्वपूर्ण सामग्रीके साले-साल बेच रहल छैक । प्राविधिक दुष्टिसँ ई मिथिलाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल थिक । एहि स्थलके नक्सा (Coutour Map) हमर रेखदेखमे पुरातत्व विभाग बनौने अछि । एहि स्थलक संरक्षण, उत्खनन क्ऽके स्थानीय निकायके जिम्मा लगावैक, आवश्यक अछि ।

(ख) **बनौलीगढ -** द्रोणवार राजा पुरन्दरसिंह आ शिवसिंहक रानी लखिमादेवीक लहानलग आवास स्थलके रूपमे स्थानीय जनता हमरा सभके पश्चिय कराबैक बाद, सूक्ष्म रूपसँ अध्ययनक पश्चात् एहिठाम खावा (परिखा), प्राकार आ विशेष आवास गृहक अवशेष भेटल छैक । ई. स्थल विद्यापति-लखिमा देवी आ पुरन्दर सिंहक आवास स्थल होएक अनुमान छैक । एकर उत्खनन करब आ प्राप्त वास्तुक संरक्षणके आवश्यकता अछि । सिरहानगरसँ ३-४ माइल पश्चिम कमलाक कातमे इटहरी गाममे एकटा बडका प्राचीन वस्तीके अवशेष सँगै पाकल ईटक गुप्तकालक शिव मन्दिरक अवशेष हमर अन्वेषणसँ प्राप्त भेल छल । सिरहामे अनेको स्थल सब छैक जकर अन्वेषण अध्ययन आ उत्खनन करव जरुरी अछि । एहि जिलामे एखनोतक कर्णाटकी क्षत्री आ दनुवार वंशी क्षत्रीय सब छथि । लहानलग धनगढी तथा अन्य पुरातात्विक स्थल छैक ।

६) सप्तरी जिलाक पुरातात्विक स्थल -

सप्तरी जिलाके खोकसर तथा धनगढीमे पुरातत्व विभागक उत्खनन तथा अन्वेषण पश्चात् प्राचीन आर्यकालक बर्तनसब (NBP, तथा Black Slipped Ware, Grey Ware) प्राप्त भेल छैक । खोकसार एकागढमे गुप्तकालके एकटा शिखराकार मंदिर भेटल छैक । एकर अलावा महेशपुर

गा.वि.स.के आद्राडिगीसँ नव प्रस्तरकालक श्मशान स्थल (Neolithic Burial Site) भेटल छैक । मध्यकालीन स्थल रूपनगरलग पर्वतपर एकटा राजप्रासाद आ दुर्ग छैक । ओहि स्थलसँ कुषाणकालके खपटा आ अन्यवस्तु भेटल छैक । सप्तरीक रूपनगरमे कर्णाट-मिथिला कालक अनेक मूर्ति तथा मन्दिरक अवशेष सब, क्रमशः गणेश, दुर्गा तथा संगेके एकटा चौर, तेलक मीलमे नयाँ मन्दिर बनाके राखल लक्ष्मी-सरस्वती सहित सुन्दर विष्णु मूर्ति छैक । एहि जिलाक सखडा भगवती मन्दिर राजा शक्तिसिंह, (रामसिंहक बेटा आ हरिसिंहक पिता), (शक्रसिंह) द्वारा निर्माण भेल छलैक । शक्तिसिंहक स्थापित नगर सकरी थिक । मिथिलाक सकरीसँ ओइनवार वंशक अभिलेख प्राप्त भेल छैक । राजा शिवसिंहक कालमे सप्तरीक पूर्वमे द्रोणवार राजा अर्जुनसिंह छलैथ आ पश्चिमी भागमे हुनके भाय द्रोणवार राजा पुरन्दरसिंह छलाह । अर्जुनसिंह बौद्ध धर्मक अनुयायी तथा पुरन्दरसिंह हिन्दू धर्म मानैत छलाह । दुनु भायमे झगडा छलनि आ तत्पश्चात युद्ध भेलापर पुरन्दरसिंह दरभंगाक राजा शिवसिंहक मद्दतसँ अर्जुनसिंहके मारि हुनक राज्य अपनामे मिला लेलखिन । एहि कारण विद्यापति आ लखिमा देवी पुरन्दसिंहके आश्रयमे आयल छलखिन । विद्यापति अपन ग्रंथ लिखनावलिक रचना पुरन्दरसिंहक सप्तरी राज्याश्रयमे केने छलाह । लिखनावलीमे एहिठामकेँ सप्तरी जिलाक नामसँ उल्लेख भेटैत छैक । सप्तरीमे गुरु ग्रंथ आ शिखधर्मक स्थल सेहो छैक । एहि जिलाक नीकजकाँ प्रशिक्षित पुरातत्वविद् द्वारा अन्वेषण आ प्राप्त सामग्रीक अध्ययन तथा संरक्षण भेनाए जरुरी अछि ।

७) बराहक्षेत्र :-

कोका-कोशीसंगमस्थल, पर्वतके ऊपर वराहक्षेत्र छैक जे अनेक पुराणमे वर्णित प्राचीन कालसँ एकटा पैघ हिन्दू तीर्थस्थल थिक । बंगालके दामोदरपुरसँ वुद्धगुप्तकालके (छठम् श.ई. संवत्के) दूटा ताम्रलेखमे बराहशिखर स्वामी, कोकावराह तथा एकटा शिवलिंगके बास्ते ॠभुपालद्वारा मन्दिर निर्माण आ खर्चक बास्ते जमीन दानक वर्णन छैक । विष्णुक वराह अवतारक एहिठाम कारी पत्थर (Schist Stone)s] गुप्तकालीन विशाल वराहमूर्ति छैक । एकर अतिरिक्त अनेक गुप्तकालमे निर्माण भेल छोट-छोट शिखराकार मन्दिर (Miniature Sikhara Shrines) छैक (V. Upadhyaya, Indian Inscriptions, Part–II) .

८) धनपालगढी-मानिकगढ-हिन्दुपतिगढ :-

मोरंगक एकटा स्थान छैक धनपालगढी जकर पुनः अन्वेषण-अध्ययन करबाक आवश्यक छैक । तहिना सेनकालक मानिकगढ तथा हिन्दुपतिगढ

सब सेनराजसँ-संबंधित छैक। एहि स्थलसबहक अध्ययनक व्यवस्था हेबाक चाही।

९) इनरवा :-

वराहक्षेत्रसँ पूर्व आ धरानसँ दक्षिण-पश्चिममे इनरवा नामक नगर छैक। लगभग-१५/२० वर्ष पूर्व इनरवाक पश्चिम-उत्तर नरसिंहतप्पाक क्षेत्रमे (ताम्रपत्रमे उल्लेखित दोङ्गा ग्राममैं) एकटा विशाल गुप्तकलाशैलीमे निर्मित पाँचम-छठम ई. संवत्के नरसिंहमूर्ति भेटल छलैक। एहि मूर्तिक बारे पुरातत्व विभागके पूर्व महानिर्देशक, रमेशजंग थापाके एकटा लेख प्राचीन नेपालक अंक ४०मे छपल छैक। संभवत: दामोदरपुरक चारिम ताम्रपत्रमे उल्लेख भेल नगर श्रेष्ठि रिभुपालक बनावल ई मंदिरमे प्राप्त मूर्ति छलैक।

१०) पिंडेश्वर महादेवस्थान :-

धरानसँ लगभग एक किलोमीटर ऊपर सम्भवत: मोरंगक सेनकालके पिडेश्वर महादेव मन्दिर छैक, जतए महिषमर्दिनी दुर्गाक एकटा भव्य कारीप्रस्तरक मूर्ति छैक। दुर्गामूर्तिसँगै एहिठाम-पाल-सेन कालके अनेक छोट-छोट मूर्ति छैक। एहि पर्वत श्रेणीक उत्तरी क्षेत्रमे ईटाद्वारा निर्मित, सेन दरवार छलैक जकर आव अवशेष मात्र बाँकी छैक।

११) भेडियारी :-

जोगवनी-रानीसँ एक किलोमीटर पूर्व, दक्षिण भेडियारी गाम मे, २००-१०० ई. पूर्व के, पोखैरके दक्षिण पक्की ईट द्वारा निर्मित दू कालके लम्बाकार सात फीट ऊँच पीठपर अण्डाकार गर्भगृह मन्दिरके (Elliptical Brick temple) उत्खनन, लेखकद्वारा, वि.सं. २०३५-३६ सालमे भेल छलैक। ई मन्दिरके जीर्णोद्धार नहि भेल छैक। ई एकटा विशाल शुङ्ग-मित्र कालीन (२००-१०० ई. पूर्वक) क्षेत्र थिकै, जकर चारु तर्फ माटिक दूर्ग-प्राकार आ परिखासँ वेष्ठित छैक, तकर अवशेष एखनो तक छैक। एहि क्षेत्रमे दू तीनटा गाम छैक। ई प्राचीन स्थल नेपाल-भारत सीमा क्षेत्रमे छैक, एहिठाम पक्की ईटाक निर्मित अनेक महत्वपूर्ण मन्दिरक अवशेष छलैक। सरकारी रेखदेखक अभावमे आ एहिठामक जनताके उदासीनताक कारण प्राचीन मन्दिरके नष्ट कऽ प्राप्त पाकलईटा स्थानीय अपन घर निर्माणमे प्रयोग कएने छैथ, आ अनमोल धरोहरसब नष्ट भगेल छैक। एहि स्थलसँ चांदिक प्राचीन पंचमार्क मुद्रासब (Hoards of Silver Punch Marked Coins) भेटल छलैक। ताहिमे किछु मुद्रा पुरातत्व विभागक नेपाल राष्ट्रिय संग्रहालयमे सुरक्षित छैक। एहि क्षेत्रक दोसर दुर्भाग्य कि, वर्तमान सरकार

आ भारत सरकार एहि क्षेत्रके ड्राइपोर्ट बनाकऽ एकटा अन्त्यत महत्वपूर्ण स्थलके नष्ट कर में लागल अछि। एहिके विरोध क ई महत्वपूर्ण मिथिलाक धरोहरके सुरक्षित रखवा लेल जनदबाब आ विरोधक आवश्यकता अछि। एहि क्षेत्रक वृहत् उत्खनन आ संरक्षण होएव जरुरी अछि।

भारतीय क्षेत्रमे मिथिलाक पुरातात्विकस्थल, वास्तु तथा वस्तु अवेशष

मिथिला देशके जनक राज्यकालमे निर्माण भेल सीमा गंडक-कोशी आ गंगा-महाभारत पर्वतक पाद्भाग क्षेत्रमे अनेक बेर परिवर्तन आ विभाजन भेल। उदाहरण हमर सामने अछि। मिथिला जनकवंशकाल अथवा गणराज्य बैनके अष्टवृज्जिकुलमे विलयके पश्चात् जखन अजातशत्रुद्वारा विजित भेल ओकर वादसँ एकर कनिक महत्व गुप्तकालमे बढल छलैक। एहिकालमे गंडकसँ कोशीप्रदेशतकके शासनके संचालन तीरभुक्तिक नामसँ बैशालीनगरसँ भेल छलैक। एकरबाद मिथिलाक उदय स्वतन्त्र देशके रूपमे नान्यदेवके शासनकालमे भेल छलैक आ राजा हरिसिंहकबाद अँगरेजक शासनकालतक मिथिला एकटा प्रांत तथा कमिश्नरिक रूपे अपन अस्तित्व कायम केलक। लेकिन नेपाल तथा अँगरेजक मांझ भेल सुगौलि संधिके पश्चात् मिथिला अन्तर्राष्ट्रिय रूपमे नेपाल आ भारतके दूटा अलग-अलग प्रदेश बनि गेल।

भारतीय क्षेत्रमे जे मिथिलाक प्राचीन भग्नावशेष आ स्थल भेटल अछि ओथीक-चम्पारणके ओइनवारबंशी राजा -पृथ्वीसिंह, शक्तिसिंह आदिक दरबारक्षेत्र, लौरियानन्दनगढ, लौरिया-अरेराज, वैशाली, सीतामढीक एहिल्यास्थान, मधुबीनलगक स्थल, सिंहेश्वरस्थान, दरभंगा, सकरी, अन्धराठाढी, हावीपट्टन, पूर्णिया, मुंगेरक पालराजाक निवासस्थल, वनगाम, देवनाक डीह, गोरहोघाट, महिषी, कुशेश्वर स्थान, हाटीगाछी, महुआर, कोर्थु, बहेरा तथा हरिसिंहपुर, विक्रमशिला, नरहनस्थान, हाजिपुरलग-पापड (पाँड) स्थान, रामचौरा तथा पुनहराघाट आदि।

ऊपर उल्लेख भेल क्षेत्र सबमे एहिल्यास्थान-सीतामढी, बैशाली, मधुबनीलग, रामचौरा, पुनहराघाट तथा विक्रमशिला विद्यालयके उत्खनन भगेल छैक। लेकिन गोरहोघाट, अन्धराठाढी, हावीपट्टन, सिंहेश्वरस्थान, दरभंगा, भीठभगवानपुर, लौरियानन्दनगढ तथा लौरिया अरेराजक उत्खनन करब अति आवश्यक अछि।

मिथिलाक मूर्तिकला आ प्राचीन मुद्रा (Images and Coins of Mithila)

मिथिलाक प्राचीन मृण्मयमूर्ति मौर्यकलाशैलीक लौरियानन्दनगढ उत्खननसँ प्राप्त एकटा देवीक मूर्ति थिकै। एहि प्रदेशक पाथरक मूर्ति आ वास्तुस्तंभ पालिसदार चुनारबालु पत्थरक क्रमशः बैशली, लौरियानन्दनगढ, लौरिया अरेराज तथा रामपुरवासँ भेटल छैक। स्तंभक ऊपर साँढ तथा सिंहक मूर्ति भेटल छैक। शुंगकालक (२००-१०० ई. पूर्वक) मृण्मयमूर्ति (Terracotta Figures) बैशालीसँ भेटल छैक। कुषाणकालक मूर्तिक प्राप्ति बैशाली उत्खननसँ भेल छैक। तत्पश्चात् गुप्तकालक मूर्ति, वैशाली, मोतिहारी-मुजफ्फरपुर क्षेत्र, वराहमूर्ति तथा गुप्तशैलीके शिखराकार छोट-छोट मन्दिर वाराह क्षेत्रसँ भेटल छैक। इनरवाक नरसिंहतप्पासँ पाँचम-छठम ई. सवत्के नरसिंह मूर्ति (कारी पत्थरक बनल) प्राप्त भेल छैक। यद्यपि सिरहा जिला कमलानदीक इटहरी गाम किनारक लगसँ गुप्तकालीन साँचामे बनल ईटासँ निर्मित शिखरशैलीक मन्दिरके त्रिरथ जगके किछु भाग (Basement) भेटल छैक लेकिन ओहिठाम गुप्तमूर्ति एखनतक प्राप्त नहि भेल अछि।

पालकाल (८-१२ हम ई.सम्वत्क) मुंगेर तथा वंगालक करीयापाथरसँ निर्मित हिन्दू आ बौद्धधर्मक मूर्ति बनगाम (महिषमर्दिनी), देवना (शिवलिंग), कुशेश्वरस्थान (शिवलिंग), महिषी (बौद्धताराक, अवलोकेश्वर तथा विष्णु), धरानक पिंडेश्वर महादेवक स्थानसँ महिषमर्दिनी मूर्ति प्राप्त भेल छैक।

कर्णाटकाल (११-१४ ई. संवत्)के मूर्तिक निर्माण मकवानपुर आसपासक सिष्टपाथर (Schist Stone)सँ भेल छैक जाहिपर बहुत चमकदार पालिस कएल गेल छैक। एहिकालक हिन्दू मूर्तिसब प्रायः लक्ष्मी तथा गरुडसहितक विष्णु, गरुडोपरि विष्णु, सूर्य (दुनुहातमे कमल मूर्ति तथा सप्तअश्वरथपर सवार मूर्ति), ब्रह्मा (चतुर्मुख तथा एकमुख), शिव, शिवपार्वती, शिवलिंग, महिषमर्दिनी, द्वारतोरण, गजपंक्तितोरण, नृत्य-वाद्य तथा नवग्रहमूर्ति, समूहतोरण आदिछैक। नेपालक बाल्मीकिनगर, सिमरौनगढ, मूर्तियाक जंगल क्षेत्र, मलंगवासँ २-२$^{१/२}$ कोश पश्चिम इनरवासँ (चतुर्वाहु विष्णु), जनकपुर (सद्योजात), भुतही (अभिलेख सहित लक्ष्मीनारायण), आयुधपुरुष सहित विष्णुमूर्ति (मोहन प्रसाद खनाल द्वारा जनकपुर क्षेत्रसँ संकलित), जलेश्वर (शिवलिंग), सप्तरिक रूपनगर (गणेश, लक्ष्मी-गरुड सहितविष्णु मूर्ति तथा नवनिर्मित मन्दिरमे स्थापित) आर सखडा भगवतीस्थानसँ भेटल छैक।

भारतीय क्षेत्रमे कर्णाटकालक, मूर्तिसब-महुआर (गरुडवज), कोर्थु तथा आसपास गामसँ, बहेडासँ (मूर्तिसब तथा शिवलिंग), रानी सौभाग्यदेवी तथा मंत्रि कर्मादित्यक लेख सहित शिवा-पार्वती मूर्ति, दरभंगा (देकुली सँ), भीठभगबानपुर, अन्हराठाढी आदि जगहसँ प्राप्त भेल अछि। ओइनवारवंशक राजा नरसिंहदेवक अभिलेख सहितके सूर्य मूर्ति बनगावसँ लगभग एक कोस तथा धेमुरानदीसँ पश्चिम, कन्दाहा गामसँ भेटल छैक। एकर अलावा अनेक गाममे मूर्ति सब भसकैत अछि जकर अन्वेषण तथा खोजकरव आवश्यक अछि।

मिथिला क्षेत्रक मुद्रा

मिथिला क्षेत्रक वैशाली, गोरहोघाट, पूर्णिया, भेडियारी (विराटनगर), आ दरभंगाक हाटिगाछी (सुपौल) आदि जगहसँ चाँदी तथा तामाक (४००-३०० ई. पूर्वक) पंचमार्क (Punch-Marked Coins) मुद्रा भेटल छैक। शुंगमुद्रा (Sunga Coins) मात्र बैशालीसँ प्राप्त भेल अछि। कुषाण मुद्राक प्राप्ति, बैशाली, नेपालक रंगपुर (पर्सा जिलाक चन्द्रनिगाहपुरके २ कोस पश्चिम), जनकपुरक महदैया आदि ठामसँ भेल अछि। गुप्तमुद्रा केवल बैशालीसँ भेटल अछि। मचेरता (इटलीक) पादरी काशियानो १७४० ई.मे सिमरौनगढके अध्ययनके सिलसिलामे कर्णाट मुद्राक उल्लेख केने छैथ। भक्तपुरक एकटा मल्ल राजाक चाँदीमुद्रापर सिमरौनगढक चक्रव्यूहाकार दरबारक रक्षा-प्राकारक चित्र छलैक (R. Garbini, A fragmentary Inscription from Simaraongarha, Ancient Nepal, No-135, 1993, P.5, L ; The labyrinth was reproduced also on coins, rare in that time) मिथिलाक आधिपत्यके प्रमाणित कर बास्ते दिल्लीक सुल्तान मुहम्मद तुगलक मुद्रा जारी केने छल जाहि पर- 'तुलकपुर-उर्फ- तिरहुत' लिखल छलैक। मुगलकालीन मुद्रासव सिमरौनगढ, बारा तथा रौतहट तथा भारतीय मिथिलाक अनेक जगहसँ भेटल छैक।

- T.N. Mishra, The Kushan Coins from Rangapur, Ancient Nepal No.- 137.
- रमेशजंग थापा, इनरवाका नरसिंह मूर्ति, प्राचीन नेपाल, पुरातत्वविभाग, अंक -४०।
- जनकलाल शर्मा, प्राचीन नेपाल सं. -२ तथा सद्योजात लेल, प्राचीन नेपाल अंक - ।

मिथिलाक पुरातात्विक स्थल, बास्तु आ बस्तुक संरक्षण

प्राचीनकालक इतिहासक भौतिक तथा वैज्ञानिक आधारमे निर्माण पुरातत्व विज्ञान करैत छैक। पुरातत्व कोनो देश या क्षेत्रके प्रस्तरकालसँ एक सय वर्ष पूर्वतकके प्राचीन इतिहासक निर्माण आ ओहिठामक मानवविकासके सम्पूर्ण प्रक्रिया, चरण आ कालक एकटा क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत करैत छैक। एहिक्रममे ओहि देश अथवा क्षेत्रक विभिन्न जातिसमूह, पशुपक्षी, वनस्पति, धार्मिक, सामाजिक विश्वास तथा विविध विषयक विवरण प्रस्तुत करैत छैक। पुरातत्व विषयके चारिटा उद्देश्य होइत छैक :-

(क) पुरातात्विक स्थल, वास्तु, वस्तु, मूर्ति, अभिलेख तथा अन्य विषयक खोजी, अध्ययन, रेखांकन, छायाँकन, आदि विवरण तैयार करब।
(ख) उपलब्ध बस्तु तथा वास्तुक अध्ययनक सार प्रकाशित करब।
(ग) प्राप्त वस्तु तथा वास्तुक भौतिक तथा रासायनिक संरक्षण करब।
(घ) उपलब्ध वस्तु, तथा स्थलक प्रदर्शन आ पुनः अध्ययनक लेल उचित व्यवस्था करब (Exposition or display of objects, sites, art, architecture and antiquities)।

सांस्कृतिक वस्तु दू किसिमके होइत छैक (अदृश्य, अपारदर्शी, Intangible) आ पारदर्शी (भौतिकवस्तु, मूर्तवस्तु, Tangible or Physical Heritage)। भौतिक वास्तु आ वस्तु अंतर्गत पुरातात्विक स्थल (archaeological sites), मन्दिर आदि वास्तु (Architectural Heritage), मूर्तिकला (Art Objects), प्रस्तरलेख, स्तम्भलेख, हस्तलिखित ग्रंथ, पत्र, ताम्रलेख, दानपत्र, ऋणपत्र, राज्यादेश, प्राचीन प्रस्तर तथा धातुक हतियार तथा घर उपयोगमे प्रयोगभेल छोट-छोट वस्तुसव राखल जा सकैत अछि। यी वस्तुक पुनः विभाजन दू किसिमसँ कएल जा सकैत अछि-उठाक लजाएवला तथा नभलजाएवला (Movable and unmovahle, चल-अचल वस्तु)। एहिपत्रक विषयवस्तु प्राचीन भौतिक वास्तु तथा वस्तुक (Physical Heritage and Antiquities) अन्वेषण, अध्ययन तथा संरक्षण थिकै।

पुरातात्विक स्थलक अन्वेषण तथा संरक्षण :-

कमसँ कम पचहत्तरसँ एक सय वर्ष पुरान कोनो वस्ती, गाम, नगर, धार्मिक स्थल, वास्तुसमूहके पुरातात्विक स्थल संरक्षण लेल सर्वप्रथम एकर अन्वेषण (Exploration) तथा सूचीकरण (Preparation of Inventory of sites and Monuments) अथवा अन्वेषण तालिका (Exploration from) भरव आवश्यक अछि। एकर बाद मिथिलाक नक्सामे संकलित सम्पूर्ण

क्षेत्रके चित्रण करब आवश्यक अछि। प्रत्येक अन्वेषित क्षेत्रके फोटो, गाम क्षेत्र तथा जिलाक नक्सामे ओकर चित्रण, सर्वेक्षणके आधारपर पूर्व सूचित आ नव अन्वेषित स्थल सबसँ संकलित पुरातात्विक सामग्री सबक अध्ययन करब आवश्यक अछि। एकटा टोलीके नेतृत्व पुरातत्वमे एम.ए.के बाद पुरातत्व विषयक प्रशिक्षित आ अनुभव प्राप्त व्यक्तिके करबाक चाही। प्रशिक्षित आ अनुभवप्राप्त व्यक्तिके स्थलके उपर आ पानिक गलियारी (surface and rain gulli)सँ खपटा, मृण्मय मूर्ति, मुद्रा, पत्थरक माला आदिसँ ओ, प्राचीन, नगर, अथवा गामक भग्नावशेष कोन कालक थिकै तकर विषयमे पूर्ण ज्ञान प्राप्त होइत छैक। उत्खननके निर्णय स्थलक महत्व तथा काल निर्णय लेल होइत छैक। उत्खनन अनेक किसिमके होइत छैक-जेना नगर वास्तुक ज्ञानलेल उत्खनन (City or Horizontal excavation), काल निर्णयके वास्ते उत्खनन जाहि खातिर एकटा-एकटा गहीर खदहा (Vertical Trenches) अथवा (Trail Trenches) द्वारा इच्छित ज्ञान प्राप्त होइत छैक। कोनो मन्दिरके अवशेषके उत्खनन Grid Trenching द्वारा, आ गोल आकृतिक स्तूपके उत्खनन, ओहि अवशेषके क-ख, ग-घके आधारमे काठक खुट्टा गाडिके दू विपरीत दिशाक कोणके उत्खनन द्वारा कऽ पडैत छैक। उत्खननसँ प्राप्त वास्तुसबके पूर्वके प्राकृतिक स्वरूप कायम राखैत जीर्णोद्धार कर पडैत छैक।

मूर्ति तथा प्राचीन वस्तुके संरक्षण

एहि सिलसिलामे सवसँ महत्वपूर्ण काज थिकै प्राचीन स्थल सबक सर्वेक्षण। ई कार्य क्रमवद्ध रूपे (Phase Wise) आ जिला-जिलाके योजना बनाक कएल जा सकैत छैक। सर्वेक्षण अथवा स्थानीय व्यक्तिसबक सूचनाक आधारमे सर्वेक्षण भेल महत्वपूर्ण स्थलके स्थानीय अथवा राष्ट्रिय महत्वक राजपत्रमे प्रकाशनद्वारा संरक्षित स्थल (Protected site)s] रूपमे संरक्षण देबाक व्यवस्था छैक। एहितरहक महत्वपूर्ण स्थलके नष्ट करबाक कार्य अथवा निजीकरण करबासँ रोकऽ वास्ते प्राचीन स्थल संरक्षण ऐन (Ancient Site Preservation Act) तथा वास्तु संरक्षण विनियम (Heritage Protection Act) द्वारा हरेक देशमे व्यवस्था छैक। तहिना गडल धन अथवा प्राचीन वस्तु तथा मूर्ति सरकारके होइत छैक। एक सय वर्ष प्राचीन कोनो ऐतिहासिक वस्तुके नियमद्वारा खरीद-बेच तथा निर्यात (export to foreign country)d] हरेक देशमे कानूनद्वारा बन्देज छैक। एहि तरहसँ प्राचीन वस्तुके एकठामसँ दोसर ठाम लजाएक वास्ते अपन देशक पुरातत्व

विभागक लिखित स्वीकृतिपत्रके आवश्यकता पडैत छैक। अगर स्वीकृति नहि लेल गेल अछि त ओसार-पसार करऽ वलाके सरकार Antiquities Act अतर्गत कानूनी कार्यवाही कऽ सकैत छैक। प्राप्त मूर्ति अथवा वस्तुके भौतिक तथा रासायनिक संरक्षणके बादे ओकरा विभाग अथवा संग्रहालयके भण्डारगृह अथवा प्रदर्शनमे राखल जाइत छैक।

हस्तलिखित ग्रंथक संरक्षण (Protection of Hand written Books)

हस्तलिखित ग्रंथके हरेक सरकार अथवा राजदरबार बहुत प्राचीनकालसँ संकलित करैत आयल छैक आ एहि तरहक पुस्तकालय हरेक देशमे छैक। मिथिलाक हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह भेल पुस्तकालय-पटना, दरभंगा (संस्कृत विश्वविद्यालय, मिथिला इन्स्टिच्यूट आ राजपुस्तकालय), नेपाल (राष्ट्रिय अभिलेखालय, केशर पुस्तकालय आ आशासफूकुठी), निजी संग्रह सवमे, उडिसा, भागलपुर आ मोतिहारी-मुजफ्फरपुरमे हेबाक चाही।

ई सब पुस्तकालयमे मिथिलाक आ मैथिल विद्वान लिखित ग्रंथ सबहक एकटा वैज्ञानिक सूची बना कऽ राखनाय अति आवश्यक छैक। नेपालक ग्रंथालय आ खास दरभंगाक संस्कृत ग्रंथालयमे मिथिलाक ग्रंथसबक वैज्ञानिक सूची (Updated Catalogue) तैयार भेल छैक। विशाल ग्रंथक संकलन दरभंगाक संस्कृत विश्वविद्यालयमे छैक लेकिन ओ सबसे बेसी असुरक्षित आ राजक समयके मात्र एकटा साधारण सूची रखने छैक।

हस्तलिखित ग्रंथक पूर्ण संकलन, सूक्ष्मछविचित्रण (Microfilming) काठ आ ग्रंथ (कागज, ताडपत्र, भूर्जपत्र) क रसायनशाला (Chemical Lab)d] रसायनद्वारा कीडामुक्त (Fumigation) कके राखैक जरुरी छैक। यथाशक्य अध्यनार्थीसबके मूलग्रंथ नहिदके, सूक्ष्मछविचित्र, अध्ययन यंत्र (Microfilm Reader) उपलब्ध करबाक चाही। फोटो प्रतिक खातिर सूक्ष्मछविचित्रक प्रति तैयार कके मांग अनुसार विद्यार्थी तथा छात्रके देवाक चाही आ मूलप्रतिके हाथसँ छुबैकलेल मनाही करक आवश्यक अछि।

प्राचीन कालमे ग्रंथक कागजमे हरितालक प्रयोग, सुवर्ण तथा चांदीक मसी (Ink)s] प्रयोगक अनेक उदाहरण नेपालक प्राचीन ग्रंथमे भेटैत छैक जे कीडासँ ग्रंथके बचबैत छलैक। एकर अलावा ग्रंथ राखैबला आलमारीमे नीमक पात तथा फिनाइलक गोटीक प्रयोग कीडासँ ग्रंथके सुरक्षा दैत छैक।

अनेक प्राचीनग्रंथमे रचनाकार अथवा प्रतिलिपिकार ग्रंथ सबके पानि, चोरी, अग्नि, मूस, तथा बच्चासभसँ जोगाक राखैक अनुरोध कएने छथि। सिमरौनगढक प्रख्यात बैद्य चक्रधर लिखित स्वस्थचिकित्साधिकार ग्रंथक

प्रतिलिपि तैयार कर बला हुनके वंशज आ सिमरौनगढवासी देवधर दत्तक ग्रंथ (आशा सफूग्रंथसूचि, १९९१, पृ. ३७६, शाल्मलीवन निवासवतोति श्री देवधर दत्त इदं विलेख्य)के काठमाण्डूक, देव पाटनके वासी, प्रतिलिपी केनहार वैद्य कृष्ण देव लिखैथ छैथ - "नमोयं चक्रदत्तकं उदकानल चौरेभ्यो मूषिकेभ्यः तथैव रक्षतव्यं प्रयत्नेन मया कष्टेनं लेखित्तं। कष्टेन लिखितं शास्त्रं पुत्रवत् प्रतिपालयेत्। नेपाल संवत् ७३१ (ई.सं. १६११)।"

वास्तु संपदा संरक्षणक उपाय (Protection of Architectural Heritage)

वास्तुविज्ञान अंतर्गत हरेक किसिमके मानव निर्मित वस्तु, वास्तु अथवा शिल्पकला समूह भेटैत छैक तकर पहिने शैली आदिक अध्ययनके वाद संरक्षण लेल टुटफुट भेल अंग सहितके विवरण (Conservation Notes), नाप-नक्सा, फोटो, आदिक बाद ओकर खर्चक अनुमान, अंक निर्धारण आदि होइत छैक। ओहि निर्धारित संरक्षण विधि अनुसार पुरातत्व विभागके प्रतिनिधिसहित सम्मिलित टोलीद्वारा अथवा विभागीय स्वीकृतिक बादे प्राचीन वास्तुक संरक्षण करबाक प्रावधान छैक।

प्राचीन नगर अथवा वस्तीक संरक्षण (Protection and Conservation of Ancient Sites) –प्राचीन वास्तु, मूर्तिकला अथवा प्राचीन भग्नावशेषके विगारैमे ओकर जीवन अवधि (Age Factor), प्राकृतिक विपत्ति (Natural Calamities) जेना, आंधि, भूकम्प, बाढि, आगि, आदिक अलावा पृथ्वीक मानव समेत सम्पूर्ण जीवजन्तु जिम्मेदार छैक। अलग-अलग धर्ममे विश्वास आ अनकर धार्मिक वास्तुके नष्ट कके अपन मात्र वास्तु आ पूजा-स्थल तथा मूर्ति निर्माणक अभिलाषा आ प्रयासक कारण अनेक वास्तु, सालिक अथवा मूर्ति सबक विनाश भेल छैक। मुद्रा, मूर्ति अथवा वास्तुके संरक्षण, भौतिक मरम्मत (Physical Conservation) आ रासायनिक संरक्षण (Chemical Conservation) द्वारा होइत छैक। सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रके अति महत्वपूर्ण वास्तु तथा नगर-वस्ती, मन्दिर, धर्मशाला, पोखरिके नियम-कानून बना कऽ संरक्षित वास्तु अथवा नगर-वस्ती घोषित कऽ तिनकर संरक्षण भऽ सकैत छैक। एहि सम्बन्धमे जनकपुर क्षेत्र, सिमरौनगढ, लहान लगक खपटै डाँडा, बनौलीगढी आदि क्षेत्रके संरक्षित क्षेत्र घोषित करब आवश्यक छैक। लगभग ७०-८० वर्ष पहिनय धेमुरा नदी किनारक गोरहोघाटके भारत सरकार संरक्षित क्षेत्र घोषित केने छैक। भारतीय क्षेत्रके किछु प्राचीन क्षेत्र तथा नगरवास्तु वास्तुके संरक्षित क्षेत्र घोषित करबाक आवश्यक छैक।

विशेष जानकारी लेल देखू :-

(क) नेपालक वस्तु - वास्तु संरक्षण ऐन-कानून (Antiquarian Law).

(ख) T.N. Mishra, conservation of Mayadevi Image (of Lumbini), Rolamba, Vol- PP. 19-27; 1989; also Reprinted in the silk-Road magazine unesco, Kathmandu.

(ग) Tara Nanda Mishra, The Traditional Material and Techniques used in the conservation of Nepalese historical monuments, Ancient Nepal No. – 135, P.P. 1993, 22-31 (उक्त कार्यपत्र नारा, जापान-संरक्षण संगोष्ठिमे प्रस्तुत आ छपल छैक)। T.N. Mishra, Conservation Principles and Techniques used in the Architectural Elements. Journal of Nepalese Literature, Art and Culture, Vol-2, Pragya Pratisthana, Kamaladi, Kathmandu.

मिथिलाक सांस्कृतिक-पुरातात्विक वस्तु प्रदर्शनक लेल संग्रहालय

सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक उत्खनित, सर्वेक्षण तथा नगर-ग्रामवासी द्वारा प्राप्त सामग्री तथा जे मिथिलाक पुरातात्विक वस्तु तथा अभिलेख (ताम्रपत्र लेख) आदि कलकत्ता तथा पटनाक संग्रहालयमे छैक, सबके संग्रहक अपन-अपन क्षेत्रीय संग्रहालयमे प्रदर्शन होबाक चाही। एखन तक सम्पूर्ण मिथिलामे - दरभंगा, वैशाली, बनगामक लक्ष्मीनाथ गोसाईक गाछी तथा वाल्मीकि नगरक संग्रहालय सबमे प्रदर्शन भेल अछि। लेकिन एकर अलावा सिमरौनगढ, जनकपुर, विराटनगर, मधेपुरा, मोतिहारी आदि ठाममे संग्रहालय स्थापना कके ओहि सबठाम प्रशिक्षित संग्रहालयविद् तथा आवश्यक कर्मचारी सबहक व्यवस्था क्ऽके मिथिलाक सांस्कृतिक - पुरातात्विक वस्तुक प्रदर्शनक उचित प्रबन्ध भेनाई जरुरी अछि।

मिथिला क्षेत्रसँ प्राप्त कर्णाटराज्य शासनक अभिलेख सूची तथा मिथिलाक ओइनवार वंशी-अभिलेख

संख्या	स्तंभ तथा शिला लेखकठाम	सम्वत्	विषयवस्तु, राजा-मन्त्रि आदिक नाम	प्रकाशक
१.	सिमरौनगढ द्वारअभिलेख	शाके	नान्यदेव द्वारा राजधानिक स्थापना/नेपालक केशर वंशा पत्र-१५मे नान्यदेवके स्रष्टाकहलगेल छैक।	चंदा झाक पुरुष परिक्षा।
२.	अन्धराठाढी (लक्ष्मीनारायण पादलेख)		सामंत नान्यदेव आ महामंत्रि श्रीधर	डा. उपेन्द्र ठाकुर, रा.कृ. चौधरी।
३.	भीठ भगवानपुर		श्रीमल्लदेव	(मिथिलाक इति.डा. ठाकुर (BORI, VOL 35,1954 प्रो. चौधरी
४.	महुआर गरुडस्तंभलेख (दरभंगाजिलाक मठाही पोखैरक दक्षिण महाडपर स्थित विष्णुमठके आगुकस्तंभ) हाल दरभंगा संग्रहालयमे सुरक्षित।		मंत्रिवर्द्धमान	डा.ठाकुर, १९५६
५.	देकुलीगामक शिववर्द्धमानेवर लेख (ई लेख कर्णाट अथवा ओइनवार वंशक थीक तकर परीक्षण आवश्यक अछि)		मंत्रि वर्द्धमान	डा. ठाकुर, १९५६
६.	खोजपुर दुर्गापाद्पीठ लेख			डा. ठाकुरः (वि.सहल) १९८३,
७.	सप्ताश्वरथ सूर्य मूति पाद् अभिलेख; (वेजलर सूचि, १९८९, पृ. २४९-२५०, श्री गणेश्वर मंत्रिणाकृनं सुगति-सोपन पुस्तकमिदं नेपाल राज्यावस्थित श्री ललितपत्तनेठकुर श्री मति शर्मणां लिखित)	-	महामंत्रि गणेश्वर तथा (मंत्रि हरीश्वरक उल्लेख छैक। १. श्री श्रीपतिना प्रतिमेयं महामन्त्री श्री गणेश प्रसादतः घटिय (त) म् ॥ २. अग्नयानिक (अग्नियानिक) पदस्थ श्री हरीश्वर कारिता ॥	तारा नन्द मिश्र, प्राचीन नेपाल, २४, १९७३, ३५-४१।
८.	सिमरौनगढक फुटल अभिलेख	-	राजा रामसिंह तथा मंत्रि कर्मादित्य। तस्य तनय, अभूत कर्मादित्यः- महिम राम (सिंह)... ।	रिकार्डो गार्विनी, प्राचीन नेपाल पु. विभाग, काठमाण्डू, सं. १३५ पृ. ९।
९.	हाविडिह, शिवापाद् लेख (ई.सं. १२२०-१२३२)	ल.सं. २१२	हैहट्ट देवि शिवा कर्मादित्य सुमंत्रिनेह विहिता सौभाग्य देव्याज्ञया।	उपेन्द्र ठाकुर, १९५६।

१०.	गरुडोपरिनारायण पाद्लेख	-	सिमरौनगढक रनिवाससँ दक्षिण गाममें । ऊँ देय धर्मोयं ॥.....॥	T.N. Mishra, The language, literature and culture of Mithila, Nepal Academy, Kathmandu, ed. by Yogendra yadava.
११.	विष्णुक गजपंत्ति तोरण अभिलेख,	-	जनकपुरलग भतहीसँ प्राप्त ।	जनकलाल शर्मा, प्राचीन नेपाल सं.२, १-१०, ऐी(क्ष्क्ष्क्ष्, ख ।
१२.	कंकालीमठघंटा अभिलेख	ल.स. १२९ बदि	श्रीश्री शक्ति सिंह देवन ..।	मोहन प्रसाद खनाल, सिमरौनगढ को इतिहास, २०५६, पृ. १०२-१०४ ।

संख्या	स्तंभ तथा शिला लेखकठाम	सम्वत्	विषयवस्तु, राजा-मन्त्रि आदिक नाम	प्रकाशक
१.	कन्दहा सूर्य मूर्ति पादलेख		राजा नरसिंह देव	डा. उपेन्द्र ठाकुर (Hist. of Mithila, 1956)
२.	शकरीक नगर अभिलेख			डा. उपेन्द ठाकुर मिथिलाक इतिहास, १९५६,
३.	जानकीगढ, मोतिहारीक लेख	-	राजापृथ्वी सिंह आ शक्ति सिंह	डा. ठाकुर, १९५६,

संख्या	स्तंभ तथा शिला लेखकठाम	सम्वत्	विषयवस्तु, राजा-मन्त्रि आदिक नाम	प्रकाशक
१.	धनुषाक महेश ठाकुरक अभिलेख ।	शक सं.१४७८	आसीत् पण्डित मण्डलाग्रगणितो भूमण्डलाखण्डलो । जातः खण्डबलाकुले गिरिसुताभक्तो महेशः कृती शाके रन्ध्रतुरङ्ग मश्रुतिमही । संलक्षितेहायने वाग्देवी कृपयाशु येन मिथिलादेशः समस्तोर्जितः ॥ इत्यादीन्यनेकानि पद्यानि तत्र वर्तन्ते । श्री	तार्किकरक्षा ग्रंथक भूमिकामे विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रकाशित ।

			महेशठक्कुरापर नामधेयेन भगीरथ ठक्कुरेण च मेघठक्कुरापरनाम धेयेन चानेके ग्रन्था रचिता विस्तरस्तु तेष्वनुसन्धेयः ।	

नेपालक सेन तथा गोरखाक शाह राजा सबहक ऐतिहासिक आदेश, दान पत्र आदिक वास्ते देखू :-
(क) पुरातत्व पत्र संग्रह, सम्पादन, शंकरमान राजवंशी, पुरातत्व विभाग ।
(ख) जनकलाल शर्मा, प्राचीन नेपाल, अंक-२, प्र.१-१० ।
(ग) देवी प्रसाद लंसाल तथा राधेश्याम भट्टराई, प्राचीन नेपाल अंक-२६ ।

मिथिलाक इतिहास, संस्कृति तथा मुद्रा बारे ग्रंथ तथा लेख

संख्या	लेखक	ग्रंथ तथा लेख नाम	ई. अथवा वि. सम्वत्	प्रकाशक तथा ठाक
1.	Luciano Petech	Mediaval History of Nepal	1984	Roma
2.	"	IL Missionary Italiani Nel Tibet nel Nepal.	1952-53/1956	Roma
3.	Rosa Maria cimino	The Lybrinth of Simrongadha, in South-Asian archeology.	1972	fig. 2, Roma
	"	Simarongadha, the forgotten city and its art, in contributions to Nepalese studies,	1986	TU, Kathmandu
	"	IL Labirinto di Simarongadha, Napoli, Vol-II,	1989	Institute Universal Naplse, Itali
4.	Hari Ram Joshi	Karnatakas Impact on Medieval culture,	Rolamba,	Vol-3,1 Joshi Institute, Patna.
5.	D.R. Patil	The Antiquarian Remains in Bihar,	1963	Jayaswal Research Institute Patna.
6.	G. Roerich	Biography of Dharmasvamin,	1959	Jayaswal Research Institute, Patna.
7.	Upendra Thakur,	History of Mithila,	1956/1958	Mithila Institute, Darghanga.
8.	Radha Krishna Chaudhary,	The Karnatas of Mithila,	1954,	BORI, Vol-xxxv.
	"	The Muslim Rule In Tirhut,	1970	Varanasi
	"	Mithila in the Age of Vidyapati	1976	"
	"	ldlynfs] clen]v		
9.	C.P.N. Sinha	Mithila Ka Itihas	1979	Darbhanga,
10.	V.K. Mishra	Cultural Heritage of Mithila	1979	Allaha bad,
11.	Nandolal Dey	The Geographical Informations in the Skandha Purana,	1979	Darbhanga,
12.	T.O. Ballinger	Report on simrongarha	1958	University of Tregan, U.S.A

	" "	Simraongarha Revisited	1973	Kailash I, 3, PP. 180-84, Kathmandu
13.	B. Sahal	The Inscriptions of Bihar	1983	Patna
14.	M. Vidale and F. Luguli	Archaeological Investigations at Simaraongarha.	1991/1992	Ancient Nepal No-. 126-127 DOA, Kathmandu
	" "	Exeavation at simrongarha,	1997	Roma,
	M. Vidale, C. Balista and V. Torrieri,	A Test trench through the fortifications of simarongarha.	1993	Rawangarha,Ancient Nepal No. 135, PP. 10-21, DOA.
	M. Vidale	Passage to Nepal, Archeology of the early state of Simrongarha, Attributions to the archaeology of South and west Asia.	1994	Wisconsin, Vol - 3.
15.	Riccardo Garbini	A fragmentary Inscription from Simrongarha	1993	Ancient Nepal No. 135, PP. 1-9, DOA.
16.	D. Vajracharya and K.P. Malla	The Gopalaraja Vansavali	1985	Wiesbadan, Germany.
17.	Wezler $ Others	Publication of the Nepal-German Ms. Preservation Project-1	1989	Stuttgart, Germany
18.	Tara Nanda Mishra	Ganesvara Tatha Simraongarhaka Mantri Ra Purohit-haru.	1973	Ancient Nepal No. 24, Dept. of Archaeology.
	" "	The Karnat Kings of Simraongarha	2056 V.S.	in The language, literature and Culture of Mithila, Nepal Academy, Kamaladi.
	" "	Mithila Ka Raja Ramsinghadeva,	V.S. 2056	Sayapatri, Kamaladi,
	" "	Videha-Mithila desa Ra yasko Rajadhani Simraongardha ko Itihas, in Simraongarha Visyak Sangosthi,	V.S. 2057	Pragya Pratisthana.
	" "	The Historical Dynasties and Ancient Archacological Sites in Nepal,	1988	Ancient Nepal No. 103, DOA.
	" "	Bauddha Granth Ra Jain Sahitya Ma Mithila		Sayapatri, Vol-
	" "	Dharmaswami Ko jivani, edit.	2004	Kathmandu.

19.	हरिकान्तलाल दास	सप्तरी जिलाका ऐतिहासिक गढीहरु	वि.सं. २०६७,	साझा प्रकाशन।

Coins of Mithila

संख्या	लेखक	ग्रंथ तथा लेख नाम	ई. अथवा वि. सम्वत्	प्रकाशक
25.	P.L. Gupta	Coins of India (PM coins of Gorhoghat), coins of Mithila	2010 (pp.167-168_	Delhi
26.	L. Petech	IL Missionari Italiani nel Tibet (For coins representing the lybrinth of simaraongarha).	1952-53	Roma, Vol IV Nepal, P. 13
27.	Dr U. Thakur,	History of Mithila (Coins of M. Tughlaka with the Mint name of Tughlakpur-urf Tirhut, PP. 281/-84)	1956	Darbhanga
28.	H.N. Wright	The Sultans of Delhi, their coinage and Metrology	1925	Oxford, P.159
29.	Prof. R.K. Chaudhary	The Karntas of Mithila	1954	BORI, Vol-35, P. 120
30.	P.K. Acharya	Mansara silpasastra (for PH. coins of Purnia)	1923	Allaha bad
31.	T.N. Mishra	Catalogue of coins in the national (for PM coins of Bhediary) Museum. Bheriary Excavations.		Chhawani Museun, Nepal.
32	T.N. Mishra	The Kushan Coins from Rangapur		Ancient Nepal No- 137
33.	भरतसिंह उपाध्याय,	बुद्धकालीन भारतीय भूगोल	१९९१	प्रयाग
34.	राधा कुमुद मुखर्जी (हिन्दी अनु. वासुदेव अग्रवाला)	हिन्दु सभ्यता	१९६५	दिल्ली
35.	R.C. Majumdara Ed.	The Age of Imperial Unity	1968	Bombay

vvv

मैथिली लोकगाथाक नेपालीय सन्दर्भ : स्थिति ओ संरक्षण

✍ डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन

मैथिली लोकगाथाक सृजन सांस्कृतिक मिथिलाञ्चलक भौगोलिक, ऐतिहासिक, संक्रमणकालीन उत्सवधर्मिता एवं लोकानुरञ्जनक परिवेशमे भेल, जकर शाब्दिक अभिव्यक्ति गाथागायनसँ पूर्व 'बन्हौन' ओ 'भगैत'मे भेल अछि। 'बन्हौन' वस्तुतः दिकपति वन्दना अछि, जाहिमे चारो दिशाक लोकमान्य दिकपति एवं 'भगैत'मे मान्य देवी-देवताक स्तुतिगानसँ एकटा आध्यात्मिक भावभूमिक सृजना होइत अछि । 'लोक' ओ 'शास्त्र'मे मिथिलाञ्चल संस्कृतिक जे सीमांकन भेल अछि ओ सामान्यतः निम्नवत मान्य अछि - उत्तर हिमालयक पाद प्रदेशमे कोशीसँ पश्चिम, गण्डकसँ पूर्व एवं गंगासँ उत्तरमे अवस्थित प्राचीन विदेह जनपदक राजधानीनगर मिथिला आइकाल्हि सांस्कृतिक मिथिलाञ्चलक नामे ख्यात अछि। (मिथिला की लोकसंस्कृति, संपा.डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा, २००७ ई. पृ.२३)। एहिमे लोकजीवनक लौकिक ओ वैदिक संस्कृतिक समाहार 'लोकवेद'मे द्रष्टव्य अछि। लोकक अवधारणा एकटा अटल ओ अनन्त सागरक शदृश अछि जाहिमे कालक्रमें विभिन्न संस्कृतिसबहक समावेश होइत ओ सांस्कृतिक महासागर बनि जाइछ ।

मिथिलाञ्चलक लोकसंस्कृतिक शाश्वत स्वरूप मैथिली लोकगाथासबमे स्पष्टरूपैं देखल जाइछ - 'उत्तर जे नेपाल पुजलियै दच्छिन गंगाधार ।' नेपालक हिमालयक पर्वत-श्रृंखला सदिखन हमर उत्तरी सीमतक प्रहरी बनल छथि। गौरीशंकरक अधिष्ठाता शिव हमरालोकनिक इष्ट ओ आराध्य बनल छथि। शिव-पार्वती एहि भूभागक लोकजीवनक लेल आदर्श दम्पति ओ कल्याणकारी देवता मानल जाइत छथि। मुदा कतहु-कतहु उत्तरक दिकपालक रूपमे पांचो पाण्डव भीमसेन मानल जाइत छथि। मधेसक थारू, दोनवारादि एवं पहाड़क नेवार, किरातादि लोकनिमे सेहो ओ लोकदेवताक रूपमे मान्य छथि। मोरंगक थारू लोकगीत (प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, विराटनगर, नेपाल, १९६८ ई., पृ.६९)मे अंतःसाक्ष्य एकर उदाहरण अछि -

१. उतराखण्ड मोरंगमे राजा भीमसेन बसैये ।

कञ्चनगढ़ जे महल दियौलकै ।

२. उत्तरहिँ बान्हौं पाँचो पाण्डो भीमसेन,
दछिनहि गंगा हनुमान ।

३. उत्तरहिँ खण्ड भीमसेन भोमरा, होई दहिन मोर ।
जइसन गंगा माता निरमल नीर,
तइसन भीमसेन वचनक धीर ।

४. आगू आगू भीमसेन पाछू गरोसिंह,
भीमसेन छथि चिन्हये कोय ।

५. उत्तर खण्ड हे गे बहिनिया बन्हियै राजा गे भीमसेन,
दछिन खण्ड हेगे बहिनिया बन्हियै गंगामे हनुमान ।

मिथिलाञ्चलमें उत्तरके दिग्पति भीमसेनक पूजा मधेसके थारू, दोनवार ओ पहाड़क नेवारसभमे समान रूपसँ होइत अछि। कतहु पाण्डुपुत्रक रूपमे तँ कतहु सप्तरीक प्रतापी राजा भीमसेनक रूपमे, जातऽ ओ सात सेहो पहरुक प्रधानक रूपमे सलहेस सेवारत छलाह। लोरिक मनियारक गाथाक बन्हौनमे उत्तरक धौलागिरि पहाड़क बन्दना कएल गेल अछि - 'उत्तर पैसिके बान्है छी गे मैया, धौलागिरि गै पहाड़ ।'

सतीशचन्द्र झाक (लोकदेवता भीमसेन, मिथिला मिहिर, पटना, मार्च १९८२ ई.पृ.१५ ६) अनुसार महाभारतक पाँचो पाण्डव भीमसेन, नेपालक श्रुतिकथाक एगारह सओय पहाडीक राजा भीमसेन ओ पकड़ियाक राजा भीमसेनसभकेँ एके मानलनि अछि, जकर समय छठम-सातम शताव्दी मानल जा सकैछ। मुदा महाभारतक भीमसेनक कथा नामसम्यक कारणे मिज्झर भऽ गेल अछि। नेपाली श्रुतिकथाक अनुसार भीमसेन हिमालयक वर्फमे खसि वेहोश भऽ गेल छलाह, गुरु गोरखनाथक परिचर्यासँ ओ स्वस्थ भऽ पहाड़ी क्षेत्रक राजपाट सम्हारलनि। ओ नरबलि प्रथाकेँ समाप्त कऽ, भैंसाक बलिक प्रवर्त्तन कएलनि। आइयो राजा भीमसेनकेँ भैंसाक वलि चढाओल जाइछ। डा. मणिपद्म सलहेसक आश्रयदाता राजा भीमसेनकेँ छठम-सातम शताव्दीक मानने छथि। मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कविगोष्ठी, कोलकाता, २००६ ई.)। सती विहुलाक गाथामे हिनका 'बड़ा भीमसेन' कहल गेल अछि।

सांस्कृतिक मिथिलाञ्चलक पूर्वी सीमा कोशी ओ पश्चिमी गण्डक अछि। पूर्वी सीमाक दिक्पाल उगैत सूर्यकेँ मानल गेल अछि मुदा पश्चिमी झापाक दिकपति मीरा सुलतानकेँ मान्यता छैक। सूर्य तँ पूर्वाञ्चलक आकाट्य दिकपति छथि, किन्तु मिथिलाञ्चलमे इस्लामक प्रवेश पश्चिमसँ

भेने मीरायणक गाथा नायक मीरा सुलतानक पराक्रमक कारणे पश्चिमक दिकपति मानल गेलनि। सांस्कृतिक संदर्भमे पराक्रमी मीरा सुलतानक प्रभुत्व एवं लोकदेवता कारीख पँजियारक सँग आत्मीय सम्बन्ध रेखांकन योग्य अछि। सूर्योपासक कारीख पँजियारक गहवरमे मीराक लोकपूजा देबाक चलन अछि, जेनाकि गनीनाथक थानमे लाल खाँक। सांस्कृतिक संक्रमणक एवं समन्वयक ई ज्वलन्त उदाहरण बनिगेल अछि। गंगा तँ दक्षिणी सीमान्तक देवी छथि। मुदा सुगौली संधिक (१८१६ ई.) बाद सांस्कृतिक मिथिला विखण्डित भऽ दू देशक बीच बँटि गेल - उत्तर मिथिलाञ्चल (नेपाल) एवं दक्षिण मिथिला (भारत) हमर विवेचनक आधार अछि उत्तर मिथिला जे नेपालक अंतर्गत मोरंग-झापासँ लऽकऽ रौतहटधरि पसरल अछि। बन्हौनकेँ लोकगाथामे उएह स्थान प्राप्त छैक जे महाकाव्यमे मंगलाचरण अथवा नाटकमे नान्दीक मानल जाइछ।

नेपाल ओ भारतक बीच सुगौली संधिक कारणे मूल मिथिलाञ्चलक किछु महत्वपूर्ण स्थल सब आर-पारमे बँटिगेल तथापि हमरालोकनि साझा संस्कृतिकबलेँ निरन्तर प्रगतिशील बनल छी, जकरा साझा संस्कृतिक नाम देल जा सकैत अछि। मैथिलीक अधिकांश गाथा कोनो ने कोनोरूपेँ नेपालसँ सम्बद्ध अछि। राजा सलहेसक गाथाकेँ सर्वप्राचीन मानल जाइत अछि। एहि गाथाक स्थलसब एकटा मोकामाकें छोड़ि सबटा मोरंगसँ लऽ सप्तरीधरि विश्रृंखलित अछि। दीना-भद्रीक गाथा ओ रइयारणपालक गाथा सप्तरीसँ एवं राजा धनपालक गाथा मोरंगसँ सूत्रबद्ध अछि। आब क्रमशः एक एक गाथासँ सम्वद्ध स्थलसभक भौगोलिक अवस्थितिक अनुशीलन आवश्यक अछि।

राजा सलहेसक गाथा :

सलहेसक गाथामे सलहेस स्वयं कहैत अछि - 'महिसौथा हमर गादीघर लगैय' ।..... अर्थात गढ़ महिसौथा राजा सलहेसक राजगादी स्थल अछि। हुनक जन्म एहिठाम भेल छलैक। महिसौथा लहानसँ २० कि.मी. दक्षिण-पश्चिम दिशामे अवस्थित खण्डहरमे बदलिगेल अछि। सिरहाक सलहेस स्थान आई लोकआस्थाक केन्द्र बनल अछि। प्रतिवर्ष एहिठाम नववर्षक अवसरपर (वैशाख संक्रान्ति) विशाल मेला लगैत अछि। सलहेसक गहवर गोलाकार गढ खाईसँ घेरायल अवस्थामे अछि। गहवरक गर्भगृहमे हाथीपर सवार राजा सलहेस, आश्वारोही मोतीराम ओ वुधेसर दुर्घर्ष मल्ल चूहर, फुलडलिया लेने कुसमा ओ दोना मालिन एवं द्वारपर गरजैत बाघ। अर्थात गहरवरमे राजा सलहेसक देवकूलक साक्षात दर्शन कएल जा सकैछ। एहि

अवसरपर राजा सलहेसक गाथा गान, ओ नाचसँ लोकानुरञ्जन होइत अछि।

डा.मोतीलाल यादव (सलहेस गाथाको नेपालीय भौगोलिक परिवेश, सिंहावलोकन, जनकपुरधाम नेपाल), २०४६ वि., पृ.४८-६१)क अनुसार गाथाक भौगोलिक परिवेश पर्वतीय ओ समतल भूभागक वन, पर्वत, शालवन, नदी-चौर, सरोवर-पोखरी आदिक अन्तर्गत तरेगना (गढ) पहाड़, उलंगी पहाड, सीताकुण्ड पहाड़, कमला ओ गंगा, मानिक दह, पड़वा पोखरि, गढ़ महिसौथा, छोपहा चौरी, त्रिवेणी (कमला-वैजनी नदीक संगम), सत खोलिया पहाड़, कोकचिया फुलवाड़ी, पकड़िया, पतारिक पोखरि, मोरंग आदिक वर्णन भेल अछि। एहि भूभागक सर्वेक्षणात्मक अध्ययनसँ ई प्रमाणित होइछ जे ओ वन-पर्वतीय क्षेत्रक गाथानायक छलाह। एहि गाथाक सृजन मूलतः मोरंग (मोरंगिया सलहेस)मे भेल अछि, जकर विस्तार सम्पूर्ण तिरहुत्र क्षेत्रमे भेल। आइ राजा सलहेसक गाथासँ जुड़ल गढ़ महिसौथा, मानिक दह, ओ कोकचिया फुलवाड़ी सर्वाधिक चर्चित ओ जीवन्त क्षेत्र बनल अछि। मानिक दह क्षेत्रक पहाड़ी ढलान क्षेत्रसँ हम स्वयं डा. भुवनेश्वर गुरमैताक सँगे बहुतरास एन.वी.पी.क पात्रखण्ड ओ मानकादि प्राप्त कएने छलहुँ जकर स्थानीय (सिरहा) कालेजमे संरक्षणार्थ दऽ देल गेल। एहि पुरातात्विक उपलब्धिसँ क्षेत्रक प्राचीनता ई.पू.धरि पहुँचि जाइछ।

गढ़ महिसौथाक भग्नावशेष सम्प्रति सिरहा जिलान्तर्गत पड़ैत अछि। गढ तरेगनाक राजा महेश्वर भण्डारीक भग्नावशेष मानराजामे अवशिष्ट अछि, गाथानुसार कुसमा दोना आदि चारि बहीन मालिनसभ महेश्वर भण्डारीक बेटी छलीह। लहानसँ चारि कि.मी. दूर राजा सलहेसक फुलवाड़ी आइयो प्राकृतिक वनकरूपेँ उपलब्ध अछि, फुलवाड़ीक भितर कुसमा मालिनक गहवर, राजा सलहेसक लोकमूर्ति ओ हारम नामक वनवृक्ष दर्शनीय अछि। त्रिवेणीक संगम राजा सलहेसक बहीन वनसप्ती ओ शैनीराजक प्रेमकथाक स्मरण दिअबैत अछि तँ सतखोलिया सलहेसक भागिन करिकन्हाक जन्मस्थल अछि, सलहेसक फुलवाड़ीस्थित हुनक गहवरक पुजारी दोनवारलोकनि छथि। दोनवार अपनाकेँ क्षत्रीय (भूमिहार) कहैत छथि। गढ़बनौली द्रोणवारेश्वर पुरादित्यक वासस्थल मानल जाइछ।

डा. ग्रियर्सन ओ डा. पूर्णानंद दासक मतानुसार पकड़ियाक राजा भीमसेनक प्रहरी प्रमुख छलाह सलहेस। डा. मणिपद्म पकड़ियाक राजाक नाम मानचंद कहने छथि। एहि राजक विस्तार चौदह कोसमे छल। राज भवन क्षेत्रकेँ केवल गढक ओ कंचनागढ़ नामे जानल जाइछ। गाथाक

अंतःसाक्ष्यक अनुसार पकड़ियागढ उत्तराखण्ड मोरंगक पर्वतीय क्षेत्रमे छल। 'मेचीदेखि महाकाली'मे एकरा सिरहा जिलान्तर्गत भदैया ग्रामपंचायतक अंतर्गत कहल गेल अछि। एहि क्षेत्रक कमल दह ओ मानिक दह गाथासँ सम्वद्ध स्थल अछि। वस्तुतः लहानसँ दस कि.मी. उत्तरमे पहाड़क तलहरीमे अवस्थित कंचनगढ़मे राजभवन ओ पकड़ियागढ़मे हुनक राजधानी छलनि। एहि पकड़ियाक तीनदिस पहाड़ ओ एक दिस मैदान अछि। एहिठामक एकटा मंदिरमे राजा सलहेस ओ राजा कुलेश्वरक अश्वारोही मूर्ति लोकपूजित अछि। मोरंगराज हिनपत (हिन्दूपति) अर्थात महेश्वर भण्डारीक पुत्री दोना मालिनक काम्यपुरुष सलहेस छलाह। मोरंगक तरेगनागढ ओ पड़वा पोखरीक अंतःसाक्ष्य गाथामे पाओल जाइछ। राजा सलहेससन गाथानायकक देशप्रेम प्रेरणास्पद बनल अछि। महिसौथा बाघगढ, योगिनी गुफा ओ पकड़ियाक किलासबक सम्बन्ध नेपालक भूभाग थिक। गाथा चारि किलामे विभाजित अछि।

दीना-भद्री :

नेपालक मधेससँ उद्भूत दोसर गाथाक नाम थिक दीना-भद्री। ओ जोगिया जाँजरक माइ निरसो ओ पिता कालूक सहोदर पुत्र छलाह। जोगिया जाँजर सप्तरी जिलाक एकटा गाम अछि, जाहिठाम ओ क्षेत्रीय स्वेच्छाचारी सामंत कनक सिंह, जोरावर सिंह ओ दुर्धर्षमल्ल गुलामी श्रमशोषण ओ यौन शोषणक विरुद्ध संगठित रूपमे प्रतिकार कएलनि एवं सभकेओ कालांतरमे मारल गेलाह। एहि विजयक उपलक्ष्यमे ओ लोकनायक बनि गेलाह। एक दिन हिरीया तमोलिन एवं जिरीया लोहनीनकेँ ओ नदी स्नानमे डुबऽसँ बचालेलनि। तहियेसँ ओ हिनक काम्यपुरुष बनि गेलाह। कालान्तरमे दुनू भाइ हिरीया-जिरीयासँ विआह कऽ लेलनि। मुदा जोरावर सिंह दीना-भद्रीक कनियाँसभक डोली रोकिलेलनि यौन शोषणक लेल। प्रतिकारमे भीषण युद्ध ठनिगेल एवं जोरावर सिंह मारल गेल। गाथामे वर्णित कजरा नदी, वराडीहक वथान ओ कटैयावन नेपालक अन्तर्गत पड़ैत अछि एवं कुनौली भारतीय सीमांत क्षेत्रमे पड़ैत अछि। एहिसँ पहिने ओ बेगारीद्वारा श्रमशोषक कनक सिंहकें अपन प्रतिहारसँ पराजित कऽ देने छलाह। एहि लोक-कल्याणकारी कृत्यसँ ओ मुसहरलोकनिमे लोकदेवताक रूपमे सम्पूजित छथि। दुनू भाइ स्वतंत्र चेता छलाह, मुक्त भऽ विचरिनहार छलाह एवं शोषण-उत्पीड़नक विरोधी छलाह। हुनक जीवनगाथा संघर्षपूर्ण अछि। एक दिन ओ अपन मामा बहोरनकसँग कटैयावन सिकारमे गेल

छलाह। एहि सिकारक क्रममे ओ छलसँ मारल गेलाह। फलस्वरूप मनुखदेवा (लोकदेवता)क रूपमे ओ जातीय देवता बनल छथि। हुनक गाथागान ओ मृदंग नाच वेस लोकप्रिय बनल अछि।

नेपालक राजविराजमे दीना-भद्रीक मूल गहवरमे हुनक तेजस्वी मूर्ति बनल अछि। आई दीना-भद्रीक मैथिली गाथासँ सम्बद्ध जोगिया जाँजर सप्तरी जिल्लान्तर्गत एवं कटैयावन भारदह क्षेत्रमे अवस्थित अछि। गाथासँ सम्बद्ध कुनौली मात्र सीमान्त क्षेत्रक भारतीय भूभागमे पड़ैत अछि।

राजा धनपाल :

नेपालक धरतीसँ उदभूत मोरंग जनपदमे राजा धनपालक मैथिली गाथा लोकप्रिय अछि। हमर थारू लोकगीत (विराटनगर, नेपाल, १९६८ई.)मे प्रकाशित गीतांशक अंतःसाक्ष्यक अनुसार 'धर्मयुग'मे प्रकाशित 'दोहाय राजा धनपाल'क कथानुसार गाथानायक धनपाल विलासी प्रवृत्तिक छलाह। ओ द्यूत क्रीड़ामे मोगलान (मुगलशासित भारतीय भूभाग)क अहीरा गुडारसँ हारि गेलाह। फलतः ओ राजाक सभटा गाइ-महीस हाँकि कऽ लऽ गेल। धनपालकेँ जखिन एहि बातक पता लगलनि तँ ओ लिलित बछेरीपर ढ़ाल-तरुआरीसँ सज्जित भऽ ओहि अहीरक घर घेरि बन्दी बनौलनि एवं सभटा गाइ-महींस हाँकि कऽ घुरा अनलनि। धनपालक घोड़ा सीमांत (मोरंग ओ मोगलान)क आरपार चकभाडा दैत गंतव्यधरि पहुँचल छल।

सम्पूजित नेपालक मोरंग जिल्लाक अंतर्गत हिनपत (हिन्दूपति) गढमे हुनक हाथीपर सवार राजा धनपालक सम्पूतिज कास्यमूर्ति देखने छलहुँ। कालान्तरमे ओ लोकदेवता बनि गेलाह। हुनक गहवरमे हाथीपर चढ़ल राजा धनपालक माँटिक मूर्ति चढाओल जाइत अछि।

अमरसिंहक गाथा :

मैथिलीक गाथानायक ओ मलाहलोकनिक लोकदेवता अमरसिंह यद्यपि सिउरा (शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर; बिहारक छलाह। ओ बड़ पराक्रमी कमलाभक्त छलाह। कमला मिथिलाञ्चलक लोकमान्य नदीदेवी एवं मलाहलोकनिक गाथा नटुआ दयाल, केवल सिंह, जयसिंह आदिसँ सूत्रवद्ध छथि। ओ बड़ मायाविनी देवी छथि। एहि ब्राह्मण कुमारी कन्या कमलाक रूपलावण्य (सुरुजक जोति कमला करय मलीन, प्रो. मौन, ब्रहमग्राम, दरभंगा, १९७२ ई) केँ देखि मोरंग राजक चमार ई ठानिलेलनि जे ओ कमलासँ विवाह करत। ओ कमलाक प्रवाहपथकेँ अवरुद्ध कऽ विवाहक

ओरिआओनमे लागिगेल ।

एहि बातक जखन जानकारी कमलाभक्त अमरसिंहकेँ भेलनि तँ ओ सैन्य वाहिनीकसँग मोरंगपर चढ़ाइ कऽ देलनि (दे. अमर सिंहक तरुआरि, प्रो. मौन, ब्रहमग्राम, दरभंगा, १९७२ ई.) । ओ दुर्घर्ष मल्ल बदिलाकेँ युद्धमे मुड़ी काटि कऽ ओकरे सिंहद्वारपर टांगि देलनि एवं सभकेँ मारि-काटि कऽ विजयी भेलाह । कमला चिंता मुक्त भेलीह । बदिला चमारक मूलस्थानक खोज मोरंग जनपदमे आवश्यक अछि । ओहि कालमे बदिला चमार ओ बंठा चमार (लोरीकगायनक खलनायक)क मल्ल ख्याति छल ।

दुलरा दयालक गाथा :

दुलरा दयाल ओ कमला नाचक नायक दुलरा दयाल यद्यपि भरौड़ा कमलाञ्चलक (दरभंगा/मधुवनी) छल मुदा हुनकाद्वारा स्थापित कमलाक उद्‌गम क्षेत्रक मैनीमठ गहवरक खोज आवश्यक बुझना जाइछ जे निसंदेह नेपालमे अवस्थित अछि । गाथायी साक्ष्यक अनुसार मैनी मठ गाथानायक दुलरा दयालक सिद्धि साधना यात्रा पथक प्रस्थान विन्दु छल, जाहिठामसँ ओ कमलाके नामे सातटा नृत्य साधना मण्डपक निर्माण कएने छलाह, कमलाक उदगम क्षेत्रसँ लऽकऽ गंगामे विसर्जनधरि । डा. मणिपदम एकरा मूलाधारसँ सहसधारधरिक साधना स्थल मानने छथि । जेना वरुण सिन्धुक मार्गदर्शन कएलनि, भगीरथ गंगाक कएलनि तहिना गीत-गाथायी परिवेशमे दयाल सिंह कमलाक एवं माधोसिंह भुतही बलानक मार्गदर्शन कएलनि । दयाल सिंह अपना युगक सिद्ध नर्तक एवं महान सार्थवाह छलाह । कमला मिथिलाञ्चलक गंगा छथि । अतः मैनीमठ गहवरक सधान नेपालक कमलांचलमे होबाक सम्भावना बढ़ि जाइत अछि ।

एहि मैनी मठ गहवरक सम्बन्ध मैथिलीक गाथानायक जयसिंहसँ सेहो अछि । शैशवकालेमे कमला जयसिंहकेँ अपना गहवरमे मंगवालेलनि मालिनक हाथे । मुदा ओ पराक्रमी वालक कमलाक वंधनकेँ काटि मुक्त भऽ गेलाह । एम्हर पता लागल जे जयसिंहक पिता वीरवल सहनीकेँ कमला छलसँ बन्दी बनाकऽ मैनी मठ गहवरमे वालासिंह सिपाहीक हाथे मंगवा लेलनि । एहिसँ क्रुद्ध भऽ जयसिंह ओहि गहवरकेँ तोड़ि दैत छथिन । अतः मैनीमठ गहवरक खोज आवश्यक अछि, जे कमला कातमे दक्षिण मुँहे बनल छल, जाहिमे चाननक चौखटि केवाड़पर मुन्ना माछक आकृतिसब उत्कीर्ण छल । ग्रीककालीन विश्राम गृह छल मैनीमठ गाथाक देवी नायिका कमलाक । जयसिंह मोरंग जा कऽ एक चुटकी भस्मसँ हावाक सेनाकें भस्मीभूत कऽ देलनि ।

लोरिकाइन :

वीर ओ श्रृंगाररससँ ओतप्रोत लोरीकाइनक गाथानायक लोरिक मनियार अपना युगक वीर पराक्रमी ओ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध सतत संघर्षशील रहैत छलाह । एहि गाथाक आठम खण्ड भैरवी डा. मणिपदमकेँ नेपालक एकटा संन्यासीसँ प्राप्त भेल छलनि जे ‘अनंग कुसमा’क नामे प्रकाशित अछि । आलोच्य गाथा मिथिलासँ छत्तीसगढ़धरि ओ मुल्ला दाउदक चन्दायनसँ मणिपद्‌मक लोरिक विजयधरि चर्चित बनल अछि । गाथाक दुसाध राजा हरबा-बरवा हावीगढ़क युद्धमे लोरिकसँ पराजीत भऽ गेलाह । हुनक प्रेयसी दुइवी-मुहवीक नामे पोखरी मधेसक दुहवी नामक बाजार ओ सिलहरक अखाड़ाक वर्णन उपलब्ध अछि । डा. रवीन्द्रकुमार चौधरीक अनुसार (लोरिक लोकगाथाक भौगोलिक परिवेश, भागलपुर संगोष्ठीमे पठित २००९ ई) लोरिकाइनमे वर्णित सियहर अखाड़ा वीरगंज (नेपाल)सँ पचीस कि.मी. पश्चिम-उत्तरमे अवस्थित अछि । राजा महुअरि एहि अखाड़ाक अधिपति छलाह । एहि सैन्य केन्द्रमे चौदह सय योद्धा रहथि, जकर सरदार रहथि गजभीमल । राजा महुअरि एकटा षड़यंत्रक अंतर्गत लोरिककें गजभीमलक ओहिठाम पढौलनि । मुदा एहिमे ओ असफल भेलाह । लोरिकाइनमे हरबा-बरवाकेँ हावी डीहक राजा कहल गेल छनि ।

रइया रणपाल :

मैथिलीक गाथा रइया रणपालक गाथानायक रणपाल क्षेत्रीयकुलक वीर किंतु प्रेमिल व्यक्तित्व छलाह । ओ राजन्य छलाह एवं हुनक सासुर घाटमपुर छल । हुनक विवाह घाटमपुरक राजकुमारी यक्षोमतीसँ भेल छलनि । रणपालक प्रेयसी गाँगो गोढ़िनक गाथामे मिथिलाक सीमांकन भेल अछि । तदनुसार पूर्वमे पुर्णिया (कोसी), पश्चिममे भगह, दक्षिणमे गंगा ओ उत्तरमे सातो खण्ड पहाड़क बीचक भूभागक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी निषाद कन्या गांगो छलीह (डा. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली लोकगाथा विवेचन, पटना, २००७ ई.) ‘कोसी से पछिम हे गाँगो, कमलासे पूर्व, गाँगो सन तिरिया नहि कोइ ।’ गाथाक अंतःसाक्ष्यक अनुसार रइया रणपालक रणझम्पा घोड़ी ओ निषाद सुंदरी गाँगो तीन सय साठि (सावर सिद्ध) जादूक मालकिन छलीह । डा. मिश्रक कथन छनि रइया रणपाल, गाँगो गोढ़िन ओ गुगुलियाक गाथामे वर्णित गाथानायक रइया रणपाल नेपाल उपत्यकाक रइया रहथि, राजा रहथि । गुगुलियाक रणपाल युद्धकुशल ओ रूप एवं यौवनक लुब्ध राजा

रहथि, जनिक बध भऽ गेलनि। मुदा राजा रणपाल अन्यायी, अत्याचारी ओ शोषक राजन्यकेँ सर्वनाश कऽ लोक कल्याणार्थ युद्ध कएलनि। कालांतरमे ओ निषाद कुलमे लोकदेवताक रूपमे पूज्य छथि। महदैया (सप्तरी)मे हुनक गढ़क भग्नावशेष प्राप्त भेल अछि (दे. आंजुर, जनकपुरधाम, नेपाल)।

नैका वनिजारा :

डा. ग्रियर्सन एहि गाथाकेँ मिथिलाञ्चल ओ नेपाल तराईमे प्रचलित नेवारक गाथाके एके मानैत छथि नैका नेपालसँ चाउर आ तीसी किनि एहि क्षेत्रमे बेचैत छल। गाथाक सोनहदक पहाड़ी कमलपुर राज आदि नेपालमे अवस्थित अछि। गाथा एहि दुइ क्षेत्रकेँ सम्बद्ध कएने अछि - तिब्बतसँ गंगाधरिक क्षेत्रक ओ सुप्रसिद्ध सार्थवाह छल। ओ भेड़ आ बकरीपर नेपालक ऊन, सोन, नोन, जड़ी-बूटी, तेजपात, शिलाजीत, आदि अनैत छल। (लोक गाथा विवेचन, राजेश्वर झा पटना, १९७४ ई.)

कारिख पाजियारक गाथा :

मैथिली लोकगाथा कारिख पँजियारक गाथानायक कारिख सूर्योपासक छलाह। हुनक पिता ज्योति पँजियार एवं हुनक पुत्र कामदास सभकेओ सूर्योपासक छलाह। मैथिली गाथा गीतक नेपालीय संदर्भ, (वैदेही, दरभंगा, मार्च १९८८ ई.), डा. रामप्रवेश सिंहक लोकायत और लोकदेवता (मुजफ्फरपुर ई.) ओ डा. महेन्द्रनारायण राम (मैथिली लोकमहागाथा कारिख पँजियार, खुटौना, मधुवनी, २००८ ई.) परौलकेँ (परौल चौर) गाथानायकक मूल भूमि मानल जाइछ। आलोच्य स्थान जनकपुर (नेपाल)सँ प्रायः दस पन्द्रह कि.मी. पश्चिममे अवस्थित अछि। एहिठाम ज्योति ओ कारिख पँजियारक मूल गहवर अवस्थित अछि। एहि क्षेत्रक लिकमावती, अपरावतिक कर्मभूमि ओ अमरितावतीक लीला भूमि सूरजाहा सम्प्रदायक माननिहार लोकसभक धर्मस्थलक रूपमे मान्य अछि।

नेपालक उसराडीह परौल क्षेत्रक दोसर प्रमुख स्थान अछि, जाहिठाम ब्राह्मण वेशीइन्द्र ज्योतिक घमंड तोड़वाक लेल श्राप देने छलथिन। ज्योति बारह वर्षधरि दीव्रा भीड़ (वाल्मीकि) वनि गेल छलाह, जनिक उद्धार तेजस्वी पुत्र कारिख कएलनि जेना योगीराज मच्छन्दरक उद्धार गोरखनाथ कएने छलाह। ज्योति केदली वनमे दीव्रा भीड़ बनल छलाह। केदलीवन प्रयाण करैत मां लिकमावती एहि केदलीवनवासक पुष्टि कएने छथि 'हमरा लिखल जे अम्मा, केदलि वनवास।' सैराधार नेपालक सीमान्तर्गत पड़ैत अछि। एहिठाम ओ सैराधारमे स्नान कऽ एहि धारक किछेरमे धर्मराज (सूर्य) क गहवरक स्थापना कएने छलाह, जकरा वली मुहम्मदक पुत्र मीरा सुल्तान नष्ट भ्रष्ट कऽ देलनि। मुदा अपन वल विक्रम एवं पौरुषक चमत्कारसँ ओ धर्मक रक्षा कएलनि। फलतः मीरा सुलतान कारिखक अनुगत भेलाह। धार्मिक सद्भावक ई विलक्षण उदाहरण अछि, मीरा सुलतानकेँ उत्तरक दिकपाल सेहो कहल जाइत छनि।

कारिख पँजियारक गाथामे नयनमा पनमा योगिनसभक आतंक, मायाक बाजार, कालीदहक विशेष चर्च, सेन्धुवन पहाड़ ओ पर्सावटियामे राजा गोनरक राजधानी, अंगुलीदती नदी, नारायणपुरक वैजूनाथ कुम्हार, उदयपुरक गोविन्द पँजियार, विजयपुरमे अपरादतीक नैहर आदिक उल्लेख भेल अछि, जे भारत-नेपाल सीमांतक आर-पार पसरल अछि। एहिमे सेन्धुवन पहाड़ नेपालक अन्तर्गत अबैत अछि। एहि पहाड़पर अन्हे गुआरक गोपालन संस्कृति उत्कर्षपर छल। 'सेन्धुवन पहाड़मे वसैये अन्हेरवाट गुअरवा नै रौ। ओहे चरवै सोना लाख गाय। '...... ओ कारिख गाथाक एकटा महत्वपूर्ण पात्र छथि। अमरितावती (कारिख पँजियारक पत्नी) वसविरियाक राजा गोनरसिंहक बेटी छलीह।

लवहरि-कुशहरिक गाथा :

लवहरि-कुशहरि गाथाक सृजन भूमि निसन्देह भारत-नेपालक सीमांत क्षेत्र वाल्मीकिनगरक वाल्मीकि आश्रम अछि। महंथ धनराजपुरी वन प्रांतरमे अवशिष्ट वाल्मीकि आश्रमकेँ खोजि निकाललनि। सीता एहि आश्रमक वनवासकालमे लव ओ कुशसन तेजस्वी पुत्र द्वयकेँ जन्मदेलनि। अतः लवहरि-कुशहरि जानकी चरितक उत्तरगाथा बनिगेल। भवभूति एहि कथाभूमिकेँ उत्तर रामचरितमे विन्यस्त कएलनि। 'धर्मायण' (पटना) ओ मैथिली लोकगाथाक साजिक संदर्भ'मे हम एहि सम्वन्धकेँ विस्तारसँ विवेचित कएने छी। वाल्मीकि सत्ते कहने छथि -'जहियाधरि धरतीपर पहाड़ ओ नदी रहत, ताधरि रामकथाक पसार होइत रहत।' लवहरि-कुशहरिक वैष्णवधर्मी संदेश एहि प्रकारक अछि - "फाटू-फाटू धरती माता ! पाताल जयवै आब यौ।... ओहिठाम जे रामके विरोग बहुत भऽ गेल आब यौ।....जै जै बोलू सीताराम।"

बाल्मीकि आश्रम क्षेत्रक सर्वेक्षण क्रममे एकटा घसकटनीसँ सुनल ई उक्ति यक्ष प्रश्न बनि गेल-"ओ (राम) वन गेलन तँ तोहू वन गइलू। तू (जानकी) वन आइलू त ओ नहि अएलाह ?" अतः वाल्मीकि आश्रमक

परिवेशक संवेदना मरल नहि, आइधरि जीवन्त बनल अछि, लवहरि-कुशहरि'क कमलदह (नगरक्षित), लवहरिक उत्पीड़न, कुशहरिक अगिनवाण, श्री रामक विशाल सेनाक सँग भीषण युद्धमे शाल-विशालक गर्दन उच्छेद, अश्वमेध यज्ञक घोड़ा बालीकरण ओ नागरक्षित कमल दहक रक्षक वधानागकें वंदी बनौनाइ एवं जानकीक धरती प्रवेश आदिक कर्मभूमि बनल अछि नेपालक वाल्मीकि आश्रम। एहिठामक एकटा शेडमे वैष्णवधर्मी ऐतिहासिक प्रस्तर मुर्तिसब एवं गुप्तकालीन स्थापत्यवशेष दर्शनीय अछि।
अन्ततः मिथिलाञ्चलक मैथिली लोकगाथाक मूल यद्यपि लोकमे पसरल परम्परित गाथासबक विकासक्रमक सर्वेक्षणसँ ई स्पष्ट भेल जे एहि आख्यानमूल गाथाक विकास लोककथा ओ लोकनाचक रूपमे भेल जे जातीय परिधिसँ क्रमशः मुक्त भऽ सर्वजातीय परिवेशमे पसरिकऽ गाथानायक लोकदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। हुनक थान ओ गहवर सब लोकतीर्थ बनिगेल, जाहिठाम हुनक गाथा गायन ओ लोकनाच आइधरि लोकप्रिय बनल अछि। एकर सृजनकाल छठम-सातम शताव्दीसँ सोलहम सत्रहम शताब्दी अछि। आख्यानक विषयवस्तु पौराणिक, ऐतिहासिक, समसामयिक ओ जनपदीय परिवेशमे अतुस्यूत अछि। कालान्तरमे ओ लोक विषयक प्राधान्य भऽ गेल, फलतः ओ लोकआस्थाक कारणे जीवंत बनल अछि। एक-एकटा मूलगाथा गाथाचक्रक रूपैं विश्रृंखलित भऽ प्रसंग प्रधानताक कारणे खण्डित भऽ गेल जकरा सलहेस-चूहर-रेसमा, सलहेस-कुसमा, ज्योति-कारिख पँजियार, रइया रणपाल-गांगो ओ गुगुलिया, अमर सिंह-बदिला चमार ओ कमला, दुलरा दयाल-बहुरा गोढ़िन, राहवा-भीमल, फेकूराम-कुसमा आदिमे सहजें देखना जाइछ।

आलोच्य गाथा ओ ओकर सांस्कृतिक परिवेश मिथिलाञ्चलक सांस्कृतिक धरोहर गाथासब मैथिली लोकसाहित्यक अमूल्य निधि गाथानायक ओ पात्रसब जातीय ओ जनपदीय आस्थाक केन्द्र बनिगेल अछि। अतः भारत-नेपाल सीमाक आर-पार पसरल गाथासब हमर साझा संस्कृतिक साक्ष्य अछि, जकर संरक्षणक लेल नव पीढ़ि आगाँ आवथि आर ओहिमे निहित ऐतिहासिक, ओ सांस्कृतिक तत्वसबकें प्रकाशमे आनि लोकज्ञानक अनुशीलन करथि, से निवेदित अछि।

स्थिति एवं संरक्षण :

मैथिली लोकगाथासँ संदर्भित भौगोलिक परिदृश्य एवं ऐतिहासिक परिवेशक सौन्दर्यीकृत विकास, सांस्कृतिक लोकोत्सव, थीम पार्क, कला

प्रदर्शनी, आवासीय प्रबंध एवं सचित्र परिचायिका आदिक माध्यमे पर्यटकीय आकर्षण बढाओल जा सकैछ। एहि दृष्टिसँ राजा सलहेससँ सम्बद्ध सिरहा-महिसौथा-कमल पोखरी - राजाजीक फुलवाड़ीकेँ सलहेस परिपथक प्रारूप, बैशाख एक गतेके लोकोत्सवक परम्परित ओ व्यवस्थित आयोजन, सिरहाक महिसौथामे थीम पार्कक निर्माण एवं ओहिमे गाथाक प्रमुख घटनाचक्रक मूर्तिकरण, गाइड वुक (परिचायिका) क प्रकाशन, दिशा ओ दूरी बतबैत मानचित्र आदिलेल नेपालक संस्कृति, वन पर्यावरण आ पर्यटन विभागक सक्रिय सहभागिता आवश्यक बुझना जाइछ। तहिना राजविराजमे दीना-भद्री, मोरंगमे राजा धनपाल एवं मधेसक कमलाञ्चलमे मैनी मठ गहवर कमला मंडलक परिकल्पनाके माध्यमे 'नटुआ दयाल' क गाथाकेँ मूर्त रूप देल जा सकैछ जाहिसँ सीमांत क्षेत्रक साझा संस्कृतिकेँ बल भेटतैक। दयालसिंह कमला भक्त छलाह, कुशल सार्थवाह ओ सिद्ध नर्तक छलाह। तहिना 'लवहरि-कुशहरी' क गाथाकेँ प्रकाश ओ ध्वनिक माध्यमसँ जँ साकार कएल जाय तँ एहिसँ पर्यटन आकर्षणक संभावना बढि जाइछ। एहिलेल जानकी नवमीक तिथिकेँ (जानकी जन्मदिवस) विशेष उत्सवक आयोजन कएल जाऽ सकैछ। जनकपुर चूंकि जानकीक जन्मभूमि एवं वाल्मीकिनगर जानकीक निर्वासनक मान्य भूमि अछि, अतः वाल्मीकिनगरक सर्वांगीण विकासक एकटा पैघ सम्भावना अछि।

vvv

मैथिली लोकगीतक अवस्था

✍ डा. महेन्द्रनारायण राम

लोकगीत एक एहेन मौखिक परम्परा थिक जे मनुष्यमे वंशानुगत क्रमसँ चलि अबैत अछि आ जकर जड़ि मूलरुपेँ सुदूर अतीतमे विद्यमान होइत अछि। अशिक्षित ग्रामीण आ निरीह जनताक भावुक हृदयक संवेदनशीलतासँ फूटिकऽ 'लोकगीत' ओकरा ठोरपर आबिकऽ सुर आ ताल-लयक सँग गुञ्जित होमऽ लगैत अछि।

लोकगीत मूलतः आ सिद्धान्ततः जातीय आ सामुदायिक रचना थिक। एक सर्जक, एक कलाकार, एक व्यक्ति नहि अपितु सम्पूर्ण लोक होइत अछि। समस्त जातिये लोकगीतक उद्भावना आ पोषणक आधार होइछ। लोकगीत अन्ततोगत्वा एक निर्वैक्तिक सामूहिक आ सामाजिक रचना थिक जकर विशिस्ट गुण गेयता अछि।[१]

साधारणतया ग्रामीण जनताक जीवनक जन्मक पहिनेसँ लऽ कऽ मृत्युधरि लोकगीत व्याप्त रहैछ। नेना जन्मपर सोहर गाबिकऽ प्रसन्नता प्रकट कएल जाइछ। दादी आ माए नेनाकेँ 'लोरी' सुनाकऽ सुतबैत छथि। खेलकूदोक समयमे नेना गीत गबैछ। युवकलोकनि प्रेमपूर्वक गीत गाबि स्नेहक अभिव्यक्ति करैछ आ प्रेमिकाकेँ रिझबैत अछि। बिआहक प्रत्येक विधि-विधानक समय स्त्रीगण गीत गाबि सुखद वातावरण उत्पन्न करैत अछि तथा हास-परिहास करैत अछि। वर्षाऋतुमे कजरी, फागुनमे फाग आ चैतमे चैतावर गाबि साधारण जन आनन्दित होइछ। वयोवृद्ध सेहो निर्गुण गाबि अपन मोनकेँ शान्त करैछ। स्पष्टतः लोकगीत जीवनमे घुलल-मिलल अछि।

लोकगीत मनोरञ्जनक सँग-सँग शिक्षो दैत अछि तथा परिवार, समाज आ देशक प्रति कर्तव्य बोध कराबैछ। एतबे नहि अपितु लोकगीतकार वीर पुरुष आ शहीदक शौर्य आ वलिदानक गौरव गान कऽ देश-प्रेमक भावना जगबैछ। हमरालोकनिक देशमे स्वाधीनता-संग्रामक क्रममे लोकगीतकार अपन तेजस्वी एवं देशभक्तिपूर्ण गीत गाबि-गाबिकऽ हजारो-हजार व्यक्तिमे राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न कएने छलाह।[२]

लोकगीतक अनेक पाठ्यान्तर भेटैत अछि। तएँ ई अनुमान स्वाभाविक जे मूल रूपमे कोनो ज्ञात-अज्ञात व्यक्तिद्वारा रचित भेलाक बाद आन व्यक्तिलोकनिद्वारा ओहिमे संशोधन-परिवर्द्धन कएल जाइत रहल अछि।

वास्तवमे लोकगीतकारलोकनि रचनासबकेँ लिखिकऽ रचनापर मौखिक रूपसँ सेहो प्रस्तुत अथवा प्रचारित कएने होइताह/होएतीह।[३] एहिप्रकारेँ मौखिकताक आधारपर लोकगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकप्रिय होइत चलि अबैत रहल अछि।

एकदिस जतऽ जर्मनीक विलियम ग्रीम लोकगीतक समारम्भक विषयमे सामूहिक विकास तथा उत्पतिक प्रतिपादन कएलनि तऽ दोसरदिस एकर खण्डन रुसी विद्वान सोकोलोव एहि उक्तिसँ कएलनि अछि 'कोनहु कृतिसब एहेन कहियो नहि रहल अछि जनिक कोनहु रचयिता नहि हो अथवा जे सम्पूर्ण जनतेक रचना रहल हो।[४] एहितरहेँ ए.एच. क्रेय, डा.सत्येन्द्र, डा.जवाहर लाल हाण्डू ओ इनसाइक्लोपिडिया ब्रिटेनिकाद्वारा एकरा सम्बन्धमे अपना-अपनाढंगे व्यक्त विचार महत्वपूर्ण अछि। जतऽ लिखित साहित्यक इतिहास लिखब प्रायः सम्भव होइत अछि, ओतऽ मौखिक हेबाक कारण लोकगीतक इतिहास लेखन असम्भवप्रायः अर्थात अत्यन्त कठीन रहैत अछि। मुदा लोकगीत ओहि वन्य वृक्षक समान होइत अछि जकर जड़ि अतीतकालमे गहीरँ रोपल रहैत अछि आ आहिमे नित नव शाखा, पात आ पुष्प प्रस्फूटित होइत रहैत अछि।[५]

लोकगीत जँ एकदिस कल्पना अछि तऽ दोसरदिस भावना आ रसवृत्ति। एकदिस जँ उल्लास अछि, उमंगक रेशमी इजोरिया अछि, नृत्यक हिलोर अछि, भावुक मोनक अनुहार अछि तँ दोसरदिस जीवनक निषाद-नैराश्यक गहन अनहरिया अछि, घनीभूत पीड़ाक आकुलता-व्याकुलता आ टीस अछि, थाकल आत्माक श्लाघ्य उच्छ्वास अछि।[६]

लोकगीतक महत्व आ उपादेयता असन्दिग्ध अछि। शुक्लजी, हजारीप्रसाद द्विवेदीसँ लऽकऽ डाँ. एलविन, देवेन्द्र सत्यार्थीलोकनिधरि एकर महत्ताकेर विस्तृतरूपेँ विचार व्यक्त कएलनि अछि। द्विवेदी लिखैत छथि- ग्राम्य गीत अपन समयतक वेद अछि। वेद तऽ सेहो अपन आरम्भिककालमे श्रुति कहबैत छल आ ग्राम्य गीतजकाँ सुनि-सुनिकऽ मोन राखल जाइत छल। जाहिप्रकारेँ वेदद्वारा आर्य सभ्यताक ज्ञान होइत अछि, ओहिप्रकारेँ लोकगीतक द्वारा आर्य-पूर्व सभ्यताक ज्ञान भऽसकैत अछि। ईंट-पाथरक प्रेमी विद्वान जँ धृष्टता नहि बुझथि तऽ जोर दऽकऽ कहल जा सकैत अछि जे लोकगीतक महत्व मोहनजोदरोसँ कतौ बेसी अछि। मोहनजोदरोसन भग्न स्तूप ग्राम्यगीतक भास्यक काज कऽ सकैत अछि।[७]

लोकगीतक एक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। वेद परायणसँ ज्ञात होइछ जे विविध-संस्कारक अवसरपर एहिठाम लोकगान होइत छल। पाली

जातक, बाल्मीकि रामायणमे भगवान रामक जन्मक अवसरपर गन्धर्वक मधुर गान एवं नाच, व्यासदेवक श्री मद्भागवतमे श्री कृष्ण जन्मक अवसर ओ पैघ भेलोपर कृष्ण ब्रज रमणीक बीच स्वयं लोकगीत गायन, महाकवि कालिदासक रघुवंश महाकाव्यमे ग्रामीण स्त्रीद्वारा महाराज रघुक यशज्ञान, किरातार्जुनीय एवं माघ महाकाव्यक सँग-सँग प्राकृत युगमे राजा हाल तथा शालिवाहक संग्रह 'गाथा-सप्तशती' ओ महाकवि श्री हर्ष स्त्रीगणद्वारा विभिन्न प्रकारक लोकगीतक उल्लेख अछि। एहितरहैँ विआहसम्बन्धी गाथासबहक उल्लेख परासरक गृह-सूत्रमे भेल अछि। अश्वमेघ, राजसूय जेहन यज्ञक अवसरपर मांगलिक गीत गएबाक प्रमाण अछि। महिषासुर वघक अवसरपर अप्सरासबद्वारा नाचबाक ओ गन्धर्वसभद्वारा गीत-गएबाक उल्लेख एकदिस जँ भेटैत अछि तऽ दोसरदिस कविराज जयदेवक 'गीत-गोविन्द' बंगभूमिके 'यात्रा' नामक उत्सवमे गाओल जाएवला प्रत्येक प्रचलित धर्मगीतक मध्यक उपज थिक। एहितरहैँ कतिपय उदाहरण लोकगीतक परम्पराके दर्शबैत अछि।

अन्यान्य भाषाक लोकगीत सदृश्य मैथिली लोकगीत जनकण्ठक सम्पत्ति थिक तथा श्रुति परम्परासँ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीधरि प्राप्त होइत रहल अछि। मिथिलामे लोकगीतक परिज्ञान सुसंस्कृत होएबाक लक्षण भेटैत अछि। मिथिलाक गीतगाइन महिलालोकनि अनपढ़-अशिक्षित होइतहुँ विभिन्न प्रकारक लूरि-भास आ राग-भासक परिवारिक परम्परित प्रशिक्षण पबैत लोकगीत गानमे पटुता रखैत आबिरहल अछि। एहिठाम लोकगीतक प्रचलन सम्भवतः विदेहवंशी राजक समयसँ अनुमानित अछि। एहिठाम तिरहुत गीत अति प्राचीन अछि आ मिथिलाक तिरहुत नामहिँ सँग प्रादुर्भूत प्रतीत होइछ। सर्वप्रथम संगीतक विभिन्न राग-रागिनीक निर्माण आ विकासक लेल 'सरस्वती हृदय अलंकार हार' नामक कृतिक रचना कएल गेल अछि।[८] प्रसिद्ध गीतकार जयदेव बारहम शताब्दीमे सेहो मिथिलाक गीत परम्पराकेँ बहुत अंशधरि प्रमाणित ओ प्रोत्साहित कएलनि। महाकवि विधापतिक पिता पं. गणपति ठाकुर एहि दिशामे महत्वपूर्ण योगदान देलनि आ 'गंगा भक्ति तरंगिनीक' रचना कएलनि।[९] विद्यापति पदावली स्वयं अपनामे गीतक चरमोत्कर्ष अछि। एतबे नहि मिथिलाक इतिहासमे लोचन कविक नाम सादर एवं सम्माननीय अछि। हुनक 'राग तरंगिनी (१६८५ई.) गीत आ संगीतक स्वयं वैज्ञानिक अध्ययन अछि। स्पस्ट अछि तएँ हुनका' संगीत-शास्त्रक निर्माण करऽ पड़ल हेतनि। हिनके समयमे घनश्याम मल्लिकक तीन सन्तान विद्यापति संगीतक बहुत-बहुत पैघ जानकार छलीह।[१०] वास्तवमे मैथिली लोकगीत वैदिक

कर्मकाण्डक ऋचा-मंत्रक प्रतिस्थानी रूपमे व्यवहारतः प्रशस्त अछि। अतः वेदकालीन संस्कृत ओ सामाजिक आचार-व्यवहारमे अनिवार्य रूपसँ गाओल जाएवला ऋचा, स्तोत्र, साम ओ अन्य लौकिकगानमे मैथिली लोकगीतक उत्स वतमान अछि।[११] एहि सन्दर्भमे गाथा, नाराशंसी, रेम्यक अतिरिक्त ऋतु विशेषमे साम विशेषक गान परिपाटी, निरन्तर श्रमसाध्य व्यावसायिक कार्यमे श्रमहरण ओ रंजक गान प्रचलित छल। परवर्तीकाल प्रवाहमे वैदिक देवताक स्थान लेलनि पैराणिक देव-देवी ओ लोक देवता आ तत्सम्वन्धी धार्मिक ओ भक्ति गीत।[१२] मारुदण्डक उत्तर जीविक रूपमे कबिराहा सम्प्रदायमे निर्गुण प्रमोदक गीत सामूहिक रूपमे उद्भूत भेल। मैथिली लोकगाथामध्य पमारा गौनिहार पमरियाक रूपमे गाथिनक अवशेष भेटैत अछि। झरनी नाच-गान, डोमकच, लगनी, बटगवनीक अतिरिक्त साभगानक किछु प्रमोदकेँ खास-खास ऋतुमे 'शाक्वर-रैवत' नामक साम हेमन्त ऋतुमे गाओल जाइत छल। एकरा फागु, चैतावर, बारहमासा, मलार आदिक रूपमे देखल जाऽ सकैत अछि। एहिकसँग मिथिलाक लोकगीतपर बौद्ध मतक प्रभावसेहो पड़ल।[१३]

यद्यपि कतिपय विद्वानलोकनि मैथिली लोकगीतकेँ विभिन्न वर्गीकरणमे देखि विमर्श कएलनि अछि मुदा लोकगीतकेँ ग्रामजनपदमे सर्वसाधारण लोक जे सहजतासँ बुझि जाए से उत्तम होइत अछि। शास्त्रीयताक विपरीत सहजता, सरलता, आवेग-सम्पन्न ओ बोधगम्य एकर प्रमुख विशेषता थिक।

मुदा वर्त्तमान परिस्थितिमे मैथिली लोकगीतक अवस्था नीक नहि बुझल जाऽ सकैत अछि। नवीन जीवन पद्धति, शहरीकरण, रेडियो, सिनेमा, टी.भी., पाप म्यूजिकसँ मैथिली लोकगीतक अस्तित्वपर प्रहार भऽ रहल अछि। एकर मौलिकता संक्रमित भऽ रहल अछि। जन्म, मुड़न, उपनयन, बिआह ओ मृत्युसँ सम्बन्धित संस्कार गीतक स्थान आधुनिकताक 'डिस्को गीत' लऽ रहल अछि। छठि, सामा-चकेवा, जट-जटिन, झरनी, झिझिया भाओ आदि गीत मात्र मञ्चधरि सिमैट कऽ रहिगेल अछि। महेशवाणी, राधाकृष्ण ओ सीताराम विषयक गीत, देवी, कुल देवता, ग्राम्य देवता, लोक देवता विषयक गीत, मिनती-मनुहारि गीत, गोसाउनिक गीत, भाओ गीत, फगुआ, चैतावर, कजरी, मलार, बारहमासा, छओमासा, चौमासा, झूलन, लगनी, बटगवनी, गोदना, तिरहूति, झूम्मरि, बिरहा, पराती आदि बिलारहल अछि।

एहिठाम किछु गीत दृष्टान्तरूपैँ उधृत करब आवश्यक प्रतीत होइछ जे गीतक मौलिताक सँग-सँग उद्भव ओ विकासदिस इशारा करैछ-

हमर माय-बहिनलोकनि जाँतपर गहुम-मरुवा-मकइ पीसैतकाल गीत

गबैत छलीह । जेना-

घुरी सुतु फिरी सुतु हय ननदोके भइया जी
तोरे घामें भींजल समचोलिया रे की,
एतबे वचन जब सुनलनि ननदोके भइया जी
चली भेलै अपनी जे पुरबे बनिजबारे की ।[१४]

मरुआ उलबऽ कालक गीत-

सासु कहि गेलखिन हे दिलबर एकसेर मरुआ उलबिहऽ हे,
हम दिलबर बिसरि गेलियै चारिसेर मरुआ उलेलियै हे,
सासु कहलखिन हे दिलवर एकगो रोटी पकबिहऽ हे,
हम दिलबर बिसरि गेलियै चारि गो रोटी पकेलियै हे,
सासु कहि गेलखिन हे दिलवर बुढ़वाके सेवा करिहऽ हे,
हम दिलवर बिसरि गेलीयै बुढ़वाके टांग तोडि देलियै हे ।[१५]

-लगनी

एहितरहें ढ़ेकीपरक गीत, धनरोपनी गीत, धनकटनी गीत आदि श्रमापनोदक गीत गाओल जाइत छल मुदा आब जाँत, ढेकी आदिक स्थान धनकुटनी-पीसनी मसीन लऽ लेलक अछि, जकर यान्त्रिक कोलाहलमे लगनी आदि बिलागेल अछि ।

मिथिलामे बाट चलैतकाल बटगवनी गीत गाओल जाइत अछि। विशेषकर कोनो विधि करऽ वास्ते आंगनसँ बाहर जाइत अथवा घुरैतकाल मैथिलानी ई गीत गबैछ। एक गोट बानगी-

चानन बुझि हम रोपल सजनी गे
भऽ गेल सिमरक गाछ सजनी गे
ताहि गामक पहु जागल सजनी गे
चलि भेल पहु परदेश सजनी गे
बारह बरखपर आयल सजनी गे
लाएल कंघी सनेस सजनी गे
ताहि कंघी लए लट हम झारल
रचि-रचि कएलौं श्रृंगार सजनी गे ।[१६]

हमरा ओहिठाम गोदना पाड़ब आ एतद् सम्बन्धी गीत गेबाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि -

उत्तर बनिजसँ जे एलै खोदपाड़नी रे जान
जान बैसि गेलै सासुके दुअरिया रे जान

कहाँ गेली किए भेली सासु बरेतिन रे जान
जान बहार करियौ कोशलके रुपैया रे जान
ऐया खौंकी भैया खौकी सुनरी पुतहुए रे जान
जान कहाँ पैबे कोशलके रुपैया रे जान ।[१७]

-गोदना गीत

ई गोदना गीत अप्रासंगिक तऽ नहि अपितु एकर स्थान 'टैटु' लऽ लेलक अछि। भूमंडलीकरणक प्रभावसँ समुद्री बीचपर विदेशी महिलाकसँग आधुनिक युवक-युवतीलोकनिद्वारा अपन विभिन्न अंगपर एहि तरहक चित्रकारी कएल जा रहल अछि। एहन स्थितिमे गोदना गीतक परिकल्पने व्यर्थ थिक ।

मिथिलाक झरनी गीत कुजड़ा, धुनियाँ, पमरिया, जोलहा आदि जातिक बन्हनसँ आस्ते-आस्ते निकलि अमात, ततमा, धानुक, हलुवाइ, दुसाध आदिक सँग सम्पूर्ण हिन्दु जातिक मध्य पसरि गेल । किछु ठाम दाहाक चारुकात घुमि-घुमिकऽ कतौ जोडी बनाकऽ, कतौ बैसिकऽ, कतौ गोलाकार वृत्त बनाकऽ, कतौ ठेहुनबलें बैसिकऽ बाँसक छीपाठीके चीड़िकऽ एक दोसराक झरनीपर बजारि-बजारिकऽ गाबऽमे आपसी प्रेम आ सौहार्द छल मुदा साम्प्रदायिकताक बिगड़ल ई वातावरणक कारणेँ उत्पन्न आपसी कटूता एहि गीतकेँ विस्मृत केने जा रहल अछि-

हाय-हाय कौने रंग मुंगिया कओने रंग मोतिया
कौन रंग ननदी तोरे भइये हाय ।
हाय-हाय लाले रंग मुंगिया सबुज रंग मोतिया
गोरे रंग ननदी तोरे भइये हाय ।[१८]

मिथिलामे लोरी गीत पालना गीतक सर्वाधिक मधुर एवं मोहक अंग थिक जकर उद्देश्य होइत अछि शिशुकेँ सुतौनाइ, खुशी रखनाइ आदि । लोरीमे शिशुक रुप-गुण वर्णन, निन्नक आमंत्रण, देवी-देवतासँ रक्षाक हेतु मनौती, मंगल कामना, उत्तम चरितादिसँ तुलना, सुन्दर वस्त्राभूषणसँ अलंकृत करबाक प्रलोभन प्राकृतिक पृष्ठभूमि आदि व्यक्त होइत अछि। ई गीत दृस्टक-

आगे निनियाँ बिरहिनियाँसँ
बौआ अएलै ममहर सँ
ममहरमे बौआ की-की खाए
अरबा चाउरक भात
सोरहिया गायक दूध

हाली-हाली खो रे बौआ
जयबै बड़ी दूर
हु अमाके पिआसल बौआ गेल पोखरि
पोखरिक टेंगरा लेल टेंगराय
बोनाक बगुला ढ़ेल छोडाय
आयहें रे बगुला खेत-खरिहान
एक सूप देबै ढेसरिया धान
तेकरे कुटिहें नाम नाम चूडा
बैसि जिमविहें ब्राह्मण पूरा
ब्राह्मण पूरा देल असीस
जिविहें रे बौआ लाख बरीस ।[१]

नेनाकेँ सुतेबाक हेतु गाओल जाएवला ई गीत सेहो दखैल जाऽ सकैत अछि -

चुप रह चुप रह बौआ रे
बाड़ीमे छौ हउआ रे
बाप गेलौए पटना घुमए ले
मैया छौ असगरुआ रे ॥
आरे निनिया आरे आ
बौआलए किछु नेने आ
हाली हाली नेने आ ऽ ।

निम्नांकित गीतमे एक वृद्धा अपन पौत्रकेँ उद्योग एवं वाणिज्यद्वारा उपार्जित धनसँ गृहस्थी बसएबाक उपदेश दैत अछि -

चांगी भरि पूआ उगरलै रे पोतबा
जइहैं हाजीपुर हटिया रे
पैसे-पैसे बेचिहें रे पोतबा
ललका बटुआ भरिहैं रे ।
ललका बटुआ भरिहें रे पोतबा
जइहें कनियाँ उदेसबा रे ।

मिथिलामे सम्वाद-गीतक माध्यमेँ सेहो नेनाकेँ सुताओल जाइत अछि । एहि गीतमे माँछ मारबाक, निकलबाक, रन्हबाक, खएबाक आदि व्यवस्था देखल जाऽ सकैत अछि ।

हे गै बिलैया, कतऽ जाए छै ? माछ मारय ।
कोना मारबेँ ?- छप्पर छैंया ।
कोना आनबेँ ?- टांगि-टुंगि कऽ ।
कोना काटबेँ ?- हँसुआ कचिया ।
कोना रान्हवें ?- छन्नर-भन्नर ।
कोना खपबैं ?- नम्मा चौरा ।
कोना सुतबेँ ?- असरि-पसरि कऽ ।

नेना गीतपर आधुनिकताक असरि फेर एक गोट नमुना एहि ठाम देखल जा सकैत अछि । मिथिलामे परम्परामे ई गीत गाओल जाइत रहल अछि जे खेल गीतअन्तर्गत अछि -

अटकन मटकन-दहिया चटकन
केरा कुरा महागर-जागर
पुरनिक पत्ता हिलै-डोलै
माघमास करैला फूलै
तइपर सबहिक ना' की ?
आमुन गोटी जामुन गोटी
तेतरी सोहाग गोटी
लएह पुत्ता डामर
करह गए कामर
बाँस काटे ठाँइ-ठाँइ
नदी गुगुँआय
कमलक फूल दुनू
अलगल जाए ।
सिंगही लेबह की मुंगरी ??

परिवर्तित गीत -

अटकन मटकन, हार्लिक्स चटकन
लेमनचूस महागर जागर
बिजलीक पंखा नाचए डोल
पाँच बरखपर जनमत फूलय
तइपर सबहिक ना की ?
पटनाक गोटी, दिल्लीक गोटी
मिनिस्ट्रीक सोहागक गोटी
लएह पूत्ता डिप्लोमा
देखइ गऽ सिनेमा
प्रेस छापऽ धाँय-धाँय
रडियो गुगुँआय

मानवक सभ्यता
अलगल जाए
एटम लेवह की पौंड़की ???

ई गीत लोकगीतक अवस्थाकेँ नीकजकाँ दर्शबैत अछि। एहि गीतजकाँ मिथिलामे गाओल जाएवला देवीदेवतासम्बन्धी गीत, ऋतुसम्बन्धी गीत, संस्कारसम्बन्धी गीत, वृत ओ सामयिक पावनि-तिहारसम्बन्धी गीत, शिशुसम्बन्धी गीत, श्रमसम्बन्धी गीतसहित अन्य सब प्रकारक गीतमे ई परिवर्तन देखना जाइछ।

मिथिलामे बिआह संस्कारक अवसरपर मिथिलाक नारी अनेक गीतसब गबैत छथि। एहिठाम बिआह-गीतकेँ केन्द्रमे राखि किछु दृष्टान्त निम्न रूपेण राखल जाऽ रहल अछि-

लगन कुमार गीत -

मुठीयेके डाँर नामी केस गे बेटी
बेटी कहाँके सौदागर नेने जाइ गे बेटी
मुठीयेके डाँर नामी केश यौ बाबू
बाबू यौ सासुके सौदागर नेने जाइ यौ बाबू।

गोंसाइ गीत -

किनकर बीनल काली लाले-लाल बेनीयाँ
किनकर लागल चारु खोल हे
डोमराके बीनल काली लाले-लाल बेनीयाँ
मालिन लगाओल चारु फूल यौ।

विआहक दिन निश्चिन्त भेलापर एवं ओहिसँ पूर्व वरपक्ष एवं कन्यापक्षद्वारा संयुक्तरूपे विआहक निर्णय विधि पूरा मंसाकपश्चात वर एवं कन्या दूनूकेँ अपन-अपन घरमे पसाहनि कएल जाइत अछि अर्थात देहमे अपटन लगाऽ शुभ लग्नक गीत गाओल जाइत अछि। एकरा अपटन गीत अथवा पसाहनि कहल जाइत अछि। एहिठाम अपटन गीत देखल जाए-

सोनेके मलियामे अपटन पीसल
करुआ तेल किलाओल हो अपटन लगाओल

\+ + +

जखन कौशिल्या रानी अपटन पिसथिन
हे दुलारु दुलहा
सखीसब मंगल गाऊ हे दुलारु दुलहा।
कथीकेर अपटन कथीकेर तेल

हे दुलारु दुलहा
सरिसोके अपटन चमेलीके तेल
हे दुलारु दुलहा।

\+ + +

एहि लोकगीतमे आधुनिकताक प्रभाव देखल जाए-

जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीत पसाहिन आइ अछि।
चाचीक हाथमे तेल फुलेल मामीक हाथ कसार अछि।
मौसीक हाथमे अतर सुगंधित, सेन्टो गमकदार अछि।
जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीत पसाहिन आइ अछि।
एहिमे 'चाची', ओ 'सेंट' शब्दपर अधुनिकताक प्रभाव अछि।

वरक परिछन गीत

चलू सखी आजु रघुवरके परिछन चलू हे सखी
सब सखी मिली-जुली परिछन चलू हे सखी
रघुवर लागल दुआरि हे ऽ.................।

\+ + +

परिछन करय हरषि चल सजनी गे।
दुलहा अवध किशोर सजनी गे।

मटकोर गीत

मन होइये हमरा छींतनी से मारितौं
पातर पीया छींतनी लऽकऽ जाए
माटि लाबऽ गेलौं बाबाके पोखरिया
चकमक देवरे लाल।
असलान करऽ गेलौं बाबाके पोखरिया
चकमक देवरे लाल।

अठोङगर गीत

विआह हेतु वर आँगनमे अएलाक बाद वरकसँग आठगोटे बिआहल व्यक्ति मिलि उखरिमे समाठ लऽ धान कुटबाक परम्परा अछि। एहि अवसर गाओल जाएवला गीतके अठोङगर गीत कहल जाइछ-

परम सुन्दर लागे आजुक रतिया
यौ नवेला दुलहा
कुटुने अठोङगरके धान
यौ नवेला दुलहा
कथीकेर उखरि कथीकेर मुसरा

यौ नवेला दुलहा
सोनाकेर उखरि चानीकेर मुसरा
यौ नवेला दुलहा
आठ गोटे धनमा कुटाएब
यौ नवेला दुलहा
ओहिलऽ कंगन बनाएब
यौ नवेला दुलहा ।[२०]

लाबा भुजबाक गीत

विआहक वरियाती जाएसँ पहिने वर ओ कन्या दूनू ओहिठाम धानक लाबा भुजबाक परम्परा अछि। बहिन बहिनोइ अथवा पीसि-पीसा माटिक वासनमे आमक पल्लवसँ लाबा भुजैत छथि आ दुनू ठामक लाबा मिला कऽ बिआह दिन वेदी लग लाबा छिड़िआओल जाइत अछि। लाबा भुजक कालक गीत द्रष्टव्य-

लाबा भुजऽ बैसलिन बहीन सोहागिन हो
हे आनंद भवनमे ।
सोनाकेर लारनि लेलनि हाथ
हे आनंद भवनमे ।
सोनाके सिंहासन बैसलनि बहिन-बहिनोइया
हे आनंद भवनमे ।
सँग लेलनि सिया सुकुमारि
हे आनंद भवनमे ।

लाबा छिड़िआबैत कालक गीत-

दाइ लाबा छिड़िआउ बाउ बीछी-बीछी खाउ
कनियाँक भौजी वरक मैया सँगहि सुताउ
दाइ लाबा छिडिआउ..................।

मड़बा घुमेनाइ कालक गीत

वर जखन आँगनमे अबैत छथि तखन मड़बा घुमलाक पश्चात विध पूरा करैत छथि। एकरा नैना-योगिनक गीत सेहो कहल जाइत अछि। ई विध प्रायः नजरि गुजरिसँ बचेबाक हेतु कएल जाइत अछि -

चारि सखी मिलि चारु कोन ठाढ़
हे सोहाओन लागे ।
डाली विराजे सभक माथ
हे सोहाओन लागे ।

डाली बीचे साँठव पान सुपारी
हे सोहाओन लागे ।
दुलहाके घुमाएब चारु कोन
हे सोहाओन लागे ।
दुलहा घुमि-घुमि मनेमन मुस्काबे
हे सोहाओन लागे ।

ई विध कनियाँक भाइ वरक गरदनिमे गमछा लपेटि घुमबैत छथि। आगू-आगू कोहाके कोनामे एक गोट महिला रखैत जाइत छथि आ वर पएरसँ छुबैत जाइत छथि। कनियाँक भाइ कतौ-कतौ गमछाक स्थानपर वरक नाक पकड़िकऽ सेहो घुमबैत छथि। इहो गीत द्रष्टव्य-

आगे माय छोटी मोटी अपन धीया बड़ी गो जमाय
आगे माय धीरे-धीरे चलू ससुर गलीया
ससुर गलीया हे अनार कलीया
दुलहाके मौड़ियामे लागल हजार कलीया ।

कनियाँ निरीक्षण गीत

दुलहा चिन्हि लीअ अपन दुलारीके ।
अपन प्राण प्यारीके ना ।
अहाँ छी बड़का-बड़का ज्ञानी
अहाँके बापके तीन जनानी
अहाँ कऽ लीअ मनमे विचारीके ।
लिअ हाथमे पल्लव फेकू अपन दुलहिनके उपर
सब सखी गारि दिअ
हिनकर बाप मतारिके ।
अपन प्राण प्यारीके ना ।

सिनुरदानक गीत

सीता मांग फारु रामचन्द्रसन दुलहा मांग फारु
सीता मांग फारु राम सन दुलहा मांग फारु ।
\+ \+ \+
स्वर्ण सिन्दूर दुलहा धीरेसँ लगाऊ
हे दशरथ जीके बबुआ
धीरे-धीरे ललीके लगाउ
हे दशरथ जीके बबुआ ।
लाजने करु दुलहा

हृदयके सम्हारु
हे दशरथके बबुआ
जल्दीसँ करु सिन्दूरदान
हे दशरथके बबुआ
कँपैत करके करु स्थिर
हे दशरथके बबुआ
ललीके हृदय लगाऊ
हे दशरथ जीके बबुआ ।

चुमाओन गीत

मंगल दिन सुदिन हे
आजु होइ छनि रामके चुमाओन
कि आँगन लागे सोहाओन
गाय गोबर लऽ आँगन नीपल
गजमोती चौक पुराउ
कि आँगन लागे सोहाओन ।
अलस-कलस लए पुरहर राखल
मानिक दीप जराउ
कि आंगन लागे सोहाओन
काँचहि बाँसक उलबा बनाओल
ताहि साँठल दुभि-धान
कि आँगन लागे सोहाओन ।
मंगल दिन हे आजु होइ छनि
रामके चुमाओन
कि आँगन लागे सोहाओन ।[२१]

देहरि छेकाओन गीत

देहरि छेकाओन विध पहिने चुकाबियौ
यौ रघुवंशी दुलहा ।
तखन देहरि देवइ पएर
यौ रघुवंशी दुलहा ।

कोहबर गीत

सेनुरसँ हम कोहबर लिखब
लिखब मर-मयुर हे कोठेसँ कोहबर

पहिले सपना देखल बड़ अजगूत केऽ
राजा दशरथसन ससुर हे कोठेसन कोहबर ।
\+ + +
गंगा जे बहलै जमुनियाँ
हे सखी सून्दर घर कोबर ।
बीचमे बहै सरयुग धार
हे सखी सून्दर घर कोबर ।
ताहि पैसि अपन सासु पलंगा ओछाओल
हे सखी सून्दर घर कोबर ।
खोइछा भरि-भरि फूल छिड़िआयल
हे सखी सुन्दर घर कोबर ।

बरिआती भोजन-डहकन

सुनु समधी यौ सरकार
हम छी गरीब अपार
अहाँ बातो करबै सोचि बिचारि कऽ ।
जे छथि भात लेने ठाढ़
ओ छथि भैयाके भतार
अहाँ भातो खेबै सोचि विचारि कऽ ।
जे छथि दालि लेने ठाढ़
ओ छथि दीदीके भतार
अहाँ दाइले खेबैए सोचि विचारि कऽ ।

धौंरकी गीत

किनका हाथमे ताला कुंजी
कियो है-जिमेदार जी
किनका घरमे खर्ची घटि गेलै
बहिन बेचऽ जाए जी ।
बाबा घरमे ताला कुंजी
भैया है-जीमेदार जी
समधी घरमे खर्ची घट गयो
बहिन बेचऽ जाए जी ।

वरके मौसी बनेबाक कालक गीत

गै खुद लेल रुसल छै वरके मौसी
गहना लेल रुसल छै वरके मौसी

गे माय एलै वरके मौसी
धनियाँ मौसासँ बिआहब वरके मौसी ।

मड़बा बनेनाइ कालक गीत

अरही बोनके खरही कटेलौं
वृन्दावन बीट हे बाँस हे
अँचके मड़बा बन्हियौ यौ बाबा
धीया लियौ जंघिया चढ़ाए ।

समदाओन गीत

आरे केओ रोपलखीन हमरी आ अमोलिया
केओ रोपल बीट हे बाँस
आ रे बाबू मोरा रोपलखीन राम अमरी अमोलिया
बाबा बीरा महिया रोपल बीट बाँस ।

+ + +

जनक भवनमे जनमलि सीता
रामलेल अंगूरी धराए हे ।
आगू-आगू राम तकर पाछु लक्षुमन
बीचमे सिया सुकुमारि हे ।
कथी बिनु सुन्न भेल बाबाके हवेलिया
कथी बिनु अमुआँके डारि हे ।
धिया बिनु सुन भेल बाबाके हवेलिया
कोइली बिनु अमुआँके डारिहे ।
राजा रोबथि रंग महलबीच
रानी रोबथि रनिवास हे
रने बने रोबथि सखी हे सहेलिया
जोड़ीसँ बिजोडी कएने जाइ हे ।

मँहफापरसँ कनियाँ उतार ऽ कालक गीत

मँहफापरसँ उतरु कनियाँ
धनपर दियौ लात हे
अपन मैया बिसरु हे कनियाँ
सासुके चिन्हु आब हेऽ ।

कनियाँ परिछन गीत

पहिलबेर सासुर एलाक बाद कनियाँक परिछन आँगनमे प्रवेश करऽ काल होइछ। एक गोट गीत देखू

कौने नगरिया से एलै सिया सुकुमारि
हे अवधेशी बबुनी
कौन नगरिया भेलै शोर
हे अवधेशी बबुनी

महुहक गीत अर्थात खीर खियैन गीत

ई गीत विआहक पश्चात चतुर्थीक दिनधरि गाओल जाइत अछि। एहिमे सासूद्वारा वरके खीर खुआओल जाइत अछि। वर आ कनियाँ दुनु मिलिकऽ खीर खाएत छथि -

खीर खैयौ ने लजैयौ कने आरो खैयौ यौ
अहाँके दादी पूछत बौआ अहाँ दुबर किए छी
अहाँ सासुरके नाम हँसा देबै यौ ।

दह-नदीक गीत

विआहक पश्चात कोनो जलाशय नदी पोखरिमे वर कनियाँके स्नान करएबाकालक गीत -

दस पाँच सखी मिलि चलली सरोवर
हे वर कनियाँ लऽकऽ
आइ छै चारिम दिन हे
आइ छै दह-नदीक दिन हे ऽऽ ।

+ + +

समधी मिलानी गीत। कसार गीत आदि जे हमरासभके आनन्दक प्राप्ति करबैत छल आब कत ? ।

बिऔहती नूआ वस्त्र कनियाँक सासुरसँ अबैत अछि। वरके वस्त्र सासुरमे भेटैछ। वरक परिछनि आ कनियाँक निरीक्षण। परिछन आदिमे चिकित्सकीय जाँच पड़ताल अखन "जयमाला" कार्यक्रम लऽ लेलक अछि। ई जयमाला सब ठाम प्रचलित भेल जाइत अछि।

उपर्युक्त गीत हमरा मिथिलामे प्रचलित रहल अछि मुदा आइ दहेज प्रथाक कोंढ़ आपसी मिठासकेँ खटासमे परिवर्तित कऽ देलक अछि। मात्र औपचारिकताक निर्वाह भऽ रहल अछि। जतऽ मिठास नहि रहत तऽ गीत कतऽसँ अऔतैक। आइ ई गीत गाबऽवालीकेँ पुरातनपन्थी मानल जाए लागल अछि। एकरा फिल्मी गाना सेहो प्रभावित केलक अछि।

ई चिन्ताक विषय थिक। मैथिली लोकगीतक एहन अवस्थापर गम्भीरतापूर्वक विचार करब आवश्यक भऽ गेल अछि। गीतसबक दृश्य-श्रव्य रूपान्तर करबाक आवश्यक अछि। गामघरमे एहि तरहक गीतसबहक

सर्वेक्षण कऽ ध्वन्यांकन करब आवश्यक अछि । सँगहि गीतक संकलन ओ प्रकाशन सेहो आवश्यक अछि । संकलन ओ प्रकाशनक काज एखनधरि किछु भेल अछि ।

सर्वप्रथम ग्रियर्सन महोदय अपन पोथी 'विहारी फोक सौंग्स' , बिहार पीजेन्ट लाइफ , मैथिली क्रीस्टोमैथी आदिद्वारा मैथिली लोकगीतक संकलनदिस लोकक ध्यान आकृष्ट कएलनि । कालान्तरमे रामइकबाल सिंह 'राकेश' - मैथिली लोकगीत, भोला झा नामसँ रघुवर सिंह बुकसेलरक चारि भाग मैथिली लोकगीत, डा.जयकान्त मिश्रक मैथिली लोकगीतक संग्रह (१९५०), स्व. सीताराम झा, - मैथिली गीताञ्जली, लोकनाथ मिश्र, - मैथिली व्यवहार गीत, डा. अणिमा सिंह - मैथिली लोकगीत, कामेश्वरी देवी - मैथिली संस्कार गीत, श्रीमती तारिणी मिश्र - मैथिली संस्कार गीत, बालगोविन्द झा व्यथित - मैथिली ग्राम्य गीत, विभूति-ज्योत्सना आनन्द - 'गीत-नाद', परमानन्द महारुद्र गीतक फुलवाड़ी, श्रीमती उमादेवीद्वारा संकलित आ गोपीकांत झा उमापतिद्वारा सम्पादित 'मैथिली लोकगीत', डा. ईद्रकान्त झा, - मैथिली व्यवहार गीत, प्रफुल्लकुमार सिंह मौन - थारू लोकगीत, नेना गीत आदि प्रकाशित भेल अछि । डा. महेन्द्रप्रसाद सिंहद्वारा मधुबनी मण्डलक कुशवाहा जातीय व्यवहार गीत आदि बिषयक शोध-कार्य भेल अछि । डा. उर्मिला प्रसादक (१९७५ इ.) मधुबनी ब्राह्मणेत्तर समाजक परम्परा गीतपर सेहो शोधकार्य भेल अछि। 'भाओ-भगैत-गहबर-गीत' नामक महत्वपूर्ण संकलन ओ सम्पादन डा. महेन्द्रनारायण रामद्वारा साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ भेल अछि। एहिमे पिछड़ल-पिछड़ल अनपढ़ ओ अल्पशिक्षित वृहत्तर समाजक लोक परम्परासँ जनमल आस्थापरक ओ गीत थिक जे खासकऽ लोकदेवी-देवताक भगतइ ओ अराधनामे गाओल जाइत अछि आ जे श्रुति परम्परामे आईधरि लोककण्ठमे विराजमान छल ।[२२]

से मुदा बेसी नहि अछि। एहि श्रृंखलाकेँ आगू बढ़ेबाक यत्न करऽ पड़त। एकर अतिरिक्त मैथिली लोकगीतक बिगड़ल अवस्थाकेँ जिएबाक काज जनकपुरक एफ.एम.सीरीज संजीवनीक काज कऽ रहल अछि। गाम देहातक मौलिक धरोहरक प्रसारण मिथिला मैथिलीक स्वरकेँ जगैलाक अछि। 'सौभाग्य मिथिला' सनक चैनल आनो आन काल आधुनिकताक चकाचौंध मैथिलीक अवस्थामे पुनर्जागृति लाबि सकैत अछि। जनकपुर

'रामानंद युवा क्लब', 'मिनाप' जेहन संस्थान एहि कड़ीमे आगू बढ़ि कऽ हाथ बँटारहल अछि ।

यूनेस्कोक वैविध्य सांस्कृतिक सम्पदाक सार्वभौम घोषणाक (UNESCO Universal Declaration on Cultural Diversity) अनुसार सांस्कृतिक विविधता, मानव जातिक सामूहिक सम्पदा थिक एवं वर्तमान तथा भविष्यक सन्ततिक लाभहेतु एकरा स्वीकृत आ सम्पूस्ट कएल जएबाक चाही ।

सांस्कृतिक सम्पदामे अबैत अछि-पारम्परिक लोक विद्या (Traditional Folk Knowledge) । एकर संरक्षण हेतु दूटा मार्गक अनुशंसा यूनेस्कोक सामान्य सभाद्वारा १९८९मे कएल गेल अछि -

(क) चिन्हित करब (Identification)

(i) लोकगीतक सार्वत्रिक ग्लोबल-उपयोग सामान्य मार्गनिर्देश

(ii) लोकगीतक एक व्यापक रजिस्टर तैयार करब तथा

(iii) लोकगीतक क्षेत्रीय वर्गीकरण ।

(ख) लोकगीतक संरक्षण (Conservation of folk lore)

(i) एक राष्ट्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जतऽ लोकगीत नीकजकाँ संकलित रहए तथा जिज्ञासुकेँ उपलब्ध भऽ सकए ।

(ii) एक केन्द्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जे सेवा कार्यक हेतु काज करए ।

(iii) एक संग्रहालय स्थापित हो आ स्थापित संग्रहालयमे पारम्परिक एवं लोकप्रिय संस्कृति प्रदर्शित रहए ।

(iv) पारम्परिक एवं लोकप्रिय संस्कृतिकेँ प्रस्तुतिमे प्राथमिकता देल जाए तथा यथासम्भव ओहि परिवेश/पृष्ठभूमिक जीवन-यापन, कौशल तकनीकि आदिक सृजन रहए ।

(v) लोकगीतक संकलन एवं अभिलेखकेँ सुमेलित कएल जाए ।

(vi) संकलनकर्ता , अभिलेखकर्त्ता एवं अन्य विशेषज्ञकेँ लोकगीतक मौलिकतासँ विश्लेषणात्मक संरक्षण लेल प्रशिक्षित करब तथा

(vii) संकलित सांस्कृतिक सम्पदाक सुरक्षाहेतु लोकगीतक

प्रतिलिपि सांस्कृतिक समुदाय एवं क्षेत्रीय संस्थाकेँ उपलब्ध कराएब जाहिसँ ओ सब सक्रिय बनल रहथि ।

एहितरहेँ भूमण्डलीकरणक कारणेँ लोकगीतपर आएल संकट ओ सामाजिक जीवनक विघटनकेँ उपर्युक्त उपायोपरान्त लोकगीतके मौलिकताकेँ जीवित राखल जा सकैत अछि ।

समय कम अछि । अगिला बेर फेर कहियो । तथास्तु..........।

सन्दर्भ :

(१) लोकगीतमे क्रान्तिकारी चेतना-विश्वमित्र उपाध्याय, प्रस्तावना पृष्ठ-१

(२) लोकगीतमे क्रान्तिकारी चेतना-विश्व मित्र उपाध्याय, प्रस्तावना पृष्ठ-१

(३) वेद व्यास, महाभारत अ-१८४

(४) कुल्लई लोक साहित्य, पदमचन्द्र कश्यप, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिक हाउस, प्रथम संस्करण, सन १९७२, १४

(५) हिन्दी भक्ति साहित्यमे लोकतत्वः खीन्द्र भ्रमर (दिल्ली भारतीय साहित्य मंदिर), प्रथम संस्करण सन-१९७५, पृस्ठ-३

(६) मैथिली ग्राम्य गीत, भूमिका पृ.-घ

(७) रामनारायण शक्ल, लेख-लोक संस्कृति क्या है, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, चैत्र-आषाढ़ संयुक्तांक । प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन, संस्करण-१९७४, पृ.-७६

(८) M/S Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona

(९) डा. उमेश मिश्र : विद्यापति ठाकुर, पृ.-१३, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद तृतीय संस्करण १९६० ई.

(१०) प्रोफेसर श्री कृष्णकांत मिश्र, मैथिली इतिहास पृ.-८० मिथिला प्रकाशन, १९५५ ई.

(११) डा. रामदेव झा : मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य

(१२) भाओ भगैत गहबर गीत : डा.महेन्द्रनारायण राम, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली पृ.-३१

(१३) मैथिली लोकवृत : विन्दु ओ विस्तार, डा. महेन्द्रनारायण राम, प्रकाशन- डा. झम्मन राम मिथिला शोध संस्थान, खुटौना, पृ.-७२

(१४) श्रीमती शकुन्तला देवी, ग्राम-पो.-कठरा, मनीगाछी, दरभंगा

(१५) मैथिली लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार - डा. महेन्द्रनारायण राम पृ.८०

(१६) मैथिली व्यवहार गीत

(१७) मैथिली लोकवृत : बिन्दु ओ विस्तार - डा. महेन्द्रनारायण राम

(१८) हमरा जनैत, फूलचन्द झा प्रवीण, आदित्य प्रकाशन, तुमौल पृ.-३४

(१९) मैथिली बाल साहित्य- डा. दमनकुमार झा. पृ.-१६२-६३

(२०) मैथिली व्यवहार गीत संग्रह

(२१) मैथिली लोक-साहित्यक स्वरूप - डा. रेवतीरमण लाल, पृ.- ५७

(२२) भाओ भगैत गहबर गीत- डा. महेन्द्रनारायण राम, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली ।

vvv

मिथिलाक संस्कार गीतमे निहीत मौलिक चिन्तन

✍ डा. राजेन्द्र विमल

षोड़श संस्कारक विधि-विधानक सम्पादनक क्रममे गाओल जाइत लोकगीतमे भाव, विचार, शिल्प-विच्छिति आ राग-भासमे जे मौलिकता पाओल जाइत अछि, सएह ओहि सांस्कारिक लोकगीतक निजत्व थिक। मिथिलाक सब संस्कारक गीतमे भावगत, विचार वा चिन्तनगत, शिल्पगत एवं राग-रागिनीगत मौलिकता मधुश्रावणीक पुरहर-पातिललग गौरीक लेल राखल चम्पा-चमेलीक मालाजेकाँ गमगम करैत अछि। मुदा, समय आ पृष्ठक सीमा देखैत, एहि आलेखमे मिथिलाक प्रमुख संस्कार (जन्म, मुंडन, उपनयन, विवाह आ मृत्यु) क अवसरपर गाओल जाइत गीतमे निहित चिन्तनगत मौलिकताक चर्चा करब मात्र अभीष्ट थिक।

जन्म-संस्कार गीत

उल्लास आ उत्साहसँ भरल जन्मोत्सवक अवसरपर मैथिल ललनाक कण्ठसँ जे गीत अनायासेँ फूटि पड़ैत अछि ताहिमे प्रमुख थिक - सोहर आ खेलाओन। सोइरीघरमे सद्यःजात शिशुक किलकारी ने उठल कि आँगन तुकान्त आ अतुकान्त सोहरगीतसँ गूँजि उठैत अछि। ललना, ललना रे, हे आदि सोहरगीतक अपन टेक छैक। मिथिला क्षेत्रमे प्रचलित सोहर विषयवस्तुक दृष्टिएँ तीन प्रकारक अछि - १. रामजन्म विषयक २. कृष्णजन्म विषयक आ ३. सामान्य शिशुजन्म विषयक। रामविषयक सोहरमे दशरथ आ तीनू रानीक पुत्रलालसा, चिन्ता तथा पुत्रजन्मोपरान्त सम्पूर्ण अयोध्यामे पसरल उत्साह, चमैन तथा याचकलोकनिकेँ दूनू हाथेँ लुटाएल जाइत हीरा-मोती, आँगने-आँगन होइत आनन्द-बधाबा आदिक उछाह भरल वर्णन अछि। किछु सोहरमे सीता-वन गमन तथा वनवासमे सीताक गर्भमे उठल दरदक लहरिसँ उपजल अन्तर्द्वन्द्व आ व्याकुलता, हुनक दैहिक आ मनोवैज्ञानिक अवस्थाक स्वाभाविक मुदा हृदयस्पर्शी शब्दाङ्कन भेल अछि। दशरथ विषयक सोहर मिथिलामे बेसी लोकप्रिय अछि। दशरथ विषयक सोहरमे दशरथ सामान्य गृहस्थ लगैत छथि, जिनकामे पुत्र-अभावक कारण चिन्ता छनि आ पुत्रप्राप्ति होइतहिँ हृदयमे हर्षातिरेक ज्वार उठऽ लगैत

छनि। कृष्णविषयक सोहर कनेक भिन्न अछि। एहि सोहरसबमे कृष्णक अतिमानवीय स्वरूप चित्रित अछि। कृष्ण-जन्मसँ मथुरामे आनन्द-बधाबा एहि दुआरे बजैत अछि जे कंसक संहार कएनिहार जन्म लऽ लेलैनि अछि। देवकी प्रसव-वेदना, वसुदेवक चमैनलग दौड़ब, नन्द-यशोदाक पएर धरतीपर नहि होएव आ चतुर्भुज शिशु कृष्णक हाथमे शंख, चक्र, गदा, पद्म होएब आदि एकटा अलौकिक वायुमण्डलक सृजन करैत अछि।

उतरि सावन चढ़े भादव चहुँदिस कादब रे।
ललना रे मेघवा झरी लगाबए दामिनि दमकए रे।
जनम लेल यदुनन्दन कंस निकन्दन रे।
ललना रे फुजिगेल वज्र केवाड़ पहरु सब सूतल रे।
शंख-चक्रयुक्त हरि जब देवकी देखल रे।
ललना रे आइ सुदिन दिन भेल कृष्ण अवतार लेल रे।
कोर लेल वसुदेव कि यमुना उछलि बहू रे।
ललना रे हरि देलैर छुआय नन्द घर पहुँचल रे।
नन्द भवन आनन्द भेल यसुमति जागल रे।
ललना रे सूरदास बलि जाय कि गाओल रे।" - दोसरदिसि
"धन-धन राज अयोध्या....,
रामजी जनम लेल रे।
ललना रे आब ने सहब अपमान,
बाँझिन पद छूटल रे।"

मिथिलामे 'बाँझिन' पद कतेक अपमानजनक होइत अछि। मुदा, कृष्णविषयक किछु एहन सोहर जाहिमे रुक्मिणी-सामान्य मैथलानी भऽ आएलि छथि से मोनकेँ मोहि लैति छथि -

शुभ नक्षत्र शुभ मास तऽ शुभ दिन गति भेल रे ललना रुकिनि रानी गरभ सँय मोनेमोने बिलुखति ललना हँसिहँसि पुछथि श्री कृष्ण,

सुनहु रानी रुकमिनि हे, रानी कओने कओने फल भाबए,
कहिकए बुझाबहुँ हे। लवंग इलचिया मन न भाबए,
नारंगिया देखि हुलिआबए हे। राजा जेठ रे बैशाखके टिकोरबा,
चटनिया मन भाबए हे। राजा देखि छ्र होहा मन ने याबए,
अनरबा हुलिआबए हे। जेठ रे वैशाखके इमलिया
चटनिया मन भाबए हे। घर पछुअरबा मलिअबा,
भइआ तोहि मोरा हित बसुरे। भइया जाहिक आनन्द वन-वाग,
इमलिया तोडि लाबह हे..."

चूल्हिक सोन्हगर माटि, आमक टिकोला, इमली, कुतरुमपर गर्भावस्थामे मोन जाएब कतेक स्वाभाविक अछि तकर कतेक सुन्दर चित्रण भेल अछि एहि सोहरमे । दशरथ आ रामविषयक सोहरमे दशरथ आ रामक मानवीय स्वरूपक चित्रण होएब आ कृष्णविषयक सोहरमे कृष्णक अतिमानवीय स्वरूपक चित्रण होएबाक पाछाँ मिथिलाक चेतन-अवचेतनमे अन्तर्निहित मौलिक मनोविज्ञान ई थिक जे दशरथ मिथिलाक समधि थिकाह आ राम जमाय । राम परब्रह्मरूपमे अथवा दशरथ ब्रह्मअवतारक लौकिक पिता वा कोनो महाराजाधिराजक रूपमे मिथिलाकेँ स्वीकार्य नहि भऽ सकैत छथि । दोसर कारण ई भऽ सकैत अछि जे मथुराक बेटा होइतहुँ मथुरावासीक लेल कंस चरम अत्याचारक प्रतिमूर्ति छल, जकर संहार करबाक लेल कृष्ण आगाँ आएल छलाह । मिथिलामे एहन कोनो घटनाक वर्णन पुराणमे नहि अछि । तएँ कृष्णक ई विम्व मिथिलाक जमाय रामसँग सटीक नहि बैसैत अछि । राम तँ प्रजापालक, लोक मंगलकारी मर्यादा पुरुषोत्तम छलाह, तएँ तँ मिथिलाक जामाता भेलाह, मिथिलाकेँ रामक पानसँ लाल भेल अधरक प्रत्यञ्चापर मुस्कानक वाण छोड़ि मैथिल किशोरीसभक करेज घायल करैत नहुँ-नहुँ चलैत, नव दुलहाक रूपेँ मधुर लगैत रहलैक अछि, मान्य रहलैक अछि । - “हमरा ने चाहि पाहुन धनुष आर बान हे, हमरा तँ चाहि पाहुन मधुर मुसकान हे”....

शिल्पक दृष्टिएँ दू प्रकारक सोहर मिथिलामे उपलब्ध अछि - १. साधारण सोहर २. छन्दबला सोहर । साधारण सोहरक प्रत्येक पंक्तिमे प्रायः १७सँ २० वर्णधरिक योजना रहैत अछि आ प्रत्येक पंक्तिमे समान वर्ण होइत अछि । छन्दबला सोहरमे प्रत्येक एक अथवा दू पंक्तिक पश्चात् एक गोट छन्द भेल करैत अछि । ई छन्द सामान्यतया सबैयाक दू पाँतीक बनल रहैत अछि । गर्भकालक वर्णनक आधारपर सेहो दू प्रकारक सोहर उपलब्ध अछि - दसमासी सोहर आ साधारण सोहर । जाहि सोहरमे गर्भिणीक गर्भाधानसँ लऽ बच्चाक जन्मधरिक मानसिक अवस्थाक वर्णन रहैत अछि तकरा दसमासी सोहर कहल जाइत छैक । एहिमे गर्भिणीक शरीरमे होइत परिवर्तन, सोचमे होइत परिवर्तन, अनुभूतिमे होइत परिवर्तन, गर्भस्थ शिशुक चंचलता, भोजनमे अरुचि, मुदा सोन्हगर-खटगर वस्तुपर चोट आदिक वर्णन पाओल जाइत अछि । साधारण सोहरमे गर्भिणीक मासेमासेक अनुभूतिक वर्णन नहि रहैत अछि अपितु ओकर पुत्रलालसा, प्रसव-वेदना, प्रसवपीड़ा कालमे आब पतिसँग नहि सुतबाक किरियासपत खाएब, हर्षबधाइ आ दानदहेज आदिक वर्णन रहैत अछि । संक्षेपमे सोहर गीतकेँ निम्नप्रकारेँ वर्गीकृत कएल जाऽ

सकैत अछि - १. दोहद २. पुत्रलालसा ३. प्रसववेदना ४. पतिसँग नहि सुतबाक सपत खाएब ५. उल्लास ६. दान दहेज ७. अन्य ।

एकगोट बात विचारणीय थिक जे मैथिली सोहर गीतमे पहिल समागम प्रायः कात्तिक मासमे होएबाक वर्णन अछि -

“प्रथम मास चढ़ू कातिक,
फूलमे बून्द पड़ए
ललना रे थर-थर काँप देह,
अंगमे अड़ेठी भए..”

कार्तिक मासमे शरदक आगमन सँगहि नायिकाक मनमे काम-वासनाक हिलकोर उठब मनोवैज्ञानिक सत्य थिक, तएँ फूलक गात थर-थर काँपव आ ताहिमे बुन्द पड़ब स्वाभाविक । मिथिलामे चतुर्मासक गायन निषिद्ध अछि आ एकर आरम्भ होइछ आषाढ़ माससँ । दिनराति झहरैत मेघमे पियाकेँ परदेशसँ अनएबो कठिन । तएँ नायक प्रियतमक कात्तिकमे आएब आ नायिकाक सँग केलिकीड़ा करब, नायिकाक गर्भधारण करब अत्यन्त स्वाभाविक अछि । कार्तिक मासमे प्रियतम आगमनक वर्णनक पाछाँक मौलिक चिन्तन स्पष्ट अछि ।

दोहद

गर्भवती महिलाक हेतु गर्भाधानक छठम वा आठम मासमे नैहरसँ मिष्टान्न, खीर आदि जे सधोरि अबैत अछि, तखन गाओल जाइत सोहरकेँ दोहद कहल जाइत अछि । दोहदमे गर्भाधारणक कारण जे अंतःसत्वाक बदलैत शारीरिक आ मानसिक अवस्थाक जीववैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण कएल जाइछ से हुनका आश्वस्त करैत छैनि जे ई सब परिवर्तन स्वाभाविक थिक, एहिमे आतंकित वा विचलित होएबाक प्रयोजन नहि छैक । एहि आश्वस्तिक प्रभाव गर्भस्थ शिशुपर पड़िते छैक । गीतमे सचेतता छैक आ संचेतनामे मौलिकता ।

पुत्रलालसा

मिथिलाक ई विश्वास रहलैक अछि जे पुत्र-प्राप्तिक बाद लोक सबप्रकारक पितृऋणसँ मुक्त भऽ जाइत अछि । पुत्रपरम्परामे जीवाक लालसा मनुष्य मात्रक आदिम लालसा थिक । मैथिली सोहरमे ई लालसा बेरबेर व्यक्त भेल अछि । संतानक हेतु दशरथ आ हुनक रानी चिन्तित छथि, नन्द बाबा चिन्तित छथि । मुदा पुत्र प्राप्तिक सँगहि चिन्ता दूर भऽ जाइछ आ आनन्दक वर्षा होमऽ लगैछ -

"कौशल्याके जनमल राम,
सुमित्राके लछुमन रे
ललना रे कैकेयीके जनमल भरत
कि तीनू घर सोहर रे..."

पुत्र लालसाबला किछु गीतमे रामक जन्मपर कैकेयीक हृदयमे सौतिनिया डाहक स्फुलिङ बीज रूपमे तखन देखबामे अबैत अछि जखन ओ कौशल्यासँ कहैत छथिन जे हर्षोल्लासमे सम्पूर्ण अयोध्या अहीं लुटा देबै तँ हमर पुत्र जन्मक बाद लुटएबाक हेतु कि बाँचत ?

खेलओन

एहि प्रकारक गीतमे पुत्रप्राप्तिक उपलक्ष्यमे ब्राह्मण, भाँट, पमरिया, चमैन, हजामिन आदिकैँ तथा ननदिकैँ उदारतापूर्वक इनाम आ दानदहेज देबाक वर्णन रहैत अछि। मिथिलाक पारिवारिक जीवनक यथार्थपरक चित्रण एक गोट खेलाओनमे देखू -

दरबज्जा से पिया मोर आयो, नजरिया से सकल दिखायो।
धनि एके कहल मोर करहि, मोर अम्माके मोन तोँ रखिहऽ।
तोर अम्मा मनहुँके भावे ओ तऽ सोइरीमे ठुनका चलाबे।
धनि एके कहल मोर करिहऽ हमरा भौजीके मोन तोँ रखिहऽ।
तोरो भौजी मनहुँ नहि भावे ओ तऽ सोइरीमे फूटहा फँकाबे।
धनि एक कहल मोर करिहऽ हमर बहिनिक मोन तोँ रखिहऽ।
तोरो बहिन मोनहु नहि भावे ओ तऽ टोलामे चुगली लगावे।

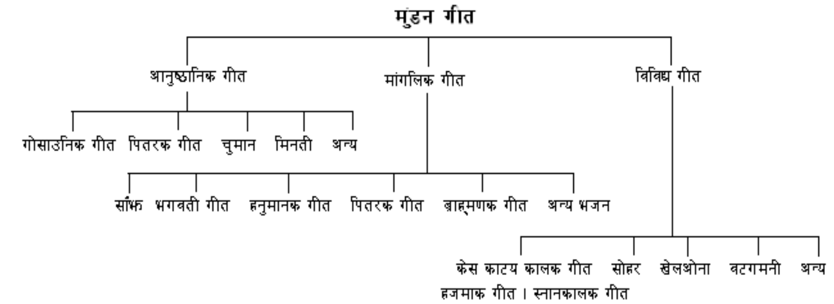
आश्वासन

मिथिलाक पारिवारिक जीवनमे ननदि-भाउजक सम्बन्ध खटमिट्ठीजेकाँ अछि - कौखन खटतुरुस, कौखन मधुर। आश्वासन गीतमे एही कटुमधु - सम्बन्धक यथार्थपरक अभिव्यक्ति भेल अछि। प्रसववेदनासँ विकलि भेलि भाउज ननदिकैँ कोसलिया देबाक प्रलोभन दऽ-सेवा-परिचर्या करा लैत छथिन आ जखन बेर निमहि जाइत छनि तँ औँठा देखा दैत छथिन। एहि अवसरपर भाए अबैत छथि आ बेटाक मूड़न-उपनयनमे गहना देबाक प्रलोभन दऽ रुसलि बहिनकैँ बौसि लैत छथिन्ह। खेलओना गतिमे एहने भावसब व्यक्त भेल अछि जे मैथिल गार्हस्थ जीवनक यथार्थ अछि। खेलओना गीतकैँ मुख्यतः दू वर्गमे विभक्त कएल जाऽ सकैत अछि - **१. ननदिसम्बन्धी आ २. अन्य याचकसम्बन्धी। ननदिसम्बन्धी खेलओनाक अंग थिक - आश्वासन, अस्वीकार, प्रबोधन आ अन्य।**

"उठलै दरदिया जियरा बाउर भेलै गे ननदी,
आगि लबही, इजोत करही, इन्होर करही गे ननदी।"

अन्य याचकसम्बन्धी गीतमे चमैनि, हजामिन पमरिया, भाँट, ब्राह्मण आदिक याचना आश्वासन आ दानक वर्णन रहैत अछि।

२. मुंडन गीतक वर्गीकरण निम्नप्रकारैँ कएल गेल अछि -



मुंडन उपनयन आ विवाहक मात्र नहि, पावनि-तिहार आदि सब गीतमे एक-एक विधिक अनुकूल गीतक आयोजन होएबाक मैथिल परम्पराक पृष्ठभूमिमे एकर रागात्मक जीवन-दर्शन तँ थिकैके, सँगहि विधिक एकरसता आ उबाउपनकैँ तिरोहित कऽ वातावरणकैँ स्फूर्तिमय, इन्द्रधनुषी बनओने रहबाक लौकिक प्रयोजन सिद्ध करबाक सुन्दर, सतर्क, सावधान विधान ई सेहो अछि। देवऋण, पितृऋण आ ऋषिऋणसँ मुक्तिक हेतु प्रत्येक अनुष्ठानक आरम्भ गोसाउनिक गीत, पितरक गीत आ ब्राह्मणक गीतसँ होइत अछि। मुंडनक आरम्भमे गाओल जाइत गोसाउनिक गीतक एक गोट पंक्ति थिक -

बट्टाभरि चानन रगड़ल, पाने पात लीखल हे
ताहि पान नोतब गोसाउनि जे नित
पुज्य थिकी हे"

एहि गीतमे भगवती पूजाहेतु बरुआ मायक मोनसँ उठैत भावक सहज उद्गार उच्छलित भेल अछि।

पितरक गीतमे सोनाक छुरीसँ बौआक केश नहुँ-नहुँ कटबाक आदेश हजामकैँ देल गेल अछि, केश नेनिहारि मायक खोँइछमे पुरइनक पात आ दूबिधान आदि लेबाक वर्णन अछि। बरुआ, बरुआमाय तथा परिजन-पुरजनक मनोविज्ञानक सहज चित्रांकन एहि गीतसबक मौलिकता थिक।

उपनयन

उपनयनक गीतकेँ सेहो मुख्यतः तीन वर्गमे विभाजित कएल जाऽ सकैत अछि - १. आनुष्ठानिक गीत २. मांगलिक गीत आ ३. विविध गीत। आनुष्ठानिक गीतअन्तर्गत बँसकट्टी, मड़बठट्ठी, माटिमाँगर, चरखकट्टी, कुमरम, भिखहरि, चुमान, मिनती आदि गीत अबैत अछि। मांगलिक गीतअन्तर्गत साँझ, गोसाउनिक गीत, हनुमानक गीत, ब्रह्मक गीत, पितरक गीत आदि अबैत अछि। विविध गीतअन्तर्गत सोहर, खेलाओन, वटगबनी आदिकेँ राखल जाइत अछि।

बँसकट्टीक गीतमे बाबाद्वारा बाँस रोपबाक वर्णन अछि तँ माँटिमँगर वा मटिकारक गीतमे बाबाद्वारा पोखरि खुनएबाक -

"फन्ना बाबा ईहा बाँस रोपल,
कोपर छोड़ रे।
फन्ना बरुआक दिन सुदिन भेल,
आँङन माँड़ब भेल रे।"

"फन्ना बाबा पोखरी खुनाओल,
घाट मढ़ाओल रे
फन्ना आमा धार गढ़ाओल,
माँटि उघाओल रे.."

वातावरणीय सन्तुलन हेतु वृक्ष आ जलाशयक संरक्षण एवं सम्बर्द्धन करबाक संचेतना एहि गीतक मौलिक चिन्तन थिक। प्रश्नोत्तर शैली मौलिक शिल्प थिक। देव-पितर आ प्रकृतिप्रतिक सम्पूजनक भावक अभिव्यक्ति मौलिक भाव-विधान थिक।

भिखहरिक गीतमे बरुआसभसँ भीख मङलाक बाद अपन गुरुक सान्निध्यमे जा वेदाध्ययन करबाक आकांक्षा व्यक्त करैछ भावुकतावश माय-बहिन रोकैत छैक, बरुआ विद्याध्ययन हेतु वाराणसी प्रस्थान भऽ जाइछ। स्मरणीय थिक - हिन्दू धर्ममे' वयसक चारि खण्डकेँ चारि आश्रमक रूपमे परिकल्पना कएल गेल अछि - ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वाणप्रस्थ आ सन्यास। उपनयन (उप-नयन . पूर्व नयनक अतिरिक्त नव सहायक अर्थात उप नयनक प्रतीक विधान) ब्रह्मचर्य आश्रमक प्रतीक थिक। भिखहरि गुरुकुल परम्परामे प्रचलित शिष्यक मधुकरीवृत्तिक प्रतीक थिक। मिथिलाक लेल बनारस प्राचीन विद्याकेन्द्र रहल अछि। बरुआक बनारस जएबाक प्रकरण

जोड़बाक पाछाँ वटुककेँ विद्याध्ययनक हेतु प्रेरित करबाक चिन्तन अछि। वर्णनात्मकता, लोकाचार-विधान, नाटकीय सम्वाद, आदि शैलीगत विशिष्ठता पाओल जाइछ। परिजनक हृदयमे उठैत भावहिलोर गीतकेँ भावगत वैशिष्ठ्य दैत अछि।

विवाह

विवाहक अवसरपर गाओल जाइत आनुष्ठानिक, मांगलिक गीत वर आ बधू दुनूक घरमे गाओल जाइत अछि। तएँ विवाहगीतकेँ तीन वर्गमे राखल जाइत अछि -

१. वरपक्षक गीत २. वधूपक्षक गीत ३. उभय पक्षक गीत।

वरपक्षक गीत थिक -

१. सिरहर भरबाक गीत
२. पचीसी खेलबाक गीत
३. कनियाँकेँ महफासँ उतारऽ कालक गीत
४. हरदि पिसबाक गीत
५. माछ बनएबाक गीत
६. खोँइछ भरबाक गीत
७. मुँहदेखानक गीत
८. भड़फोड़ीक गीत
९. विविध गीत

वधूपक्षक गीत

१. परिछनक गीत
२. आम-महु बियाहक गीत
३. नैना-जोगिनक गीत
४. कन्यानिरीक्षणक गीत
५. मातृकापूजनक गीत
६. कान लगबाक गीत
७. गोत्राध्यायक गीत
८. अठोङरक गीत
९. गठबन्धनक गीत
१०. सिन्दूरदानक गीत
११. वेदी घुमबाक गीत
१२. लाबा भुजबाक गीत

१३. लाबा छिड़िअएबाक गीत
१४. महुअक कालक गीत
१५. पटिया फेकबाक गीत
१६. कोबर
१७. गौरी पूजन
१८. जुट्टी खोलाइ
१९. जेमनार
२०. उपटन
२१. कंगन खोलाइ
२२. चतुर्थी
२३. धोती पहिरबाकालक गीत
२४. दही खएबाक गीत
२५. पानहरीर खएबाक गीत
२६. दहनही गीत
२७. खोँइछ भरबाक गीत
२८. कनियाँ बिदाऽ करबाकालक गीत

(ग) उभय पक्षक गीत -

पसाहनि, चुमाओन, देहरिछेकान आदि कालक गीत दुनू पक्षमे गाओल जाइत अछि। एहि प्रकारक गीतसबमे कुमार, परिछन, कोबर, उचिती, जोग, डहकन, उदासी, समदाओन, भूपाली, तिरहुत आदि अबैत अछि। वर-वधू पक्षक प्रायः प्रत्येक गीत वैवाहिक विधिसँ सम्बद्ध होएबाक कारण ओहि विधि प्रक्रियाक वर्णन करैत अछि। उभय पक्षक किछु गीतपर नीचाँ विचार कएल जाइत अछि।

कुमार : सिन्दूरदानसँ पूर्व गाओल जाइत एहि गीतसबमे बेटा-बेटी विवाह योग्य होएव, बेटीक हेतु उपयुक्त वर-घरक खोज करब आदिक वर्णन रहैत अछि। सीता सामान्य मैथिल कन्या आ जनक मैथिल पिताक प्रतीक भऽ आएल एहि गीतसबमे मिथिलाक पारिवारिक जीवन आ संस्कारक सुमधुर चित्राङ्कन भेल अछि। मौलिक चिन्तनक दृष्टिएँ एहिप्रकारक गीतक एक गोट विशेषता थिकै जे सीता विवाहयोग्य भऽ गेलीह तकर चर्चा 'सखीसभ' करैत छथिन -

"आमक डारि कोइलीसब बाजए,
विजुवन बाजए मयूर हे,

जनकपुरमे सखीसभ बाजय,
आब सिया रहली कुमारि हे.."

आमक डारिपर कुहकैत कोइली आ विजुवनमे बजैत मयूर उद्दीपनक काज करैत अछि आ एहनमे उन्मत्त कन्याजेकाँ उफनाइत सीताक यौवन। मुदा, कामविदग्धा सीता कोना अपन दशा बजतीह ? तएँ सीताक 'सखीसभ' जनकपुरके घर-आङनमे सीताविवाहक चिन्ता करैत छथिन। कदाचित एहि बहन्ने अपन कामदशाक संकेत सेहो करैत छथि - मुदा मर्यादापूर्वक। ई मर्यादाबोध मिथिलाक प्राण थिक।

परिछन वरक रूप आभूषण आ परिधानक सुन्दर शब्दचित्र रहैत अछि -

"जुलुमी जुलुफिया कारी,
माथे मणिमौरिया प्यारी
लालेलाले भालपर चन्दनमा,
पहुनमा राघो.."

ई जीवन्त विम्व मिथिलाक भावी दुलहामे शालीनता आ मर्यादाक संस्कार वर्णन करैत अछि। कोहबर गीतक सामान्य भाव होइत छैक-"वर-कनियाँ कोहबरमे थिकाह। लाजेँ कनियाँ घरक दरबज्जा आ झरोखासब बन्द कऽ लैत छथिन। वर गर्मीसँ अकुलाइ छथि। कनियाँ रसे-रसे रसबेनियाँ डोलबै छथिन्ह। वर-कनियाँक बीच कोहबर घरमे चलैत रोमान्सऽक ई मैथिल संस्करण आन जातिसँ कतेक भिन्न आ मौलिक थिक। कहाँ फाइवस्टारक 'हनीमून' आ कतऽ कोहबरघरक सुहागरातिमे चलैत कनियाँ-वरक मर्यादित रंगरस। वरियातीक भोजनकालक गीत उचितीमे मैथिल ललना अपन अकिञ्चनता प्रदर्शित करैत अतिथिक गरिमाक बखान करैत छथि। 'थारभरल पकवान रे, भोजन करथि भगवान रे' कहि मैथिलानी 'अतिथि देवो भवः' क मैथिल परम्पराक परिचय दैत छथि। भोजनेकाल गाओल जाइत 'जोग'मे वधू अपन वरकेँ कहैत छथिन जे जँ अहाँ हमरा तेजि परदेश जाए चाहब तँ हम तंत्रबलसँ अहाँकेँ बान्हि कऽ राखब।

"हमरा जँ तेजब, गुन हाँकब,
जोग देब समधान, अधीन कऽ राखब।"

ई प्रिय-प्रवासक पीड़ा भोगैत प्रोषितपतिका मैथिलानीक अद्यतन नियतिक त्रासद अभिव्यक्तिक सँगहि मिथिलाक तान्त्रिक परम्परामे आस्थाक सेहो अभिव्यक्ति थिक।

वरक विदाइकाल गाओल जाइत उदासीमे कन्याक परिवारक हृदयमे उमड़ैत बिछोह-वेदना, फेर अएबाक आतुर निवेदन, कष्टक हेतु क्षमायाचना

आदि अभिव्यक्ति रहैछ। बेटीक सासुर जाइतकाल समदाओन गाओल जाइत अछि। मैथिलीक उदासी आ समदाओनमे करुणरसक जेहन वेगवती धारा प्रवाहित भेल अछि से संसारक अन्य भाषाक विदाइगीतमे दुर्लभ। दू परिवारक सम्बन्धक प्रगाढताक मनोविज्ञान उपजबैत एहि भावुकतापूर्ण गीत सबक देल संस्कारक कारण आई मिथिलामे तलाकक संख्या तुलनात्मक दृष्टिएँ अत्यन्त नगण्य अछि। तएँ एहि आयोजनकेँ मिथिलाक मौलिक चिन्तनक परिणाम कहल जाऽ सकैत अछि।

विवाहक अतिरिक्त आनो अवसरपर गाओल जाइत भूपाली तिरहुत आदिमे संयोग शृंगार आ विप्रलंभ शृंगारक लोकसम्मोहनकारी वर्णन पाओल जाइत अछि। एहि गतिमे अनुस्यूत उद्दाम रागात्मकता मृत्युक गीतमे अवसानित होइत वैराग्यक एक गोट सोपानधरि रहि जाइत अछि।

मृत्यु-संस्कार गीत

मूलतः मिथिलाक कबीरपंथीसभद्वारा गाओल जाइत मृत्युगीत जीवनक निस्सारताक करुण भावसँ भरल रहैत अछि -

"पसरल हटिया उसरि घर जाइ छै,
सौदा किछु किनियो ने भेल
माय-बाप देने छल धन-सम्पतिया
चलइके बेर छीन लेल।"

पतिक मृत्युपर विलाप करैत पत्नीक, बेटाक मृत्युपर ओडहरिया मारैत माय-बापक भावनाक अत्यन्त हृदयविदारक चित्रण जीवन सत्यसँ साक्षात्कार करबैत अछि। "कहत कबीर सुनो भाइ साधो, ई तन छै माटिक बरतनमा, तिनका लगैते फूटि जाय..."

एहिप्रकारेँ, मिथिलाक संस्कारगीत अपन भाषा-शिल्पगत वैशिष्ठय, भावगत वैशिष्ठ्य तथा चिन्तनगत वैशिष्ठ्यक कारणेँ विश्व लोकगीतक अनमोल सम्पदा बनल रहत, ताहिमे सन्देह नहि।

vvv

टिप्पणी
मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षण

– प्रफुल्लकुमार सिंह मौन

मिथिलाक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक सम्पदाविषयक कार्यपत्रमे नेपालक चर्चित पुरातत्वविद तारानन्द मिश्र ओ जतेक तथ्यात्मक टिप्पणी प्रस्तुत छपने छथि, ओ एकटा श्रमसाध्यपूर्ण विवेचित अछि, तदनुसार आर्यलोकनिक पूर्वाभिमुखी अभियान मिथिलाञ्चलक कोशीपार बंगाल, आसाम आदिधरि भेल छल। एतबे नहि ओलोकनि नदी झर्नासँ तामुलिप्ति (वामलुक) पहुँचि ओहिठामसँ समुद्रक बाटे सुदूर दक्षिण पूर्व एशियाई देश-देशान्तरधरि अपन सांस्कृतिक ध्वजा फहरौलनि। तद्विषयक ऐतिहासिक परम्परामे मात्र पुरावशेषसब उपलब्ध नहि अछि, सांस्कृतिक अवशेषसब सेहो उपलब्ध अछि, । इतिहास ओ पुरातत्वक सन्दर्भमे संस्कृतिकेँ छोड़ल नहि जा सकैछ, एहिदिस ध्यानाकर्षण आवश्यक बुझना जाइछ, कोशी अंचलक वराहक्षेत्र अपन गुप्तकालीन मूर्ति, अभिलेख आदिक माध्यमे स्वयं कहबामे समर्थ अछि। एतबे नहि ओ वाल्मीकिनगरमे उपलब्ध गुप्तकालीन वराह अवतारक मूर्ति एवं मन्दिरक भग्नावशेषक उल्लेख नहि कऽ सकलाह।

बौद्धविहारक निर्माण करौनिहार राजा धर्मपाल छलाह मुदा ओ भागलपुरक अन्तीचकमे पालकालीन विक्रमशीला महाविहार छल। नेपाल उपत्यकाक ठमेलमे विक्रमशीला विहारक निर्माण पूर्वस्थापित महाविहारक स्थापत्यक आधारपर भेल छल आचार्य दीपंकर श्री ज्ञानक नेतृत्वमे। दीपंकर श्री ज्ञान अंग (पूर्व मिथिला), नेपाल उपत्यका ओ तिब्बतक बौद्धधर्मक सूभधान छलाह। वेगुसराय जिलाक नौलागढसँ विगुहपाल तृतीयक प्राप्त शिलालेखमे एकटा बौद्धविहारक उल्लेख भेल अछि। पाल राजालोकनि बौद्धप्रिय छलाह।

पाल-सेन ओ कर्णाटलोकनि मूलतः वैषावधर्मी छलाह मुदा पाललोकनिमे बौद्धिप्रियता सेहो देखना जाइछ। तहिना नेपालक मूर्तिया क्षेत्रसँ प्राप्त ताराक अभिलेखांकित मूर्ति अपवाद स्वरूप सेहो उपलब्ध अछि। ओ परवर्ती कर्णाटलोकनि छलाह प्रायः सोलहम-सत्रहम शताब्दिक।

मोहन चंद्र खनालद्वारा प्रतिवेदित रिपोर्ट देखल जाय, कर्णाट राजा रामसिंह देवक शासनकालमे तिब्बती बौद्धधर्म यात्री धर्मस्वामीक जीवनीसँ ई अभिज्ञात अछि। धर्मस्वामी तिरहुत कहने छथि एहि भूभागकेँ अर्थात सिमरौनगढ़केँ। तिरहुतक अपन पहिचान (आइडेंटिटी) छैक गुप्त शासनेकालसँ। सिमरौनगढ़क पुरातात्विक उत्खनन ओ ओहिठाम राजाथपमे लिखल ग्रंथ, भाष्य ओ प्रतिलिपिसबहक खोजमे तारानन्दजीक उपलब्धि वेस महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। आइ सिमरौनगढ़ ध्वस्त अछि मुदा ओकर १०१९सँ १३२४ ई. धरिक इतिहास गौरवमयी रहल अछि। मुदा कूनू शर्माद्वारा लिखित कीर्तिपताका'क अंतः साक्ष्यक स्पष्टीकरण होएबाक चाही छल, विद्यापतिक कीर्तिपताकासँ एहि ग्रंथक कोनो तारतम्य नहि अछि, सिमरौनगढक कर्णाटशासन कालक महत्ता स्वर्णयुगक छैक-स्थापत्य, भाषा साहित्य, संगीत-नाट्य, मूर्तिकला, आदि दृष्टिएं, मुदा ओ सिमरौनगढ़क पुरातात्विक उपलब्धि सूर्यमूर्ति। सम्प्रति राष्ट्रीय संग्रहालय, काठमाण्डूमे संरक्षित सधोजात (राममंदिर, परिसर, जनकपुरधाम) ओ द्विभूजी लोकपाल विष्णु (सिमरौनगढ) ओ आराधना कंकालीक विवेचन नहि कऽ सकलाह।

मिश्र जी जाहि द्रोणवर राजाक उल्लेख कएने छथि, पुरन्दरसिंहकेँ कोना प्रामाणिक मानल जाऽ ? जखन ओ वनौलीक द्रोणराज राजा पुरादित्यक नामे विद्यापतिद्वारा कएल गेल श्रीमद्भागवतक प्रतिलिपिमे अंकित अछि। द्रोणवार राजवंशक राजकीय परम्पराक अवशेष समस्तीपुर जिलाक नरहनमे प्रत्यक्ष अछि। मुदा तराईमे अवस्थित बनौलीक पहिचान सुनिश्चित कएल जाय तखन मिथिलाक जमीनी खोज कएल जाए, जे अखनधरि अन्हारकूपमे भोतिआएल अछि।

सबसँ पैघ त्रुटि एहि कार्यपत्रमे ई अछि जे उएह ऐतिहासिक कालक्रमअनुसारे विवेचित नहि कऽ सकलाह। तथापि किछु तथ्यात्मक सूचनासब महत्वपूर्ण अछि ओ हुनक सूक्ष्म खोजी दृष्टिक परिचायक थिक। जेना वराहक्षेत्रक नरसिंह तथा ओहि क्षेत्रसँ प्राप्त नरसिंहक गुप्तकालीन मूर्ति। गुप्तकालीन राजालोकनि परम भागतव कहवैत छलाह। वराह विष्णु नरसिंह अवतार आदि एकर उदाहरण, अछि। एहि दृष्टिसँ चेड़ियारी क्षेत्र (कोशी अंचलक सीमांत क्षेत्र,) जोगवनी भेड़ियारीसँ प्राप्त थुंगकालीन मन्दिरक भग्नावशेष, एवं चानीक पंचमावर्ड (आध्त) सिवकासन, जे निसंदेह

ई. पू.क छैक। ओहि क्षेत्रक उत्खननक तारानंद जी, जनकलाल शर्मा, मातृकाप्रसाद कोइराला ओ हम स्वयं एकर साक्षी रहल छी, लहानलगक खपटेडाडा पुरावशेष निसंदेह ई.पू.क थिक।

आलेखमे कर्णाटकालीन मिथिलापर नीक प्रकाश देल गेल अछि, जाहिमे सिमरौनगढ़क अलावा सखडाक भगवती, मूर्तिया आ दोलखाक परवर्ती कर्णाट कालीनपुरावशेषसबक विवेचन पठनीय एवं संग्रहणीय अछि।

नेपालक चर्चित पुरातत्वविद तारानन्द मिश्र सेवानिवृतिक पश्चातो जाहि उत्साहसँ मिथिलाञ्चलक पुरावेशदिस केन्द्रित भऽ जे जतेक काज कऽ रहल छथि, ओहिसँ एहि क्षेत्रक इतिहासक नव-नव अध्यायक द्वार खुजैत अछि। क्षेत्रीय संग्रहालयक स्थापना नितान्त आवश्यक अछि।

vvv

मैथिली लोक-गाथाक नेपालीय संदर्भ : स्थिति ओ संरक्षण

– डा. रेवतीरमण लाल

डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौनक कार्यपत्र "मैथिली लोक-गाथाक नेपालीय संदर्भ : स्थिति ओ संरक्षण" सारगर्भित अनुसन्धानमूलक कार्यपत्र अछि। डा. मौन लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृतिक क्षेत्रक आधिकारिक एवं ख्यातिप्राप्त विद्वान छथि। ओहूमे नेपालसँ सम्बद्ध विषयक तऽ विशिष्ट विद्वान मानल जाइत छथि। मैथिली लोक-गाथामध्य अनेको लोक-गाथाक सम्बन्ध नेपालक भूभागसँ रहलैक अछि। विशेषरूपैं पूर्वी तराईक भाग एहि गाथासबक क्षेत्र रहल अछि। डा. धीरेन्द्रक विचार छनि जे मैथिली लोकगाथाक सृजन मिथिला नेपालक सीमामे अधिक भेल। हुनक विचारमे एकर कारण छल एहि क्षेत्रकैं सांस्कृतिक, सामरिक तथा ऐतिहासिक घटनाचक्रसँ सम्बद्ध हएव। गाथाकारलोकनि ओहि पृष्ठभूमिक चर्चा कएलनि तथा अनेको अविस्मरणीय चरित्रक उपस्थापन कएलनि। एहि तरहक विचार डा. मौन सेहो ठाम-ठाम अपन आलेखसबमे व्यक्त कएने छथि।

नेपालक मोरंग क्षेत्र मैथिलीक लोक-गाथामे सर्वाधिक चर्चित स्थान रहल अछि। चाहे दुलरा दयाल लोक-गाथा हुअए, चाहे नयका वनिजारा चाहे रइया रणपाल। अनेक लोकगाथासबहक सम्बन्ध मोरंगसँ रहल अछि। अमर सिंह लोक गाथामे मोरंगक चर्चा अछि -

"तनिये असिसबा मैया कमला दैये देगे ना
सरती जनु मोरंगके चमराके सधवह ना।"

तहिना राजा धनपालक लोक गाथामे -

"खने-खने जाय राजा जी सीटी मोरंग राज
खने-खने जाय राजा जी मोगलान सन सन"

तहिना नेपालक कोसी, कमलाक चर्चा कतेको लोक गाथामे रहल अछि।

एहि कार्यपत्रमे उल्लेख नहि भेल किछु विषयक एवं स्थानक प्रसंग हम चर्च करऽ चाहै छी राजा सलहेस गाथाक सम्वन्धित स्थान "ननमहरी" सम्बन्धमे डा. मोतीलाल यदव एकरा धनुषा जिलाक ननमहरीके बतौलनि अछि, हमरा विचारसँ ई स्थानक प्रसंग अनुसन्धानक आवश्यकता सेहो अछि।

मूर्तियाक भग्नावशेष

मूर्तियाक भग्नावशेषक प्रसंग एहि क्षेत्रक बुढ़-पुरानसभक कथन छनि जे ई क्षेत्र सती विहुला किंवा जया-विसहरिसँ सम्बन्धित अछि। चन्नु बनिया शिवभक्त छल ओकरे बेटा बालालखिन्दर छलैक। एखनो एहि क्षेत्रमे सातगोट प्राचीन पोखरि अछि आ कतेको शिवालयसब एहि क्षेत्रमे अवस्थित अछि। चिरताइन महादेव नवलपुर आ मलंगबाक मध्यमे पड़ैत अछि तऽ रजवा बजारस्थित रजवा शिवालय अछि।

कृष्णाराम गोप

कृष्णाराम गोप, यादव जातिसँ सम्बद्ध गाथा अछि। एकर गाथाक स्थान सप्तरी जिलाक महुली बजारसँ उत्तर पड़ैत अछि। एहिठाम कृष्णारामक वास छल। ओ सभक जान-मालके रक्षा करैत छलथिन। एहिठामक लोक प्रत्येक वर्ष कृष्णारामके खीर चढ़ाकऽ जनार दैत अछि। सप्तरी आ सुनसरी जिलामे यादवलोकनि हिनका कुल देवता मानै छथि।

संरक्षणक प्रसंग

संरक्षण संबर्द्धनक प्रसंग कार्यपत्रमे देल विचार विचारणीय अछि। सँगहि लोकगाथा समदासोन्मुख अवस्थामे पहुँच गेल अछि। एहि गाथा, गायक अथवा जे गाथा नाट्यक रूपमे प्रदर्शित भऽ रहल अछि ओकरासबके राज्यदिससँ एवं स्थानीय संघ-संस्था दिससँ खोज-शोध कऽ संरक्षण प्रदान कएल जएबाक चाही सँगहि मिथिला ग्रामक स्थापना कऽ पर्यटन उद्योग अभिवृद्धि एवं विकासक दृष्टिसँ एवं पर्यटकसबकैं आकर्षण एवं वास वृद्धिहेतु टोली निर्माण कऽ लोकगाथा गायक, लोक नाट्यक माध्यमसँ मिथिला ग्राममे प्रत्येक दिन गायन-प्रदर्शनक व्यवस्था हएब सेहो आवश्यक अछि।

vvv

मैथिली लोकगीतक अवस्था

– डा. रामानन्द झा 'रमण'

डा. महेन्द्रनारायण रामक उपर्युक्त विषयक कार्यपत्र परिश्रमपूर्वक तैआर कएल गेल अछि। डा. राम मैथिली लोक-साहित्यक क्षेत्रमे किछु मौलिक काज कएलनि अछि। किन्तु एहिस्तरक संगोष्ठीमे कार्यपत्र प्रस्तुत करबाक समय किछु बिन्दुकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक होइत छैक। एहिहेतु जे संगोष्ठीक श्रोता ओहन नहि रहैत छथि जनिका ककहरा पढ़ाओल जाए। श्रोतावर्गमे सामान्यतः बहुपठित एवं अपन-अपन क्षेत्रक विशेषज्ञ उपस्थित रहैत छथि। उपस्थित छथिओ। तएँ ई मानि कार्यपत्र प्रस्तुत कएल जएबाक चाहैत छलनि जे हमर कार्यपत्रक श्रोता असामान्य ज्ञान आ प्रतिभाक लोक रहताह। प्रस्तुत कार्यपत्र विशिष्ट श्रोताकेँ समक्ष राखि नहि लिखल गेल अछि। कार्यपत्र परिचयात्मक आ इतिवृत्तात्मक अछि। विश्लेषणात्मक होएबाक चाहैत छलैक। एहन विश्लेषणात्मक जे श्रोता/पाठककेँ वैचारिक स्तरपर उद्वेलित करबाक क्षमता रखैत हो। उदाहरणलेल विशेष अवसर आ भासक गीत लगनीक नाम लेब। लगनी कोन संस्कृतिक उपज थिक। जाँत चलओलापर जे थकनी होइत छैक, तकरा गीत गाबि कोना बिसरल जाइत छल। ओहि माध्यमे ननदि-भाउजक हास-परिहाससँ वातावरण कोना महमहा उठैत छलैक। सम्प्रति जखन जाँतक स्थान मिक्सी लेने जाइत अछि ढ़ेकीक स्थान मील, तखन एहि तरहक श्रम- गीतक विलुप्तिक सम्भावना कोना बढ़िरहल अछि, आदि। कहबाक तात्पर्य जे लोकगीत संस्कृतिक संवाहक थिक। लोकगीतमे सम्बन्धित क्षेत्रक संस्कृति झलकैत रहैत छैक। एहन स्फीत विश्लेषणात्मक दृष्टिक अभाव डा. रामक कार्यपत्रमे खटकैत अछि।

कार्यपत्रक विषय अछि, लोक गीतक अवस्था। एहिमे तीनटा पद अछि लोक, गीत आ अवस्था। गीतक महत्व सर्वकालिक छैक। जहिआसँ मानवक अस्तित्व छैक, कोनो ने कोनो प्रकारक गीत ओकर कण्ठसँ स्वतः निःसृत होइत रहल अछि। अपन परिवेश वा सजातीय किंवा मानव जातिक प्रति रागात्मक होएब लोकक स्वभावगत विशेषता थिकैक। तएँ सब भौगोलिक वा सांस्कृतिक क्षेत्रक लोकक जीवनमे गीतक महत्व छैक आ सदा रहतैक। एतेकधरि जे हमरालोकनिक देवीदेवता सेहो संगीत प्रेमी छथि। केओ डमरु बजा कऽ ताण्डब करैत छथि तँ केओ वीणावादिनी कहबैत छथि।

दोसर पद अछि लोक। लोक तँ सबदिनसँ अछि। लोक अछि, तएँ राग अछि, विराग अछि। तएँ गीत अछि। मैथिल संस्कृतिमे जेना वेदक अर्थात् शास्त्रक महत्व अछि ओहिना लोकक अर्थात् शास्त्रीयतासँ मुक्त आचार-व्यवहारक महत्व अछि। लोक आ वेद समानान्तर मानल गेल अछि। 'लोक च वेदे च'। व्यावहारिको जीवनमे लोकवेदक पुछारी करब सामान्य शिष्टाचार भऽ गेल अछि। समाजमे दूनू वर्गक लोक रहैत आएल अछि। जे शास्त्रीय शब्दावलीमे आभिजात्य वर्ग आ सामान्य वर्ग थिक। एहि आधारपर साहित्योक वर्गीकरण- शिष्ट साहित्य एवं लोक साहित्य अछि। सिद्धाचार्यलोकनि तथाकथित शिष्टवर्गक लोक नहि छलाह। किन्तु मैथिलीमे जे प्राचीनतम गीत साहित्य उपलब्ध अछि, से सिद्धाचार्यलोकनिक रचना थिक। ओ जीवनक रागात्मक अनुभूतिक स्थानपर अपन अनुभव आ दर्शनक अभिव्यक्तिक माध्यम लोकभाषकेँ बना गीतक रचना कएल। कविकोकिल विद्यापति लोकक महत्व आ लोकक भाषाक महत्व बूझलनि। तएँ सर्वत्र पूज्य आ' मान्य छथि। लोक हुनक रचनामे अपन राग-विरागकेँ अभिव्यक्त भेल अनुभव करैत अछि। लोकक महत्वकेँ देखैत महाकवि भवभूति रामकेँ आदर्श शासकक रूपमे चित्रित करैत हुनकासँ कहबाओल अछि- राज्य, सुख आ देशकेँ- एतेकधरि जे सीताकेँ लोकक आराधनाक हेतु छोड़बामे व्यथा नहि हएत-

राज्यं, दयां च सौख्यं च, यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्तिमेकथा॥

लोक की कहत? से सोचि राजा राम सीताक निर्वासन कऽ देलनि। किन्तु हुनकामे लोकतन्त्रीय जीवन- मूल्यक अभाव छल। एकर विपरीत सीता लोकतन्त्रीय शासन-व्यवस्था जनमल छलीह। लोकतन्त्रमे अपन विचार व्यक्त करबाक स्वतन्त्रता होइत छैक, से हृदयंगम छलनि। ओ जनैत छलीह जे मिथिलामे लोकशक्तिक महत्व अछि आ राजा जनक लोकहिक प्रतिनिधि थिकाह। लोकतन्त्रक भूमिमे जनमलि सीता अश्वमेघ यज्ञक प्रसंगमे राजा रामक समक्ष मिथिलाक लोक आ शासन-व्यवस्थाक स्मरण करबैत अपन विचार रखने छलीह-

"मिथिलाक लोक नहि थिकनि राजक दास
स्वाधीनमना लोकक प्रतिनिधि थिकाह मिथिलेश
अहाँ करबैक आक्रमण।
मिथिला भऽ जएत पुरुषहीन, तखने ने अहाँक जीत?
पति-पुत्र विहीना नारीक नोरसँ मिथिलाक भूमि हैत पाँक हैँक।

फोड़ल लहठीक लागत ढ़ेर-पहाड़,
माङक सिन्दूरसँ भरत मिथिलाक भू-नभ, दिगन्त,
सोहर, कोबर, बटगबनी, लगनी, मलार, रास,
संगीतक सब राग-भास
मरि लुप्त हैत ।'[1]

राजतन्त्रमे वैचारिक मतभिन्नताक अवकाश नहि छैक । राजतन्त्रीय शासन-व्यवस्थामे प्रशिक्षित राजा रामक लेल वैचारिक भतभिन्नताक महत्व नहि छल । सीताद्वारा मिथिलाक प्रसंग स्थिति कथन राजद्रोहक दण्ड होइत अछि- मृत्यु दण्ड वा देश निष्कासनक दण्ड सीताकेँ भेटलनि ।

मिथिलाक संस्कृतिमे लोकतन्त्रात्मक मूल्य कतेक प्रगाढ़ अछि तकर साक्ष्य नेपाल तराईक घुमन्तू गायकक मुहेँ सुनि लिपिबद्ध भेल जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन संकलित गीत दीनाभद्रीसँ सेहो प्रमाणित होइत अछि। मुसाहु बनियाँ जखन अकारण दीनाभद्रीकेँ अपन दोकानपरसँ ठोँठिआ दैत अछि तँ ओ तकर प्रतिकार अपन शारीरिक बलसँ नहि कऽ, निसाफक हेतु पंचक ओतऽ जाए नालिस करैत अछि-

पंचमेँ भद्री देलन्हि नालिस कराय ।
छोट पंच बड़ पंच सिरक मटुक ।
बिनु अपराधेँ गरदनियाँ देलक मुसाहु, करु मोर निसाफ ।
किअ कहौ, हे मुसाहु, बिनु अपराधेँ गरदनियाँ देलह ॥
तोहर दोकान मना परि जाइत ।[2]

हमर देश अर्थात् भारत विदेशी आक्रमण, राजतन्त्र आ उपनिवेशवादक पीड़ा कतेको शताब्दीधरि भोगि स्वतन्त्र भेल एवं लोकतन्त्रक स्थापना भेलैक अछि। भारतक नागरिक अपन भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक प्रचार-प्रसार एवं संरक्षणक लेल स्वतन्त्र अछि। ओहिलेल पूर्ण अवसर छनि। अपनेलोकनि (नेपालवासी) कतेको शताब्दीधरि राजतन्त्रकेँ भोगैत ओहिसँ मुक्तिक लेल अनवरत संघर्ष करैत अएलहुँ अछि। ओहि संघर्षसँ लोकतन्त्रक उदय भेल अछि। सुन्दर भोर समक्ष अछि। एहि लोकतन्त्रक युगमे जाहि कोनो शक्तिक सबसँ बेसी महत्व छैक से थिक लोकसत्ता आ लोकक राग-विराग एवं लोक जीवनकेँ प्रतिनिधित्व करऽबाला लोक साहित्य। एहि सन्दर्भमे 'मैथिली लोक संस्कृति'पर संगोष्ठी अयोजित करब, लोकशक्तिक प्रतिष्ठानक दिशामे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण डेग थिक। अपनेलोकनि लोकतन्त्रक स्थापनालेल कतेक लालायित छलहुँ आ कतेक आशान्वित छी, तकरा ई संगोष्ठी प्रतिध्वनित करैत अछि।

तेसर पद अछि अवस्था । अवस्था कालक द्योतक थिक- भूत, वर्तमान आ भविष्य । अर्थात् मैथिली लोकगीतक अवस्था कि छलैक, वर्तमान कालमे कोन अवस्थामे अछि तथा भविष्यमे मैथिली लोकगीत कोन अवस्थामे रहत । ई सब केओ एक स्वरँ एवं मुक्त कण्ठसँ स्वीकारैत छी जे मैथिलीक लोकगीत महान संस्कृतिक वाहिका थिक । एहि लोकगीतमे हमर राग-विराग, आशा-आकांक्षा, सुख-दुख, ज्ञान-विज्ञान, जातीय इतिहास, भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक सुषमा, जीवन-शैली तथा सांस्कृतिक सम्पदा अनेक रूपमे अछि- दृश्य आ अदृश्य दूनू रागात्मकतासँ लबालब भरल अछि। जीवनक एहन कोनो पक्ष नहि छैक जकर रागात्मक अभिव्यक्ति लोकगीतमे नहि हो। तुलसी, कुश, आम, महु, नीम, बाँस, काछु, पुरैनिक पात, तिलकोरक पातसँ लऽ कैं भोजन-विन्यासधरि लोकगीतमे भेटत। गर्भ धारणसँ मृत्युधरिक समस्त संस्कार लोकगीतमे अपन पृथक राग-भास एवं विषय-वस्तुक सँग अनुस्यूत अछि ।

लोकगीतमे युग-युगक अनुभव सुरक्षित रहैत अछि । ई अनुभव सम्प्रति पारम्परिक लोक ज्ञान (Traditional folk knowledge) क स्रोतक रूपमे मान्यता पाबिगेल अछि । एहि प्रसंग एक दू टा उदाहरण प्रस्तुत अछि ।

विवाह पूर्व वा अन्यो अवसरपर उवटन लगेबाक प्रथा अदौकालसँ प्रचलित अछि। उबटनमे मेथीक प्रयोग होइत अछि। ओहिना हरदि लगेबाक प्रथा अछि। एहि दूनूमे औषधीय गुण छैक जे विज्ञानद्वारा प्रमाणित अछि। घर-घरमे तुलसीक गाछ अछि। धी-सुआसिन ओकर जड़िमे जल ढ़ारैत छथि। साँझमे दीप लेसैत छथि। बेलक पात शिवजीकेँ चढ़बैत छथि। मैथिली लोकगीतमे एहि वनस्पतिसबहक महत्व अकारण नहि अछि। समय-शीलापर परीक्षित एवं अनुभवसिद्ध अछि। ई वनस्पति सब औषधीय एवं पर्यावरणीय महत्वक वस्तुक थिक जकर उपयोग होइत आएल अछि। लोकगीतमे आ व्यवहारमे रहलाक कारणेँ ई पारम्परिक ज्ञानक स्रोत भऽ गेल अछि। एहि पारम्परिक लोकज्ञानक स्रोतसँ मानवजाति लाभान्वित भेल अछि। लोकगीतमे वैज्ञानिक तत्व रहबाक ई स्पष्ट उदाहरण थिक। उबटनक गीतमे मेथी पिसबाक चर्च बेर-बेर अबैत अछि ।

कओन नाना मेथिया बेसाहल? कओने नानी पीसल?
अपन नाना मेथिया बेसाहल, सूहब नानी पीसल ।

कनि बिलमि एहि गीतपर विचार कएल जाए। बेसाहब, अपन खेत-पथारसँ आवश्यकताक पूर्ति नहि होएब थिक। बेसाह लगैत छनि, अर्थात् अन्न-पानिक अभाव छनि। ई लोकगीत परिवारक आर्थिक स्थितिकेँ सेहो

देखबैत अछि। तथापि मातामहद्वारा दौहित्रीक उबटनहेतु मेथी बेसाहल जाइत अछि। बेसाहल मेथी मातामहि नातिनलेल पीसैत छथि। आनो केओ पीसि सकैत छलीह। मुदा रागात्मकताक महत्व छैक। तएँ नानीक पीसल मेथी गलाओल जएबाक चर्च अछि। रागात्मकताक रंगमे व्यावहारिकता एवं लाभप्रदताकेँ बोरि जीवनमे अंगीकृत कऽ लेब मैथिल संस्कृतिक अनुपम विशेषता थिकैक। ई विशेषता उबटनक एहि गीतमे वर्तमान अछि। एहिना हरदिक प्रसंगके लोकगीतमे पर्याप्त चर्च अछि :-

हरदीक बड़ा सजाबट जनक जी, हरदीमे बड़ा सजाबट।
पहिल हरदी दादा चढ़ावे पाछूसँ दादी सोहागिन, जनक जी।
हरदी बड़ा सजाबट।

लोक जीवनमे उपयोगिता, रागात्मकता, सौन्दर्यप्रियता एवं सामाजिकताक अत्यन्त महत्व अछि। सामाजिकता रागात्मकतासँ कोना मंडित रहैत अछि तकर उदाहरण निम्नलिखित गीतक पाँतिमे द्रष्टव्य अछि। 'सेन्टो गमकदार' प्राचीन प्रयोग नहि थिक। ई लोकगीतक लोचकताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीता पसाहिन आइ अछि।
चाचीक हाथमे तेल फुलेल, मामीक हाथ कसाइ अछि
मौसीक हाथमे अत्तर सुगन्धित, सेन्टो गमकदार अछि।
जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीता पसाहिन आइ अछि।

विवाहक अवसरपर सोहाग देबाक प्रथा अछि। सोहाग थिक सौभाग्य-कामना, मंगलमय दाम्पत्य जीवनक हेतु आशीर्वचन। मैथिल संस्कृतिमे सामाजिक समरसताक तत्व प्रगाढ़ अछि। एहि तत्वक गीतात्मक अभिव्यक्ति हास्य-विनोदक सृष्टिक सँग कोना कएल जाइत अछि से प्रस्तुत सोहाग गीतक 'लट छिलकी धोबिनियाँ'क प्रयोग वर्तमान अछि। धोबिनियाँ सामान्य नहि अछि, सौन्दर्य चेतना छैक। कपोलपर लट लटकौने अछि। एहि लटक कतेको कवि 'कारी सियाह नाग'सँ तुलना कएने छथि। एहिठाम आनो केओ भऽ सकैत छलि, धोबिनियाँ किएक ?

एकरहु एक पौराणिक कारण छैक। शिवजीक मानस पुत्रीक विआहक अवसरपर समाजक अनेकहु महिलालोकनि सोहागलेल उपस्थित भेल छलीह। किन्तु ओहिमे सबसँ आगू छलीह एक धोबिन। गणेशजीसँ ओकरा अखण्ड सौभाग्यक वरदान भेटलैक। एहिहेतु समयसँ पहिने अखण्ड सौभाग्यक वरदान प्राप्त धोबिनसँ सोहागक परिपाटी अछि। एहि एक शब्दमे एक संस्कृति अछि। एक कथा गुम्फित अछि।

सियाजीके दही ने सोहाग गे, लट छिलकी धोबिनियाँ
हमरो सियाजीकेँ पिअरे पिताम्बर
सेहो तोँ लिहे फेराए गे, लट छिलकी धोबिनियाँ।
हमरो सियाजीकेँ सोना अशर्फी।
सेहो तोँ लए गे, लट छिलकी धोबिनियाँ।

समाजमे कन्याकेँ पुत्रवत् सुविधा, विकासक अवसर आ अधिकार प्राप्त नहि छैक। ई विभेद जन्मकालहिसँ आरम्भ भऽ जाइत अछि। एकोटा एहन सोहर नहि भेटत जाहिमे सीता, पार्वती, राधा, लक्ष्मी वा सरस्वतीक जन्मक उल्लास हो। सबटा राम वा कृष्णक जन्मसँ सम्बन्धित अछि। पुत्रक जन्मक अवसरपर बहिंगा फँकबाक कतेको ठाम प्रथा अछि। ई प्रसन्नताक सँग शौर्यक अभिव्यक्ति थिक। बेटीक जन्मसँ उल्लासक स्थानपर परिवारमे अवसाद पसरि जाइत छैक। धरतीक झझकब, नार-पुरैनि काटबालेल हाँसू तकबाक क्रममे चक्कूओ नहि भेटब आ अन्ततः खुरचनसँ नार काटब, सासु एवं ननदिक व्यवहारमे रुच्छता तथा पतिक मुखाकृतिमे अप्रसन्नताक चेन्ह आदिक अभिव्यक्ति लोकगीतमे पर्याप्त भेल अछि। 'जाहि दिन आगे बेटी तोहरो विआह भेल, तारा गिरल आधी रात बेटीक विवाहक लेल माइक चिन्ताकेँ स्वर दैत अछि।

जाहि दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल, धरती उठल झझकाइ हे।
हँसुआ खोजइते गे बेटी छुरियो न भेटल, सितुआसँ नार कटाओल हे।
सासु ननदी गे बेटी मुखहुँ न बोलए, स्वामी जीकेँ जियरा उदास हे।
जाहि दिन आगे बेटी तोहरो विआह भेल, तारा गिरल आधी रात हे।

भ्रुण-परीक्षण आधुनिक विज्ञानक देन थिक। एहि परीक्षणसँ अनिच्छित संतानकेँ सूर्यक प्रथम रश्मि देखबाक अवसर नहि भेटैत छैक। पहिने ई सुविधा नहि छलैक। किन्तु जन्मसँ माएकेँ जे पारिवारिक आ सामाजिक प्रतारण एवं उपेक्षा होइत छलैक, लोकगीतमे तकर चित्रण अत्यन्त कारुणिक अछि। नारीक प्रति ई उपेक्षा भाव वर्तमान समयधरि व्याप्त अछि। एहि मानसिकतासँ स्त्री-पुरुषक जनसंख्यामे भेल असंतुलनकेँ समाज वैज्ञानिक सामाजिक संकटक रूपमे देखऽ लगलाह अछि। परिवारमे पुत्रीक जन्मसँ होइत अवसादक लोकगीतमे भेल अभिव्यक्ति मानवीय संवेदनाक तारकेँ झनझना दैत अछि।

पहिले जे जनितउँ धीया रे जनम लेत, खएतउँ मरिच पचास हे।
मरिचक झाँस धीयाधरि जाइत, छुटितइ धीयाक संताप हे।

पितृसत्तात्मक समाजमे पुरुष मानसिकताक दोसर उदाहरण थिक पत्नीकेँ सेविका मानबाक मानसिकता। एहि मानसिकतामे विवेकक अभाव

तँ अछिए अर्थलोलुपता सेहो अछि। निम्नलिखित लोकगीतमे 'रुनझुन-रुनझुन' शब्द नव विवाहिताक पति-मिलनक उत्कण्ठा, पूर्ण रागात्मक संवेदनाक सँग अभिव्यक्ति भेल अछि। प्रतीत होइछ नव कनियाँक पएरक नुपूर नहि बजैत हो, ओकर हृदय एवं शरीरक अंग-अंग पुलकित एवं झंकृत भऽ नाद कऽ रहल हो। किन्तु स्वामीक आदेशपर ओ भरि राति बिअनि हौंकैत रहि जाइत अछि - 'आध राति हौँकल, पहर राति हौँकल-

रुनझुन-रुनझुन, इहो नबि कोहबर हे।

आहे माइ, ताहि कोहवर सुतलनि कओन दुलहा, बेनिया डोलए मांगे हे।

आध राति हौँकल, पहर राति हौँकल हे।

होत भिनसर बेनिया टूटि गेल, बेनिया ला रुसि गेला हे॥

ककरा भेजब बाबा घर, ककरा भेजब भइया घर हे।

परभुजी अरजल बेनिया टूटि गेल, बेनिया ला रुसि गेला हे।

हजमा भेजऽ बाबा घर, ब्राह्मन भेजऽ भइया घर हे।

आगे माइ, हरिजी अरजल बेनिया टूटि गेल, बेनिया ला रुसल छथि हे।

हाथी चढ़ल बाबा आबे, घोडा चढ़ल भइया आबे हे।

बीचहिँ बेनिया झलकैत आबे, हम नैहर जएबै॥

उपर्युक्त उदाहरणमे प्रभुजीक अर्थात् पतिक अरजल बिअनि प्रभुजीकेँ अनवरत हौँकैत रहलासँ पत्नीक हाथमे टूटि जाइत अछि। एहिमे ओकर कोन दोष छलैक? किन्तु त्रासद पक्ष अछि जे पतिक आचरणसँ पत्नीमे असामान्य ग्लानिक बोध होइत छैक। कोनो आन उपाय नहि देखि, नैहर समाद पठाव तकर पूर्ति करबाक निर्णय करैत अछि। एकप्रकारेँ ओ जुर्माना भरैत अछि। तकरबादे नैहर जएबाक अनुमति भेटैत छैक। अर्थात् पतिक अरजल बिअनि टूटि गेलासँ जुर्माना भरबाधरि ओ सासुरमे बन्धक बनल छलि। 'हाथी चढ़ल बाबा आबे, घोड़ा चढ़ल भइया आबे हे, बीचहिँ बेनिया झलकैत आबे' आ' आब हम नैहर जएबै' नारी जातिक एहि त्रासदीक अभिव्यक्ति थिक। ई सामाजिक विकृति एवं अर्थलोलुपता कमल नहि अछि। दहेज लोभी आखेट आदेट नव विवाहित निरन्तर भऽ रहल छथि। लोकगीतमे पुरुष मानसिकता आ नारी उत्पीड़नक पर्याप्त चित्रण अछि। ई चित्रण सब वस्तुतः सामाजिक मनोवृत्तिक एक करुण इतिहास थिक।

कृषि संस्कृतिक देन लगनी, विशेष भास एवं अवसरक गीत थिक। एहि कोटिक गीतमे सेहो बधू उत्पीड़नक चित्रण अछि-

घर पछुअरबा लौँग केर गछिया, लौँग फूलेल आधि रतिया रे दइबा।

लौँगवाके चुनी चुनी सँजिया ओछइली, सुती रहलइ सासुजीके बेटबा हो दइया।

घुरि सुतु फिरि सुतु सासुजीके बेटबा ननदी जीके भैया।

तोहर घामसँ भीजल सब चोलिया हे दइया।

उपर्युक्त गीतक पाँतीमे प्रयुक्त 'सासुजीके बेटबा' एवं 'ननदी जीके भैया'पर विचार कएल जाए। ओ पति, स्वामी आदि कहि सम्बोधित नहि करैत अछि। स्पष्ट अछि जे पति अपन पत्नीक निकट नहि छथि। ओ माइ-बहिनिक कहलमे छथि। सासु एवं ननदि सुनियोजित रूपसँ अत्यधिक परिश्रम करबैत छैक जाहिसँ पुतहुक स्वेदसिक्त अंगवस्त्र पतिक विकर्षणक कारण बनल रहए। 'घुरि सुतु फिरि सुतु सासुजीके बेटबा ननदी जीके भैया'- एही स्थिति दिस संकेत करैत अछि।

प्रस्तुत गीतमे मिलनोत्कंठित मनोदशाक सूक्ष्म एवं सुन्दर वर्णन अछि। ओ अपन तुलना लवँगक फूलसँ करैत अछि। जे पूर्णतः प्रस्फूटित होएबासँ पहिने अधरतियेमे तोड़ि लेल गेल हो। ई नायिकाक अर्धविकसित रहबाक द्योतक थिक। किन्तु प्रस्फूटनक उष्मासँ अवश्य ओ मातलि अछि। जे 'लौँगवाके चुनी चुनी सँजिया ओछइली'सँ स्पष्ट अछि। एहि गीतमे अप्रस्तुत एवं प्रस्तुत विधानक अद्‌भूत नियोजन भेल छैक। एकबेर नायिका लेल, जे प्रस्तुत अछि, प्रस्तुत लवँगक फूल आ दोसरबेर अप्रस्तुत मनक उल्लासलेल प्रस्तुत लवँगक फूलक प्रयोग भेल अछि। बेली-चमेली वा केओलाक प्रयोग मैथिली लोकगीतमे ठाम-ठाम भेटैत अछि। किन्तु औषधीय गुणसँ युक्त एवं मिथिलासँ भिन्न प्राकृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्रमे सुलभ लवँगक फूलक सँग नायिकाक मनोदशाक वर्णन दुर्लभ अछि। एहि लगनीक अगिला पाँतिमे. अछि -

घर पछुअरबामे बसे एक मलहा, मलाहा रे जमुनामे फेँकू महाजाल रे दइबा।

तोहरोके देबौ मलहा दही-चूड़ा भोजन रे, जमुनामे फेकू महजाल रे दइबा।

एक जाल फेंकले मलहा, दुइ जाल फेँकले , तेसर जाल घोँघटा सँए मारलए रे दइबा।

एक जाल फेँकले मलहा, दुइ जाल फेँकले , तेसर जाल धनीके लहरबा रे दइबा।

कृषि संस्कृतिक नायिकाक कृषि संस्कृतिक नायकक (घर पछुअरबामे बसे एक मलहा) प्रति आर्कषण सहज अछि। किन्तु नायिकाद्वारा जमुनामे

जाल फँकबालेल कहब कम महत्वपूर्ण नहि अछि। गंगा शान्त छथि तँ जमुना तीव्र प्रवाहिनी। एहि हेतु जमुनामे पार होएब लेल अपेक्षाकृत बेसी साहस, धैर्य आ परिश्रम चाही। स्पष्ट अछि जे नायिका तेसरबेर जाल फँकलापर आकर्षित होइत अछि। अपन तुलना ओ जमुनासँ करैत अछि। एहि आकर्षणक नाटकीय अभिव्यक्ति प्रस्तुत लोकगीतमे भेल अछि।

लोक गीतक विशेषता

गीतक विशेषताकेँ मोटामोटी निम्नलिखित रूपमे विभाजित कएल जा सकैत अछि -

१. **सामूहिकता -** लोकगीत सामूहिकरूपसँ गाओल जाइत अछि। ओ लगनी, बटगवनी हो वा मांगलिक अवसरपर गाओल जाइत गीत। एकल गायन कुशल गायक/गायिका टा श्रोताक ध्यान आकर्षित करैत अछि। ई लोकात्मक होएबाक सेहो प्रमाण थिक।

२. **सहभागिता आ व्यापकता -** सँग-सँग भोगब भेल सहभागिता। लोक गीतमे समाज वा सांस्कृतिक समूहक राग-विराग, विजय-पराजयक आदिक रागात्मक अभिव्यक्ति रहैत अछि।

३. **परिस्थिति एवं मनस्थितिक अनुरूप अनुकूलन -** लोक गीत एक दिनमे नहि सहस्रो वर्षधरि अनुभवक उपरान्त वर्तमान स्वरूपमे आएल अछि। जे युगक घात सहि नहि सकल छिटकैत गेल। लोकक नव-नव अनुभव जोड़ाइत गेलैक। लोक गीतक ई लोचकता ओकरा टटका आ सुस्वादु बनौने रहैत अछि।

४. **नृत्यक सँग प्रगाढ़ एवं सुदृढ़ सम्बन्ध -** लोकगीतक नृत्यक सँग प्रगाढ़ सम्बन्ध सामूहिक गायनक समय अकस्मात दर्शन भऽ जाइत अछि।

वर्तमान

परिवेश बदलैत अछि। लोकक आवश्यकता आ रुचि बदलैत अछि। सम्बन्ध आ सरोकार बदलैत अछि। एहिसँ सामाजिक जीवनमे परिवर्तन अबैत अछि। एहि परिवर्तनक प्रभाव लोकक जीवन-यापनपर पड़ैत छैक। उद्योगीकरण आ शहरीकरणसँ श्रमक पलायन आरम्भ भेल। गाम-घर, खेत पथारऽ पोखरि -झाँखरि, वन- पर्वतक स्थानपर लोककेँ गोठुल्लामे रहबाक बाध्यता भऽ गेलैक। ओ भिन्न भाषा-भाषी एवं संस्कृतिक लोकक बीच जीबैत रहबालेल विवश होइत रहल। पहिने देशहिक एक कोनसँ दोसर कोन लोक जाइत छल। आब विश्वक एक कोनसँ दोसर कोनधरि उड़ि

जाइत अछि। जाहिठाम सब किछु अनचिन्हार रहैत छैक। अपरिचित रहैत छैक। बजारबाद अपन अकादारुण मुह बाबि सबकिछु गीरि अपन रंग पसारबालेल द्रुत वेगसँ चतुर्दिक पसरिरहल अछि। जाँत पीसब वा ढ़ेकी कूटब अनावश्यक भऽ गेलैक अछि। तखन लगनीक कोन प्रयोजन रहि जाइत। पहिनहिसँ वर कनियाँ 'हाय! हेलो!' करैत रहैत छथि, तखन मुहबज्जी वा कहोवरक गीतक की होइतैक ? बजारमे रंग-विरंगक क्रीम आ लोशन उपलब्ध छैक, नानी मेथी कथीलेल पीसतीह ? गोदना आब गोदौल नहि जाइत अछि। खोदपारनि आओत कतऽसँ जे अवसरोचित गीत द्वारा हास-परिहास होइत। टेटूक फाहामे लहरिया कतऽसँ आओत, जकर तुलना पति वियोगक लहरिसँ कएल जा सकैछ। (*हमरो लहरिया गे सुन्दरी सहलो ने जाइ छउ रे जान! जान सूइयाके लहरिया कोना सहबे रे जान! सूइयाके लहरिया हे पिअबे घड़ी रे दंइ घड़िए रे जान! जान तोहरो लहरिया हो पिअबे सगर रतिया रे जान!*)। नवजातक वा नेनाक स्वास्थ्य रक्षा लेल विभिन्न प्रकारक औषधि एवं सूई आदिक निर्माण भेल अछि। तखन पाच आ ओहि अवसरपर गबै जाएबाला पाच गीतक कोन प्रयोजन रहि जएतैक ? पसरैत यान्त्रिकता, सांस्कृतिक परिवेशसँ दूर जीवन- यापन, प्रदर्शन-प्रभाव एवं बाजारबाद तथा संचारमाध्यमक माध्यमे अहर्निश प्रहारसँ लोक-संस्कृति प्रभावित एवं विकृत भऽ रहल अछि। ओकर कतेको वैशिष्ठ्य लुप्त होएबाक कनगीपर छैक।

संरक्षणक उपाय

पारम्परिक ज्ञानक स्रोत एवं मानव जातिक विकासक भावात्मक अभिलेखक संरक्षणदिस विश्व समुदाय (यूनेस्को)क ध्यान हालहिमे गेल अछि। पहिने विश्व समुदाय इँटा-पाथरहिकेँ सांस्कृतिक सम्पदा मानि विश्वस्तरपर ओकर संरक्षणक हेतु नीति-निर्धारण करैत छल। ओहिलेल सुविधा दैत छलैक। किन्तु भूमण्डलीकरणक चपेटमे विश्वक सम्पन्न सांस्कृतिक वैविध्यपर बढ़ल संकट एवं कतेको राष्ट्र तथा एवं नृवर्गक (ethnic group) सांस्कृतिक परिचितिकेँ संकटापन्न स्थितिमे अनुभव कऽ यूनेस्कोक ध्यान अस्पृश्य, अभौतिक एवं निराकार (Intangible) सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षणक महत्वदिस गेलैक अछि। आ ई विश्वास बलवती भऽ गेलैक अछि जे अभौतिक एवं निराकार सांस्कृतिक सम्पदा कोनहुँ प्रकारसँ साकार भौतिक (tangible) सांस्कृतिक सम्पदासँ दऽब नहि अछि। इहो ओहिना संरक्षणीय अछि जेना साकार भौतिक सम्पदा। एहि निमित्त आहूत

बैसारमे अभौतिक एवं निराकार सांस्कृतिक सम्पदाकेँ परिभाषित करैत विश्वक सब देशसँ संरक्षणहेतु आवश्यक उपाय करबाक हेतु कहल गेल अछि।[३]

यूनेस्कोक वैविध्य सांस्कृतिक सम्पदाक सार्वभौम घोषणाक (UNESCO Universal Declaration on Cultural Diversity) अनुसार सांस्कृतिक विविधता मानवजातिक सामूहिक सम्पदा थिक एवं वर्तमान तथा भविष्यक सन्ततिक लाभक हेतु एकरा स्वीकृत आ' सम्पुष्ट कएल जएबाक चाही। सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षणहेतु यूनेस्कोक द्वारा दू टा बाटक अनुशंसा कएल गेल अछि -

क. चिन्हित करब एवं

ख. संरक्षण।

क) चिन्हित करब (Identification) **निम्नलिखित मार्ग निर्देशनक आधार लोक-गीतकेँ चिन्हित कएल जा सकैत अछि :-**

i) लोक-गीतक सार्वत्रिक(ग्लोबल) उपयोग हेतु सामान्य मार्ग निर्देश
ii) लोक-गीतक एक व्यापक रजिस्टर तैआर करब, तथा
iii) लोक-गीतक क्षेत्रीय वर्गीकरण

ख) लोक-गीतक संरक्षण (Conservation of folklore)

i) एक राष्ट्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जतऽ लोक-गीत नीकजकाँ संकलित रहए तथा जिज्ञासुकेँ उपलब्ध भऽ सकए।
ii) एक केन्द्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जे सेवा कार्यक हेतु काज करए।
iii) एक संग्रहालय स्थापित कएल जाए अथवा स्थापित संग्रहालयमे पारमपरिक एवं लोकप्रिय संस्कृति एवं कलाकृति प्रदर्शित रहए।
iv) पारम्परिक एवं लोकप्रिय संस्कृतिकेँ प्रस्तुतिमे प्राथमिकता देल जाए तथा यथासम्भव ओहि परिवेश/पृष्ठभूमिक जीवन-यापन, कौशल तकनीकी आदिक सृजन रहए।
v) लोकगीतक संकलन एवं अभिलेखनकेँ सुमेलित कएल जाए।
vi) संकलनकर्ता, अभिलेखकर्ता, एवं अन्य विशेषज्ञकेँ लोक-गीतक भौतिकसँ विश्लेषणात्मक संरक्षणलेल प्रशिक्षित करब, तथा
vii) संकलित सांस्कृतिक सम्पदाक सुरक्षाक हेतु लोकगीतक प्रतिलिपि सांस्कृतिक समुदाय एवं क्षेत्रीय संस्थाकेँ उपलब्ध कराएब जाहिसँ ओ सब सक्रिय बनल रहथि।

नृविज्ञानक मत अछि जे मानवताक विकासक क्रममे सर्वप्रथम

समष्टि चेतना (Tribal Consciousness) तदुपरान्त, हम-चेतना (We-Consciousness) आ' 'अहं चेतना (I-Consciousness) विकसित भेल। मानवक विकासक वास्तविक यात्रा एतहिसँ प्रारम्भ होइत छैक। ओना हमके छी ? से बूझबालेल कहि सकैत छी जे एक प्राणी छी, मनुष्य छी, नेपाली छी, भारतीय छी, उच्चवर्गमे जनमल छी, निम्नवर्गमे जनमल छी, आरक्षित वर्गमे छी, अनारक्षित वर्गमे छी आदि। मुदा, व्यष्टि चेतनाक सोड़ समष्टि चेतनामे ततेक गहीँरधरि छैक जे चाहिओ कऽ समष्टि चेतनासँ विलग नहि भऽ सकैत अछि आ अपन परिचितिक अभिव्यक्ति वा प्रदर्शन समष्टि चेतनामे एकाकार भऽ करैत अछि। विभिन्न सांस्कृतिक अनुष्ठान, विद्यापति स्मृतिपर्व अथवा मिथिला महोत्सव आदि आयोजित कएल जाएब व्यष्टि-चेतनाक समष्टि चेतनामे एकाकार होएब थिक। एहिसँ स्पष्ट अछि जे विकासक उत्कर्षक परिचयक हेतु भूतमे जाएब आवश्यक भऽ जाइछ। बिना भूतकेँ देखने, बूझने आ गमने वर्तमानमे ने प्रासंगिक रहि सकैत छी आ ने नीक भविष्यक कल्पना कऽ सकैत छी। लोक-गीतमे इएह समष्टि चेतना, हमर राग-विराग, उल्लास, अवसाद पराजय आदि, गीतक माध्यमसँ अभिव्यंजित अछि। आ जखन वा जतऽ कतहु पारम्परिक भासक गीत, जाहिमे हमर अतीतक समस्त अनुभूति अपन सन्दर्भ आ परिवेशक सँग साकार भेल रहैत अछि, कानमे पड़ैत अछि, हमर सुषुप्त आत्मीय रागात्मक तन्तु अकस्मात झनझना उठैत अछि। एहिहेतु लोक-गीतकेँ संस्कृतिक सर्वाधिक बलिष्ठ आ' सुरक्षित तत्व मानल गेल अछि।

संस्कृतिक उपयोगिताक प्रसंग एक अमेरिकन समाजशास्त्रीक मत[४] सर्वथा समीचीन अछि जे द्रुत सामाजिक विकास एवं नवोन्मेषलेल सांस्कृतिक तत्वक वैविध्य महत्वपूर्ण अछि। अर्थात् जतेक सांस्कृतिक वैविध्य एवं चेतना प्रखर हएत, ततेक विकासक गति द्रुततर हएत। मैथिल, सीमाक एहि पारक होथि वा ओहि पारक, अपेक्षित विकासक अवसर लेल अवश्य लालायित रहलाह अछि। एहन स्थितिमे द्रुत सामाजिक आ आर्थिक विकासक लेल एकमात्र समाधान सांस्कृतिक चेतनाक जागृति एवं सबलता थिक। एहि अभियानमे मैथिली लोक-गीतक संरक्षण प्रयोजनीये नहि, अनिवार्य सेहो अछि।

सन्दर्भ

१. पराशर, कांचीनाथ 'किरण'
२. गीत दीना-भद्रीक ओ नेबारक, 2010, सम्पादक डा.रमानन्द झा 'रमण' पृ.सं. ६८

३. "Convention for the safeguarding of the intangible cultural heritage"Article 2 :

The "intangible cultural heritage" means the practices, representation, expressions, knowledge, skill as well as the instruments, objects, artifacts and cultural space associated therewith- that communities,groups and in some cases, individual recognize as part of cultural heritage. At his intangible cultural heritage, transmitted from generation to generation, is constantly recreated by communities and groups in response to their environment, their interaction with nature and their history, and provides them with a sense of identity and continuity, thus promoting respect for cultural diversity and human creativity. For the purpose of this convention, consideration will be given solely to such intangible cultural heritage as in compitible with existing international human rights instruments, as well as with the requirement of mutual respect among communities, groups and individuals and sustainable development. The " intangible cultural heritage" as defined in paragraph 1 above, is manifested inter alia in the followed domains:

a) Oral traditions and expressions, including language as a vehicle of the intangible cultural heritage;

b) Performing arts.

४) ओग बर्न - The large number of cultural elements, the greater number of inventions and faster the rate of social change.

email : rnjharaman@gmail.com

30 May 2010

vvv

मिथिलाक संस्कार गीतमे निहित मौलिक चिन्तन

– डा. गंगाप्रसाद अकेला

१. मिथिलाक संस्कार गीतक सर्वप्रथम परिचय आ विषय वस्तुक पृष्ठभूमि देवाक चाही छल जकर डा. राजेन्द्र विमल जीक ६ पृष्ठक कार्यपत्रमे सर्वथा अभाव अछि।

२. पत्रक कही वा आलेखक प्रारम्भेमे विशिष्टता दर्शाओल बात उपयुक्तताक दृष्टिसँ पाछौं रखबाक चाही छल से कने खटकैत अछि।

३. जन्म-संस्कारक गीत - लोकजीवनमे प्राचीनकालसँ प्रचलित गीतक आभास नहि दैछ। यथाः-मिथिलाक लोकजीवनमे बच्चाक जन्म भेलापर गाब(वला गीतक ई पाँति देखू -

"राजा दशरथ घर जनमल राम लछुमन भरत सत्रोहन
से चारु भैया हे
ललना रे चहुँदिश बाजत आनन्द बधैया हे ॥
के लुटाबे अन धन सोनमा से के लुटाबे गला ग्रीमहार से
चहुँदिश बाजत....।
राजा लुटाबे अन धन सोनमा से
रानी लुटाबे गला ग्रीमहार से, चहुँदिश बाजत....॥

४. सोहर गीतक विभिन्न प्रकारक वर्णन :-

(i) शिल्पक दृष्टिसँ २ गोट-साधारण आ छन्दवला

(ii) गर्भकालक वर्णनक आधारपर-२ दू प्रकार - दसमासी आ साधारण सोहर

(iii) संक्षेपमे सोहर गीतक ७ प्रकारक उल्लेख - एक पक्षीय चित्रण जाहिमे 'दोहद' आ 'पुत्र लालसा' दू गोटक मात्र वर्णन

५. पृष्ठ - पत्रमे 'खेलओन' आ 'आश्वासन' आ तकरबाद 'मुण्डन' गीतक वर्गीकरण देल गेल अछि, जकर पुनरावृत्ति उपनयनक क्रममे सेहो कएल गेल अछि।

६. विवाह-गीतकेँ तीन वर्गमे- वरपक्षक, वधूपक्षक आ उभयपक्ष गीतमे राखल गेल अछि।

वरपक्षक गीतमे (३) कनियाँके महफासँ उतार(कालक गीत
(४) हरदि पिसबाक गीत
(५) खोईछ भरबाक गीत
(६) मुँह देखबाक गीत

सबहक उल्लेख अप्रसांगिक लगैछ

तहिना 'वधूपक्षक गीत'मे 'धोती पहिराबऽकालक गीतक उल्लेख वेमेल बुझाइछ ।

७. परिछन वरक रूप आभूषण आ परिधानक सुन्दर शब्द चित्रमे प्रथम पंक्ति :-

'मोहि लेल सजनी मोर मनमा
पहुनमा राघो होएबाक छल आ

तकरबाद उल्लेख कएल पाँति - जे पूर्णताक आभाष नहि दैछ

८. मिथिलामे तलाकक संख्या तुलनात्मक दृष्टिसँ अत्यन्त नगण्य अछि । एकरा मौलिक चिन्तनक परिणाम एहि कहल जा सकैछ नहि दुआरे जे ई पाछाँ विकसित भेल अछि । दहेज प्रथा अभिशाप बनि गेल अछि तकर कतौ उल्लेख नहि अछि ?

९. 'मृत्यु संस्कार गीत' क उल्लेख कवीरपंथी सभक सन्दर्भ दैत समापनसँ आलेख अन्त कार्यपत्रक मौलिकताके बौना बना देने अछि ।

समावेशीय सुझाव

१. कार्यपत्र कही वा आलेखक विषय वस्तुक गहनताकेँ नहि प्रदर्शित करैछ ।
२. प्रारम्भमे विषय-वस्तुक जानकारी रखबाक पश्चात् वर्तमान परिवेशक समस्याक सँगहि विद्वान प्रश्नसूचन अवस्थाक संकेत देब जरुरी छल जे कार्यपत्रमे कतौ ठीकसँ उल्लेख नहि कएल गेल अछि ।
३. विवाहक प्रकरणक बातक उल्लेख तऽ अछि मुदा प्राचीनकालसँ लोकजीवनमे महिलावर्गद्वारा वरिआतीक आबऽकालमें गाबऽवला गीतक उल्लेख नहि अछि । यथा :-
   "अवध नगरिआ से अएलै वरिअतिआ चलिऔ सजनी हे जनक नगरिआ भेलै शोर चलिऔ सजनी हे...।
४. कार्यपत्रक अन्तमे सुझावक समावेश नहि करब कार्यपत्रकेँ गरिमाके महत्वहीन बना देने अछि जकर आवश्यकता सबसँ महत्वपूर्ण छल ।
५. कार्यपत्रक अन्तमे 'सन्दर्भ सूची'क अभाव खटकैत अछि । तएँ सब सुझावकेँ समावेश कऽ संशोधित पत्रक प्रस्तुति उपयुक्त हएत ।

vvv

d}lynL nf]s ;+:s[lt ;+uf]i7L @)^& ;fn h]7, (–!) ut] hgsk'/wfd

कार्यक्रम :

पहिल दिन

२०६७ जेठ ९ गते रविदिन

१. सहभागीक नाम दर्ता वैज आ कीट बैग वितरण
   प्रातः ७ :३० सँ ८ :३० बजेधरि

२. ९ बजे उद्‌घाटन !
   उद्‌घाटन सत्र १० बजेधरि

३. प्रथम सत्र-कार्यपत्र प्रस्तुति
   १० :३० बजेसँ १२ :३० बजेधरि
   (दू कार्यपत्र प्रस्तुति/टिप्पणी/सहभागीसभसँ टिप्पणी/सभाध्यक्षद्वारा विसर्जन)
   १२ :३० बजेसँ २ :०० बजेधरि भोजनावकाश

४. २ :०० बजेसँ ६ :०० बजेधरि कार्यपत्र प्रस्तुति
   (४ टा कार्यपत्र प्रस्तुत/टिप्पणी/सहभागीद्वारा टिप्पणी/सभाध्यक्षद्वारा विसर्जन)

५. रात्री सांस्कृतिक कार्यक्रम/लोक-नाट्य प्रस्तुति ।

दोसर दिन

२०६७ जेठ १० गते सोमदिन

६. ८ :०० बजे भोरसँ सत्र प्रारम्भ - ११ :०० बजे सम्पन्न ।
   (१ टा कार्यपत्र प्रस्तुति/टिप्पणी/सहभागीद्वारा टिप्पणी/प्रतिवेदकद्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत ।
   सहभागीद्वारा मन्तव्य/ प्रमुख अतिथि / विशिष्ट अतिथि

♣♣♣

कार्यपत्र प्रस्तोता एवं टिप्पणीकार

१. मिथिलाक संस्कार गीतमे निहित मौलिक चिंतन - डा. राजेन्द्र विमल - जनकपुर (नेपाल)
२. मैथिली लोकगाथाक नेपाली परिवेश : स्थिति एवं संरक्षणक उपाय - डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन - पटना (भारत)
३. मैथिली लोक गीतक अवस्था - डा. महेन्द्रनारायण राम - पटना (भारत)
४. मैथिली लोकपर्वक विशिष्ट पक्ष - डा. रामदयाल राकेश - काठमाण्डू (नेपाल)
५. मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा सबहक स्थिति एवं भविष्य - तारानन्द मिश्र, काठमाण्डू (नेपाल)

टिप्पणी

१.	डा. गंगाप्रसाद अकेला	-	काठमाण्डू
२.	डा. रेवतीरमण लाल	-	जनकपुर
३.	डा. रमानन्द झा रमण	-	पटना
४.	डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन	-	पटना

vvv



संगोष्ठीमे प्रस्तुत विशेष प्रदर्शन

लोक-नाट्य :
जट-जटिन

नाट्य रूपान्तरण :
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रस्तुति :
रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम

मंचपर प्रकाशक एकटा गोल घेरा डारमे नगाडा बन्हने नटपर पड़ैत छैक। ओ नगाडाके सुरतालमे बजबैत रहैत अछि। दोसर प्रकाशक घेरा दहिनकात प्रवेश करैत नटीपर पड़ैत अछि। ओकरासाग घेरा नटधरि अबैत अछि। आब दुनूके उपर प्रकाशक घेरा छै।

नट– (*नटीके देखि प्रसन्न होइत*)
अहधध
पभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचमउयय
उयउया, केहन संयोग अछि ई, प्रिय अहााके देखल,

नटिन– (*नृत्याभिमूख मुद्रा प्रदर्शित करैत*)
जट जटाधर व्यग्र बनल हो, पार्वती कोना बैसल।

नट– धन्य प्रिय अहाा साग पुरै छी सदिखन हमर छी आग

नटिन– जनम–जनमधरि एहिना प्रियतम छोडब अहााके ने साग।

नगाडापर फेरास चोट पाडैत नटक हाथ चलैत अछि। रुकलाक बाद।

नटिन– रंगमंचपर किए उपस्थित मनमे की फुरल अछि,
आइ ककर उद्‌घाटन करबै, दर्शक खूब जूटल अछि।

नट– मध्यकालके प्रेमी युगलके खिस्सा कहब महान।
जकरा नामे पानि बरसै इन्द्रहुक झुकै कमान।

नटिन– (*आश्चर्यक भाव व्यक्त करैत*)
नाम की थिक प्रेमी युगलके जनिक कीर्ति एहन अपार,
नट– **जटा जटिनकेर गाथासा प्रिय होइछ जगत उद्धार ।**
नटिन– **ई तऽ महिला मात्र करै छै, नाचि नाचिकऽबेंग कुरै छै,**
नंगटिनी आागन घैल फैकै छै, गारि सुनै छै, पानि मगै छै ।
नट– **एह,अहाा त ज्ञानी छिहे, साज बाज ओरिआउ नटिन,**
कुटु बेंग उखरिमे धऽआ शुभारम्भ करू जट जटिन ।

उखरिमे बेंग कुटबाक उपक्रम । तकराबाद महिलासभ दू दलमे बाटि जाइछ । जटबला समूहक महिलासभ माथमे आ डाारमे गमछा बन्हने रहैछ । दुनू दल परम्परागत शैलीमे एक दोसरक गरामे बााहि धएने आगाा पाछाा झुकैत चलैत गीतक पहिल मुखरा गबैत अछि । तकराबाद नव शैलीमे जाइत अछि ।

गीत- १ महिला समूह

हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता ।
पानी बिनू पड़ल अकाल हो राम ।
चौर सुखले, चाँचर सुखलै
खेती-बारी झारी सुखलै
सुखि गेलै बाबाके जिराते हो राम ।
सुखि गेलै भइयाके जिराते हो राम ॥

धोबियाके अँगनामे छापर-छुपर पनियाँ
चमराके आँगनमे छापर-छुपर पनियाँ
ओहिमे नहाइ पुजारी बभने हो राम ।
धोतियो ने भीजलै जनौओ ने भीजलै -२
रचि-रचि तिलक लगावै हो राम -२
भीजले तीतले हवेलिया ढुकलै -२
बहुओ लेलक लुलुआइये हो राम -२
राँडी मौगिया हरवा जोतै छै -२
पानीविनू पड़लै अकाले हो राम -२

दयो नहि लगइ छ हो इन्नर लोक
मयो नहि लगइ छ हे इन्नर लोक
पानीविनू पड़ल अकाले हो राम ।

हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता -२
पानीविनु पडल अकाले हो राम -२
निरसुके धीया-पूता माँड लाए कनइ छै
खुद्दी ललए कनइ छै, अन्न ललए कनइ छै
पानीबिनू पड़ल अकाले हो राम ।
(गीत १ समाप्त भेलाक बाद मंचपर अन्हार । प्रकाश अएलापर महिलासभ समूहमे नचैत गबैत ।)

गीत - २ महिला समूह

एगो छलै जट, एगो जटिनियाँ
दुनूमे हो गेलइ परेमे हो राम ।
दुनूके विआह केना रचैवै बसेबै
हो गेलै माइ-बापके विरोधे हो राम ।
(नगाडा बजबैत एक दिशसा नटक प्रवेश । दोसर दिशसा नचैत नटिनक प्रवेश । बीचमे आबि ठमकि जाइछ । नगाडापर जोरसा लकडी बजारि नट गबैत अछि ।)
नट– **एक्कै देश, एक्कै परगन्ना जट आ जटिन,**
जट गामक सुधुआ मनसा दोसर तेहने नटीन ।
नटी– (*नृत्य रोकैत*)
की बजलहु अहाा फेरसा बाजू चुगली परोक्षे पीठ,
अहाा पुरुषके इएह ऐब अछि सदिखन नारीपर दीठ ।
रुसि जएबाक अभिनय
नट– (*मनबैत*) **जटक हएत विआह, प्रशन्न छी, हमर ने एहित मनसाय,**
आयल वरियाती साज-वाज देखि जटिनक माय पछताए ।
नटी– **पछतएबाक छै काज कोन,प्रेम छै उपर सबसा**
चलु मनाबी माय जटिनको, शुभ-शुभ करी भवस

गीत-३ समूह

जटक पक्ष - हम अनलियै आजन-बाजन, आब करु विआह, -२
साँवरि गेरुली, कऽ दियौ जटाके बिआह -२
जटिन पक्ष - आगि लागो आजन-बाजन, नहि करबौ विआह, -२
साँवरि गेरुली, मोर गौरी रहि जइती कुमारि -२

जटक पक्ष -   बज्जर खसौ हाथी घोडा, बज्जर खसौ बाजार -२
साँवरी गेरुली नहि करबौ जटिनसँ विआह
साँवरी गेरुली रहि जएतौ गौरी कुमारि ।
जटिनक पक्ष - कहाँ रे पएबै, कहाँ रे पएबै, डलबाके साज -२
सांवरी गेरुली मोर जटिन रहतै कुमारि -२

अन्हारक बाद प्रकाश । प्रकाशक घेरा नटीनपर ।

नटी–   चली भेली जटिन दैया,सासुरके बटियासँ
मनमामे उठल हिलोर हो रामा ।
अम्मा लगाबे छाती,बाबा परे खटियासँ
हिँचुकि हिँचुकि धीया रोबे हो रामा ।
नट – ओह लगैए अहाँ दगध छी,जटिन धीआ बियोगे
राज-काज एहिना चलै छै,अशांत ने होउ विछोहे ।

नट नटीन मंचपर नृत्य मुद्रामे एक चक्कर लगबैत अछि । आ फेर सँ स्थिर भऽ जाइत अछि । नट आगाँ बढैत बजैत अछि –

नट–   भेल विआह जटिन सासुर चललीह, सभकें आखि नोरायल,
बाबा देहरीक शान ने भेटलै, लगले जटिन अकुलायल ।

गीत ४

जट -   लबिकऽ चलिहैं गे जटिन लबिकऽ चलिहैं गे ।
जइसे लबे काँच करचिया वइसे लबिकऽ चलिहैं गे ॥
जटिन   नहिये लबबौ रे जटा, नहिये लबबौ रे ।
हम तऽ बाबाके दुलारि धीया ऐंठिके चलबौ रे ।
जट   लबिकऽ चलिहैं गे जटिन लबिकऽ चलिहैं गे ।
जइसे लबइ बेंतके छड़िया, वइसे लबिकऽ चलिहैं गे ॥
जटिन   ऐंठिकें चलबै रे जटा ऐंठिक चलबौ रे ।
हम तऽ बाबाके दुलारि धीया, तनिकऽ चलबौ रे ॥
जट   डइनियाँ देखतौ, गुनमा फेकतौ, मारिये देतौ गे ।
आगे बाबाके समपतिया जटिन,के भोगतौ गे ॥

अन्हार/प्रकाश । खाटपर जट जटिन सुतल ।

गीत ५

रामा रहे लागलै जटबा-जटिनियाँ हो ना ।
रामा कहियो काल होबे खन खनियाँ हो ना ॥
रामा एक दिन भोरुका कहनियाँ हो ना ।
रामा लड़इ लगलै जटबा-जटिनियाँ हो ना ॥

पुनः अनहार । प्रकाश । खाटपर जट सुतल । जटिन उठल मुदा आाचर जटबाक हाथमे ।

गीत ५ (दोसर भाग)

जटिन   भोर भेलइ रे जटा भिनसरवा भेलइ रे
कोइली बोललै रे जटा कोइली बोललै रे
जटवा छाड़ि देही अँचरवा
हम तऽ अँगना बहारबै रे ॥
जट   मैया बहारतै गे जटिनियाँ, बहिनियाँ बहारतै गे ।
जटिनी आजुके रोहिनियाँ हम तऽ पलँगवे गमैबे गे ॥......
जट   हमे तोरा पुछियौ गे जटिनीक
दिल से गे, जटिन परेम से गे ।
झुमका कहाँ हेरइले गे ?
जटिन   सारी राति रे जटवा, तोहरे बिछौनमा रे
जटवा तोहरे लगिचवा रे !
जटवा भिनुसरवामे तोहरे मैया चौरौलकौ रे ।.....
जटिन   टिकवा जब-जब मँगलियौ रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥
अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥
जट -   टिकवा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमे कऽ धएले गे ।
तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥
जटिन - हँसुली जब-जब मंगलियौ रे जटा, हँसुली काहे ने लौले रे ।
हमर वाली समैया रे जटबा, हँसुली काहे न लौले रे ।
जट   हँसुली जब-जब अनलियौ गे जटिन, तक्खापर कऽ धएले गे
तोहर वाली समैया गे जटिन, हँसुली काहे न पेन्हले गे ।

अन्हार । प्रकाश नटपर ।

नट –   जट जटिनके वीचमे भैया खटपट बझल बेजोड
बाबाके दुलारी धीआ, मनबए जट पुरजोड ।

नटी – मनसा सब होइछै एहिना, बात-बातपर झगरए
पत्नीके ने मोजर कहियो, अपने जीदपर रगरए।
नैहरदिस बढल डेग कि, लबि-लबि हाथ जोरए
आाटा दालि केर भाओ बुझने, पुरुषार्थ, जीद सब छोडए।

गीत ६

जटिन - धनमा कुटइते जटबा, मारलक मुसरबेके मार।
सेहो विरोगवे रामा जाइ छियै नैहरवा
जट - निम्मन-निम्मन टिकवा जे लैलिये जटिन ले
सेहो जटिनिया छोड़ि नैहरबा तौं जाइ छे।
जट - चीनमा छिटलियौ गे जटिनियाँ चीनमा छिटलियौ।
तू जाइ छै नैहरवा चीनमाके कटतै गे ?
जटिन - मैयो कटतौ रे जटबा बहिनियाँ कटतौ रे।
अबरी रे समइया हम तऽ नैहरे गमैबै रे॥
जट - घिउरा फड़लौ गे जटिन, झिगुनी फड़लौ गे,
तू चल जेबही नैहरवा, घिउराके बेचतौ गे ?
जटिन - मैयो बेचतौ रे जटबा, बहिनियाँ बेचतौ रे।
अबरी रे समइया सखीसँग झूमर खेलबै रे॥

अन्हार। पुनः प्रकाश नटपर पडैत।

नट– लाख मनौलक जिद्दी जटिन, नैहर डेग बढौलक,
नदीक धारमे पारक चिन्ता मलहवाके गोहरौलक।

गीत ७

जटिन - भैया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार
थारी देबै एवा-खेवा लोटा देबौ इनाम
भैया मलहवा रे उतारि दही झिमनापुरके घाट
मलाह - नहि हम लेबौ एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहिनी गे, खोजिले गे दोसर घटवार।
जटिन - खसी देबौ एवा-खेवा, पाठी देबौ इनाम।
भइया मलहवा रे, उतारि दही झिमनापुरके घाट।
मलाह - नहि लेबौ हम एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहनी गे, खोजि लेही दोसर घटवार।
जटिन - बड़ दुखछल छी, नैहरा जाइ छी
जटा से खाइके मार।

कल जोड़ैछी, गोर पड़ैछी, हमरा करि दिअ पार।
भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार।
मलाह - तोरा देखि कऽ माया लगै,
जिया फाटइ हमार।
जे कइले से नकि नइ कइले,
चल करि दियौ पार।
जटिन भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार।
बहिनी बटोहनी गे, चल करि दियौ पार।

अन्हार। पुनः प्रकाश नटपर पडैत।

नट– नटिन वियोगे छटपट जटवा, सभकिछु सुन्न लगैछै,
अपने घर छै काटऽ छुटल, पल-पल मन पडै छै।
नटी– नारी घरके लक्ष्मी होइछै, प्रेम सद्भाव बटै छै
जटबासन घमंडी मनसा, एहिना धिघरी कटै छै।

गीत ८

जट- हाथीपरके हौदा बिकाए गेल गे जटिन, तोरेबिनु
तोरेबिनु हमहुँ बेकल भेलौं गे जटिन, तोरेबिनु
तोरेबिनु महल उदास भेल गे जटिन, तोरेबिनु
तोरेबिनु अँगनामे दुभिया जनमिगेल, गे जटिन,
सेजियापर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरेबिनु

अन्हार पुनः प्रकाश। नटपर पडैत।

नट– रुसि कऽ भागलि जटिन प्रिय,जट वेकल बहुराएल,
एम्हर खोजए, ओम्हर खोजए, नाना भेष बनाएल।
नटी– इहे होइछै मनसाके बानी, अपने करम पछताबे।
घरबालीपर हकुम चलाबे, लक्ष्मीके ठोकराबे।
नट– ठीक कहै छी नटी हमर,अहा सदृश कत्तऽ पाएब,
जटबा छै अबोध प्रिय,अहा घर छोडि नै जाएब।

गीत ९

जट सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाइ
इहो नगरमे जटिन मोर आइल ?
सुन मोर भइया, सुन गे दाइ,
एहि नगरमे जटिन मोर आइल ?

मोसाफिर - सुन मोर जटबा, सुन मोर भाइ,
इहे नगरमे जटिन नहि आइल।

अन्हार प्रकाश

गीत १०

जट - दही लेब ? दही लेब ? मिठगर दही लेब ?

गामक स्त्री - तोर केकर औंटल दूधवा ?
तोर केकर पौरल दहिया,
तोहर सड़ल गन्हाय छौ दहिया
तोहर खट्टा महकौ दहिया।
सास-ससुरकेँ औंटल दूधवा

जट - माय, सांची दूधके दहिया
माय, बड मीठ लागै दहिया,

ग्रामीण स्त्री - अगे नहि लेबौ, नहि लेबौ
तोहर कोइ ने पुछै छौ दहिया।

सिपाही - हमहूँ तऽ छियै गुवालिन, मालिकके सिपाही
मारि डण्टा, फोड़िके कोहा, खा लेब दहि-दूधवा।

जट - इहो मत जानिहे सिपाही असगर गुवालिन
मारि कोहा तोड़ब थुथना,
राति रहौं कुंजवन, दिन बेचौं दहिया,
घेघा सिपाहीके नइ देब दहिया
कोइ ले गे गहिकी बेची दहिया।

अन्हार प्रकाश

गीत ११

जट ससुरे भैसुरे मोर जाल बुनै ना
अकसर बलमुआ मोरा माछ मरैना।
माछ ले हे, माछ ले हे, गहिकी बेटी,
माछ ले हे, माछ ले हे ॥

ग्रामीण स्त्री - आहे कौने मछरिया केर गोढिन हे ?
जट - आहे रेहुआ मछरिया केर गोढिन हे।
ग्रामीण स्त्री - आहे गहुमके कै खूटे माछ देवए हे ?
जट - आहे, गेहुमाके तीन खूटे माछ देवए हे।
ग्रामीण स्त्री - तोर मछरी बनबै नइ जानियौ
धुए नइ जानियौ,
खबैयाके खियाबै नइ जानियौ
धीयापूता परबौधै नइ जानियौ
गोढिनियां गे।

अन्हार। पुनः प्रकाश नटपर।

नट– खोजि खोजिकऽ थाकल जटबा जटिनविनु मुरझाएल,
तखने नजरिपर अएलै जटिनिया, असली रुपमे आएल।
नटी– कि बुझलिऐ जटिन ओकरा हपसि कऽ धरतै ना।
मनमे गरल दरद छै नटबा, दूर-दूर करतै ना।

गीत १२

जटिन - दूर-दूर रे जटा। दूर रहिहैं रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा।
राख छाउर रे जटा।
सड़ल तीमन रे जटा।
दूर रहिहैं रे जटा। दूर रहिहैं रे जटा।

जट- दूर-दूर गे जटिन। दूर रहिहैं गे जटिन।
सड़ल चाउर गे जटिन।
राख छाउर गे जटिन।
बसिया रोटी गे जटिन।
सड़ल तीमन गे जटिन। दूर रहिहैं गे जटिन।
चोटिया गुहइते चलि अबिहैं गे जटिन।
सेजिया सजैबते चलि अबिहैं गे जटिन

जटिन जुलफी सम्हारैत चल अबिहैं रे जटा।
धोतिया पेन्हैत चल अबिहैं रे जटा।

अन्हार। पुनः प्रकाश नट नटीपर

नगाड़ाक धुनपर कनेक काल दूनु नचैत

नट– कहै छै जे एहिना होइ छै साइ बौहके झगड़ा
बीचमे पडि कऽ गामक लोक अनेरे बनैए लबड़ा ।

नटी– अपनो घर तऽ सएह हाल अछि,अनका कोन उपदेश
जटिनके दुलरुवा जटबा,आब चलल परदेश ।

गीत १३

जट - मोरंग-मोरंग सुनियै गे जटिन,
मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन ।
मोरंग से हँसुली लऽ अएवौ गे जटिन
तोहरे पहिराए हम देखब गे जटिन ।

जटिन मोरंग-मोरंग सुनियौ हो जटा
मोरंग देस जनु जाहु हो जटा
मोरंगके पनियाँ कुपनियाँ छै हो जटा
लागि जएतौ कोढ़ करेज हो जटा ।
उलटियो ने आबे देतौ हो जटा
पलटियो ने आबे देतौ हो जटा
रहि जाही रे जटा नैनाके हजूर ।

जट- तोहरे लए लेबौ जटिन मोरंग से टिकवा
ओहिमे झमकाइ तोरा देखव से जटिन
मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन ।
मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन ।

जटिन - अते जे कमैले जटा की भेलौ ना
सुनु मोर जटवा,
जटिनके मँगवा उदास लागे ना

जट - टिकवा जब जब लौलियौ गे जटिन
टिकवा काहे ने पेन्हले गे
जटनी गे सभामे ललचौले गे
टिकवाविनु ।

जटिन - जाहो ते जाहो रे जटबा, देस रे विदेस,
मोरंगके टिकवा लेने आबहु हो रा

अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।

नट– मान मनौबल कऽ कऽ जटबा गेलै मोरंग कमाए,
एम्हर बेटा भेलै बेमार,जटिनियाा वैद्यसा पुछए उपाय ।

नटी – साच बात इहो छै प्रियतम्,पुरुषविन सुन्न लगैछै आगना
विधि बनौलक जोडी तैस,नारी होइछ अपूर्ण विन सजना ॥

गीत १४

जटिन रघुदासके अंगा-टोपी, रघुदासकें अंगा-टोपी
तोहरे देबौ रे बैदा, तोहरे देबौ रे वैदा
रघुदासके दियौ न जिआय ।

वैद रघुदासके अंगा-टोपी, रघुदासके अंगा-टोपी
हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया
रघुदास तँ सडले गेन्हाय ।

जटिन रघुदासके हाथके बलिया, रघुदासके हाथके बलिया
तोहरे देबौ रे वैदा, तोहरे देबौ रे वैदा
रघुदासके दियौ ने जिआय ।

वैद रघुदासके हाथके बलिया, रघुदासके हाथके बलिया,
हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया
रघुदास त सड़ले गेन्हाय ।

अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।

नट– बेटवा भेलै चंगा, मनमे जटबा बसलै ना,
जटबाके वियोगे जटिनियाा अहुरिया काटै ना ।

नटी– चललै पिया उदेश जटिनियाा, दर-दर भटकै ना,हो रामा,दर.....
कोने पापे पिअबा बिछुड़लै कि दुनियाा बिजुबन लागै ना,हो रामा,दर....।

गीत १४ क (थपल गेल)

जटिन - हे रे सोनरबा भाय, कही दही जटबाके उदेश
जहिया से गेलै निरदैया, नै कोनो संदेश
पल-पल काटे राति अन्हरिया,दिनो लगे भयाओन
नै चाही मंगटीका कँगना, पिअबा अपन सोहाओन ।
हे रे..........।

सोनार हे गे जटिनियाँ दाइ, छोड़ जटके आस,
गरबा जोखि-जोखि हँसुली पेन्हैबौ, चल हमरे साथ ।

जटिन - हे रे सोनरबा भाइ,रे अँगिया लगैबौ तोरे हँसुलिया
बजर खसैबौ तोरे साथ ।
रे मोर पटा पुरबे नोकरिया
रहबै पटेके आस ।
बरह बरस हम आँचर बान्हि रहबै
रहबै जटेके आस ।
रे तोरासँ सुन्नर हमरे जटबा
बटिया चलैत लचि जाए
रे तोरासँ सुन्नर हमरे बलमुआ
चन-सुरुज छपि जाए ।

थाकि हारि कऽ जटिन अपन घर आबि जाइत अछि। ओसारापर ओगठि जटक स्मरण करैत हिचुकि हिचुकि कान्ऽ लगैछ।

गीत १५

जटिन जाहि बाटे पियबा गेलै, दुभिया जनमि गेलै
बटिया जोहइते वीजुवन लागल रे की । आहे मइया ।
पियवा मोरंग गेलै, हमरा से कहि गेलै, आहे दिदिया ।
फूल लागल कँगना लेने अइथिन हो राम ।
मांगेके टिकबा लेने अइथिन हो राम ।
रचि-रचि जटिनके पेन्हयथिन हो राम ।
जटबिनु लागे दुनियाँ अन्हारे हो राम

बेटा सेहो घरसा बाहर आबि मायसागे हिचुकऽ लगैछ। तखने दहिन कातसा माथपर मोटरी लेने जटक प्रवेश। लगमे आबि घरबाली आ बेटाके एकटक देखऽ लगैछ। प्रकाशक घेरा दूनुपर फूट-फूट पड़ैत छैक। दुनू चरित्र स्थिर भऽ जाइछ। प्रकाशक घेराकसाग नट-नटिनक प्रवेश।

(नट नगाडाके सुर तालमे बजबैछ। नटिन सुरतालपर नाचऽ लगैछ। नटके चारुकात गोल घेरामे नटिनक नृत्य)

नटी **बारह बरिसपर पिअबा अएलै दुअरिया हे**
जटिनके खातिर ।
त्यागि देलकै मोंरंग नगरिया हे ।
जटिनके खातिर ।

नट - चलियौ ने आब नटिन अपन एकचरिया हे ।
जटिनके खातिर ।
चमकऽ दियौ मिलनके इजोरिया हे
जटिनके खातिर ।

दूनु नचैत-नचैत मंचसा बाहर चलि जाइछ। आब स्थिर चरित्र चलायमान भऽ उठैछ। ओम्हर प्रकाशक घेरामे जटिन अकानैत जटक लग अबैछ। खुशीसा आाखि छलछला जाइछ। पयरपर झुकि प्रणाम करैछ। माथपरक मोटरी, छाता लऽ घरदिस बढि जाइछ। जट बेटाके छातीसा सटा लैछ। जटिन पानि लऽ अबैत अछि, जट पएर पखारैछ। दूनु एक दोसराके आगाा ठाढ़ भऽ नोरायल आंखिए एक दोसराके देखैत अछि। गीत नं. ५ क एक टूकडीक पुनरावृति होइछ।

गीत ५क पुनरावृति

जटिन - टिकबा जब-जब मँगलियौ रे जटा, टिकबा काहे ने लौले रे ॥
अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकबा काहे ने लौले रे ॥
जट - टिकबा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमे कऽ धएले गे ।
तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥

जट जेबीसा लाल डिव्वा निकालैत अछि। ओकरा खोलि मागटिका बहार कऽ जटिनको पहिरा दैछ। दूनु नृत्य मुद्रामे आबि जाइछ।

गीत १६

आरे बाली उमेरिया रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे
टिकबा हम पहिरलौं रे, रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे
आरे बाली उमेरिया रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे

नचैत नचैत जटिन, जटक बााहिमे आबि जाइत अछि। दूनु फ्रिज भऽ जाइछ।

अन्हार

vvv

चित्रमें जट-जटिन































चित्रमें संगोष्ठी



गोष्ठीमे उद्घाटन भाषण करैत नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक कुलपति बैरागी काइंला



मिथिला क्षेत्रक विशिष्ट कलाकारकैं सम्मानित करैत प्रमुख अतिथि



पुस्तक विमोचन करैत प्रमुख अतिथि कुलपति काइंला



रामानन्द युवा क्लबक कलाकारसभद्वारा स्वागत-गान



श्रोतामध्य उपस्थित विशिष्ट विद्वानलोकनि



मंचासीन कार्यपत्र प्रस्तोतासहित प्रमुख अतिथि एवं संयोजक